इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

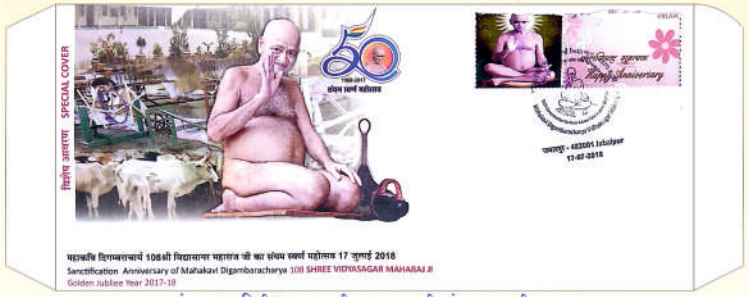

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		अप्रैल 2024	
16	मंगलवार	अष्टमी	पुष्य
17	बुधवार	नवमी	आश्लेषा दि./रा.
18	गुरुवार	दशमी	आश्लेषा
19	शुक्रवार	एकादशी	मघा
20	शनिवार	द्वादशी	पूर्वाफाल्गुनी
21	रविवार	त्रयोदशी	उत्तराफाल्गुनी
22	सोमवार	चतुर्दशी	हस्त
23	मंगलवार	पूर्णिमा	चित्रा
24	बुधवार	प्रतिपदा	स्वाती
25	गुरुवार	द्वितीया	विशाखा
26	शुक्रवार	तृतीया	अनुराधा
27	शनिवार	चतुर्थी	ज्येष्ठा
28	रविवार	पंचमी	मूल
29	सोमवार	षष्ठी	पूर्वाषाढ़
30	मंगलवार	सप्तमी	उत्तराषाढ
		मई 2024	
1	बुधवार	अष्टमी	श्रवण
2	गुरुवार	नवमी	धनिष्ठा
3	शुक्रवार	दशमी	शतभिषा
4	शनिवार	एकादशी	पूर्वाभाद्रपद
5	रविवार	द्वादशी	उत्तराभाद्रपद
6	सोमवार	त्रयोदशी	रेवती
7	मंगलवार	चतुर्दशी	अश्विनी
8	बुधवार	अमावस/प्रतिपदा	भरणी
9	गुरुवार	द्वितीया	कृत्तिका
10	शुक्रवार	तृतीया	रोहिणी
11	शनिवार	चतुर्थी	मृगशिरा
12	रविवार	पंचमी	आर्द्रा
13	सोमवार	षष्ठी	पुनर्वसु
14	मंगलवार	सप्तमी	पुष्य
15	बुधवार	अष्टमी	आश्लेषा

तीर्थंकर कल्याणक

19 अप्रैलः भ. सुमतिनाथ जी जन्म-ज्ञान-मोक्ष कल्याणक
21 अप्रैलः भगवान महावीर स्वामी जी जन्म कल्याणक
23 अप्रैलः भगवान पद्मप्रभ ज्ञान कल्याणक
25 अप्रैलः भगवान पार्श्वनाथ गर्भ कल्याणक
02 मईः भगवान मुनिसुव्रतनाथ ज्ञान कल्याणक
03 मईः भगवान मुनिसुव्रतनाथ जन्म-तप कल्याणक
06 मईः भगवान धर्मनाथ गर्भ कल्याणक
07 मईः भगवान नमिनाथ मोक्ष कल्याणक
08 मईः भगवान कुंथुनाथ जी जन्म-तप-मोक्ष कल्याणक
13 मईः भगवान अभिनंदननाथ गर्भ-मोक्ष कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

17 अप्रैलः पुष्पांजलि व्रत पूर्ण
21 अप्रैलः रत्नत्रय व्रत प्रारंभ
21 अप्रैलः महावीर जयंती (जन्म दिवस)
22 अप्रैलः दशलक्षण व्रत पूर्ण
23 अप्रैलः रत्नत्रय व्रत पूर्ण
24 अप्रैलः षोडशकारण व्रत पूर्ण
08 मईः सोलह दिवसीय शुक्ल पक्ष प्रारंभ
10 मईः अक्षय तृतीया (दान दिवस)
10 मईः रोहिण व्रत

सर्वार्थ सिद्धि

21 अप्रैल : 05/48 बजे से 29/48 बजे तक
25 अप्रैल : 26/24 बजे से 29/44 बजे तक
26 अप्रैल : 05/04 बजे से 27/40 बजे तक
28 अप्रैल : 25/43 बजे से 28/49 बजे तक
05 मई : 05/38 बजे से 19/57 बजे तक
07 मई : 05/37 बजे से 15/32 बजे तक
08 मई : 13/33 बजे से 29/36 बजे तक
13 मई : 11/23 बजे से 29/33 बजे तक
14 मई : 13/05 बजे से 29/33 बजे तक

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः अप्रैल-21,23 मई-5,6,10
मशीनरी प्रारंभ : अप्रैल-26 मई-6,13
वाहन खरीदनेः अप्रैल-24 मई-3,6,13

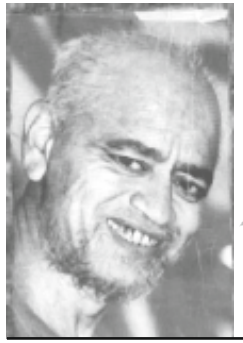

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 300 • अप्रैल 2024
• वीर नि.संवत 2550-51 • विक्रम सं. 2080 • शक सं. 1945

लेख

- बहुआयामी चिंतनः आचार्य विद्यासागर 08
- रामकथा पारिवारिक मूल्यों की अद्भुत पाठशाला हैं 10
- श्रमण परंपरा का भारतीय संस्कृति को योगदान 13
- भगवान महावीर एक कालजयी व्यक्तित्व 15
- युग दृष्टाः भगवान महावीर 19
- नवागढ़ तीर्थ के जिनालय की स्थापना शिल्पकला एवं ऐतिहासिकता 24
- पत्रकारिता में अनेक चुनौती एवं आरोप प्रत्यारोप 29
- क्या दर्शन शब्द का अर्थ जिनलिंग है ? आचार्य कुंदकुंद की दृष्टि में 41
- निशा का अवसान हो रहा है 57
- **वरिष्ठ नागरिकः** बुजुर्गों में आत्मविश्वास 58
- जीवन न बने अभिशाप, जब सही हो रक्तचाप 59

बाल कहानी

- 25 करोड़ डूबे शराब में 62

कविता

- आत्म विश्वास 09
- अहं को छोड 11
- सजा भुगतना ही होगी 21
- जिनवाणी महिमा 56

कहानी

- तम्बाकू का तांडव 52

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 12
चलो देखें यात्रा : 23 • आगम दर्शन :31 • माथा पच्ची : 32 • पुराण प्रेरणा : 33
• कैरियर गाइड : 34 • दुनिया भर की बातें : 35 • इसे भी जानियेः 39
•दिशा बोध : 40 • हमारे गौरव : 56 • वरिष्ठ नागरिक : 58 • हास्य तरंग-पाककला : 61
• बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826593189

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर -9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✻ आंतरिक सज्जा ✻
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के

- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया -**संस्कार सागर**
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक -**ब्र. जिनेश मलैया**
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- आईसीआईसीआय बैंक
  श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय -संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

- लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर पत्रिका के मार्च अंक में चारित्र चक्रवती, आचार्य श्री शांतिसागर जी शिष्य परम्परा शीर्षक से लेख पड़ा। बहुत सारे तथ्य सामने उजागार हुये। 150 वर्ष की लम्बी शिष्य परम्परा जनमानस में विस्मृत होना स्वाभाविक है लेकिन आचार्य शांतिसागर जी की शिष्य परम्परा की धारा समझे बिना श्रमण संस्कृति को समझ पाना बड़ा मुश्किल काम हैं। दिगम्बर संत प्रेमानन्द जी के आश्रम से जब दो श्वेताम्बर संत पहुँचे तब उनको सम्बोधित करते हुये संत प्रेमानन्द जी ने कहा अभी आपके लिये आगे का पथ अपनाने की आवश्यकता है । आपको दिगम्बर रूप धारण करना पड़ेगा क्योंकि वस्त्र एक-परिग्रह है । वस्त्र परिग्रह छोड़े बिना कोई मुमुक्षु नहीं कहला सकता है। दिशा ही जिसका अम्बर है, यह दिगम्बर सम्प्रदाय नहीं अपितु आत्म साधना का पथ है इसके सिवाय मोक्ष पथ अन्य कोई नहीं है, आचार्य शांतिसागर जी के द्वारा अपनाये पथ को शिवपथ माना जाये यही उचित है।

मनीष जैन, टीकमगढ

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों काँग्रेस के राज्यसभा सदस्य डी.के. सुरेश ने माँग की कि दक्षिण भारत के राज्यों का अलग राष्ट्र बनना चाहिये उनकी मांग प्रथम दृष्टया सिरे से खारिज करने योग्य है क्योंकि भारत की अखंडता को खंडित करने वाली माँग भारत देश का बच्चा भी स्वीकार नहीं करेगा फिर यह माँग कैसे स्वीकार की जा सकती हैं। भारत के संविधान की रक्षा करने का दायित्व संसद के सदस्यों पर होता है परन्तु विडम्बना यह है कि भारत के ही सांसद द्वारा अखण्डता को खंडित करने का शर्मनाक बयान देकर अपनी छोटी सोच का परिचय डी.के. सुरेश ने दिया है यह उनका अपराध क्षमा की श्रेणी से बाहर है। दक्षिण भारत का पैसा उत्तर भारत जाये या उत्तर भारत का पैसा दक्षिण भारत जाये इस पर आपत्ति लेने का अधिकार किसी को भी नहीं है। इस प्रकार भेदभाव पूर्ण बात करना संवैधानिक पद पर बैठे लोगों को शोभनीय नहीं है अतः डी.के. सुरेश को अवश्य ही दण्ड मिलना चाहिये।

ऋषभ जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, विगत माह भाजपा के वरिष्ठ नेता 96 वर्षीय लाल कृष्ण आडवाणी को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से पुरुस्कृत करने की घोषणा ने यह सिद्ध किया की जहाँ समाजवादी नेता बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कर्पुरी ठाकुर को भारत रत्न से नवाजकर एक निर्मोहिता का सम्मान किया गया वहीं आडवाणी की अपने प्रिय देश के प्रति समर्पित निस्वार्थ सेवा को सम्मानित किया गया है। यह सम्मान हर प्रकार से उचित सिद्ध हो रहा है । आडवाणी जी मात्र भाजपा के लिये सम्मानित नहीं रहे अपितु भारत देश के प्रत्येक राजनेता ने उन्हें सम्मान देकर अपने-आप को कृतज्ञ माना है। मेरा मानना है कि यह भारत रत्न राष्ट्रवादी सोच का सम्मान है।

अभिलाषा जैन, रतलाम

• सम्पादक महोदय, विगत माह संस्कार सागर के अंक में प्रकाशित कहानी कपास का पेन देखने में आयी। कहानी का शीर्षक पढ़के मन उत्सुकता से भर गया। शीर्षक उचित और आकर्षक लगा। कौतूहल से भरा यह शीर्षक मुझे बहुत देर तक स्तब्ध कर बैठने को मजबूर कर रहा था। मन कहीं भी नहीं लगा जब तक कि कहानी को पूरा नहीं पढ़ लिया। जब तक कहानी पूरी नहीं हुई तब तक मैं संस्कार सागर से चिपका रहा। संस्कार सागर की बहुत सी कहानियां पढ़ी। परन्तु बाल मनोविज्ञान से भरी हुई इस कहानी ने बाल अपराध रोकने की पद्धति स्पष्ट कर दी। अपने बच्चें को कैसे अपराध बोध कराया जाये यह सबक इस कहानी ने पाठकों को बखूबी सिखाया। मर्मस्पर्शी कथा वस्तु ने हम जैसे पाठक को झकझोर दिया। कहानी की भाषा शैली प्राञ्जल और सुबोध तथा शिक्षा से भरी हुई सोद्देश्य कहानी ने सफलता अवश्य प्राप्त की है।

शीलू जैन राहतगढ़

भक्ति तरंग ध्यान तलवार से...

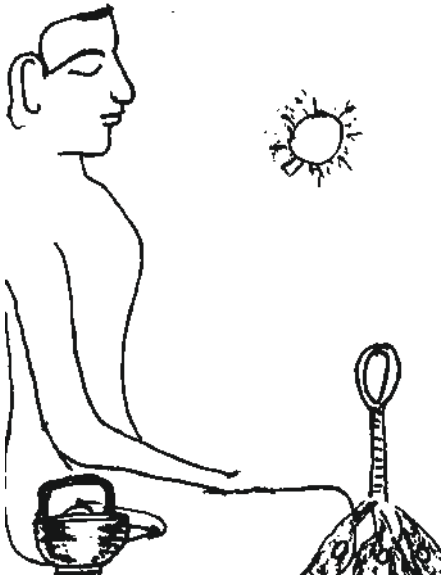

सोई कर्म की रेखपै मेख मारै,
आपमें आपको आप धारै ।।
नयो बंध न करें, बँध्यों पुरब झरै,
करज काढ़ै न देना विचारै ।।1।।
उदय बिन दिये झर जात संवर सहित,
ज्ञान सजुगत जब तप सँभारे ।।2।।
ध्यान तरवारसों मार अरि मोह को,
मुकति तिय बदन द्यानत निहारै।।3।।

वे ही कर्म की बढ़ती जा रही रेखा पर खूँटी गाढ़कर, संयम द्वारा उसे बढ़ने से रोकते हैं जो अपने आप में अपने को धारण करते हैं, चित्त को स्थिर कर आत्म-चिन्तन में मग्न होते हैं।

नया कोई कर्म बंध नहीं करते। पहले के जो बँधे हुये हैं उनकी निर्जरा करते हैं। (कर्म का) जो कर्ज है, उसे पूरा चुकाते हैं। नया कर्ज लेना नहीं चाहते, उसका विचार ही नहीं करते।

जिनके उदय में आये बिना ही कर्म झर जायें, नष्ट हो जायें , ज्ञानसहित जब तप-साधन करे अर्थात् स्व-चतुष्टय में रत हो तब कर्म बल न पाकर अपकर्षण कर जावें, कमजोर पड़ जावें निष्प्रभावी हो जावें, संक्रमण कर जावें। इस प्रकार आस्रव का होना रूक जावे अर्थात् संवर हो जाये। वे ही कर्म की रेखा मिटा पाते हैं।

द्यानतराय कहते हैं कि जो ध्यान की तलवार से मोहरूपी शत्रु का नाश करते हैं वे ही मुक्तिरूपी लक्ष्मी के सुन्दर मुखड़े को निहारते हैं।

संस्कार प्रवाह

भगवान महावीर और उनका अपरिग्रह

युगदृष्टा भगवान महावीर ने अपरिग्रह की पवित्र भावना रूपी नींव पर जैनदर्शन का सुंदर महल खड़ा किया था। वीतरागी प्रभु महावीर ने स्वयं नग्न साधना करके वस्त्र की आकांक्षा को अपने पास कभी भटकने नहीं दिया। क्योंकि वे मानते थे वस्त्र वह साधना में बाधक तथ्य है जिसके माध्यम से काम, क्रोध, आशा और तृष्णा की वृद्धि को रोक पाना कठिन है। वस्त्रवाद के समर्थक भी यह तथ्य स्वीकार करते हैं कि भगवान महावीर ने अपनी साधना काल में वस्त्र और पात्र को कभी स्वीकार नहीं किया। तीर्थंकर की परम्परा में वस्त्र और पात्र की अवधारणा एक पंथ विशेष के लोगों ने कल्पना के आधार पर गढ़ी है।

वैदिक पुराण, उपनिषद् साहित्य के अवलोकन से यह पता लगता है कि भगवान ऋषभदेव ने अपनी सम्पूर्ण साधना नग्न होकर के की है। प्रकृति का निर्दोष स्वरूप विषयवासना से परे जब हो जाता है तो अध्याय के शिखर पर साधक मुमुक्षु पने का सही आनंद लेने लगता है। दिशायें ही जिसके अम्बर हैं ऐसा मुमुक्षु इन्द्रिय के विषयों से ऊपर उठकर आत्मा के चिरकालिक आनन्द का अनुभव करता है। उनका यह आनंद अंतरंग साधना की कसौटी पर पूर्णतः खरा सिद्ध होता है।

भगवान महावीर के उपासक जिन्होंने पंच महाव्रत को धारण लिया है वे कामवासना के विकारों से दूर रहकर निर्दोष लिंग को धारण करके लज्जा को जीत लेते हैं। ठण्ड और गर्मी की बाधा से दो-दो हाथ करके ऐसे साधक सदैव अजेय रहते हैं । वस्त्रवाद का समर्थन ना करने वाले एक जैन सम्प्रदाय के विद्वान कहते हैं कि वस्त्र की जरूरत तो उन्हें ही पड़ती है जो लज्जा को नहीं जीत पाते हैं तथा शीत-गर्मी की बाधा से बाधित हो जाते हैं। सम्पूर्ण परिषह के विजेता भगवान् महावीर और उनके अनुयायी लज्जा और मौसम की मार को जीतने में सदैव समर्थ रहे हैं। अतः भगवान महावीर के अनुयायी आज भी वस्त्ररूपी परिग्रह को धारण नहीं करते हैं और हर वर्ष आने वाली महावीर जयन्ती को भगवान महावीर की शिष्य परम्परा ही पंचशील के सिद्धांतों को साकार करते हुये उनके उपदेशों को अपने जीवन में आत्मसात करते हैं। भगवान महावीर के श्रावक और साधु उनके आचार मार्ग की उपयोगिता सिद्ध करते हुये महावीर जयन्ती मनाते हैं ।

बहुआयामी चिंतनः आचार्य विद्यासागर

✻ एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज ✻

युग की दशा देख कर जो संत उसकी दिशा बदलकर उसे सुख शांति की दिशा में मोड़ देते हैं वे ही सच्चे संत कहलाते हैं। ऐसे ही एक संत भारत देश में हुये जिन्हें लोग आचार्य विद्यासागर जी के नाम से पहचान रहे हैं। करूणा की मूर्ति, राष्ट्रीय चिंतक, साहित्यकार, बहु भाषाविद् , स्वरोजगार के समर्थक, हस्त कला के प्रेरक, शिक्षाविद, तीर्थ रक्षक, संवर्धक, भारतीय संस्कृति के प्रति समर्पित, संत आचार्य विद्यासागर जी महाराज 18 फरवरी 2024 रविवार को हम सबके बीच देहांतर होकर कोई नई अवस्था या भूमि में विराजमान हो गये। उनका वियोग प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी व्यक्तिगत क्षति घोषित की। आचार्य विद्यासागर जी मात्र जैनों के संत नहीं थे। अपितु वे जन जन के राष्ट्र संत थे।

आचार्य विद्यासागर जी ने समाज उत्थान के अनूठे कार्य किये। उनकी शिष्य परंपरा पर जब हम नजर डालते हैं तब हमें ज्ञात होता है कि उनके 500 शिष्य युवा, साधु-साध्वी प्रायः के साथ उच्च शिक्षाविद बाल ब्रह्मचारी ही प्रमुखता से हैं । जाति पंथ और संप्रदाय से ऊपर उठकर आचार्य श्री सभी वर्ग के उत्थान और विकास के लिये मात्र उपदेश नहीं दिया, अपितु सभी वर्गों की उन्नति के लिये समाज में वातावरण का निर्माण किया। समाज के युवा वर्ग को अंधविश्वास और रूढ़ियों से मुक्त कर वैज्ञानिक सोच से जोड़ा। दलित पिछड़े वर्ग के लोगों को अपनाकर भगवान महावीर के सर्वोदयी विचार को जन सामान्य में प्रचारित करके छुआ छूत की भावना को समाप्त करके सर्व मैत्री की सद्भावना का प्रचार-प्रसार और व्यवहार को मजबूत किया।

करूणानिधि आचार्य विद्यासागर जी को जब ज्ञात हुआ कि देश के गोवंश आदि मूक पशु पक्षियों का मांस विदेश निर्यात किया जा रहा है तब उनहोंने मांस निर्यात के विरोध में प्रभावी आंदोलन खड़ा कर दिया। अहिंसक भारतीय संसकृति का ऐसा रेखाचित्र प्रस्तुत किया जिसे राजनेता उनके विचारों से प्रभावित हुये तथा उनके आंदोलन से जुड़ने लगे। अहिंसा करुणा को साकार रूप देने के लिये आचार्य श्री ने बिना सरकारी सहयोग के गौशालाओं का प्रारंभ करवा दिया। देखते-देखते हजारों की संख्या में गौशालाओं का समूह भारत के कई प्रदेशों में संचालित होने लगा। और दयोदय महासंघ की स्थापना करके करुणा की मूर्ति ने समाज में दया को मूर्त रूप दिया। आचार्य श्री ने अपना अर्थ चिंतन भी समाज के सामने प्रस्तुत किया। बेरोजगार युवा महिला वर्ग में स्वरोजगार योजना को प्रस्तुत करते हुये महात्मा गांधी के चरखे को हथकरघा में बदलकर कई नगरों जेलों और जैन तीर्थों पर हथकरघा संकुल संचालित कर दिया। जिससे स्वाबलंबी भारत अभियान को गति मिली। संस्कार विहीन शिक्षा की स्थिति देखकर आचार्य श्री की संवेदनायें प्रभावित हुई। और उन्हें ऐसा लगा यदि यही संस्कार शून्य शिक्षा मात्र रोजगार मूलक बनकर रह गई तो आगे आने वाली पीढ़ी में देशभक्ति की भावना समाप्त हो जायेगी। भारतीय प्रतिभायें रोजगार की खोज में विदेश की ओर बढ़ती चली जा रही हैं जिससे भारतीय जीवन पद्धति सदैव के लिये विद्रूपित हो जायेगी। अतः आचार्य श्री ने महिला शिक्षा पर अपने आपको केंद्रित करते हुये प्रतिभा स्थली शिक्षा केन्द्र की स्थापना प्रारंभ कर दी। आचार्य श्री की शिक्षा नीति से प्रभावित होकर नई शिक्षा नीति के मुख्य मार्गदर्शन के रूप में रंगराजन समिति ने आचार्य श्री को स्वीकार किया और उनके मार्गदर्शन में नई शिक्षा नीति की दिशा सुनिश्चित की गई।

आचार्य श्री ने नई शिक्षा नीति की कमजोर कड़ी को भी पकड़ा और उन्होंने शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा को बहिष्कृत करते हुये मातृभाषा माध्यम का अभियान प्रारंभ कर दिया। क्योंकि अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा के दुष्परिणाम आत्महत्या तक देखने में आ रहे थे। साथ ही अंग्रेजी शिक्षा माध्यम बच्चों के मन पर बोझल ही बनता है और यह आर्थिक दृष्टि से भी उपयोगी सिद्ध नहीं होता है। क्योंकि मातृभाषा के माध्यम से भी कई रोजगार प्राप्त होते हैं और मातृ भषा से शिक्षा लेने वाले आज भी उच्च पदों पर आसीन हैं। अतः मातृ भाषा शिक्षा अभियान चलाकर आचार्य श्री ने समाज की सोच को बदलने का प्रयास किया।

वैश्विक चिकित्सा पद्धति में आयुर्वेद की संपूर्णता श्रेष्ठता और सफलता तथा पार्श्व प्रभावों से मुक्त आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को उत्कृष्ट चिकित्सा पद्धति मान्य करते हुये आचार्य श्री ने पूर्णायु आयुर्वेद महाविद्यालय की स्थापना करते हुये आयुर्वेद को विश्व स्तरीय बनाने का आह्वान दे दिया है।

भारत शब्द का महत्व स्वीकार करते हुये आचार्य श्री ने अपने प्रवचनों में यह कहना प्रारंभ कर दिया कि इंडिया शब्द गुलामी की निशानी है। यह हमारी संस्कृति पर सदैव प्रश्न खड़ा करता है क्योंकि इंडिया शब्द का अर्थ पिछड़े अपराधी लोगों के देश के प्रतिनिधि के रूप में उल्लेखित होता हैं। जबकि भारत शब्द उच्च संस्कृति का सूचक है।

उपरोक्त आचार्य श्री की सम्पूर्ण विशेषताओं और गतिविधियों को देखकर हम यह कह सकते हैं कि आचार्य श्री मात्र बहुमुखी प्रतिभा के धनी ही नहीं थे अपितु वे भारतीय संस्कृति और संस्कारों के महान संरक्षक थे। तथा उन्होंने भारतीय संस्कृति के संवर्धन में अपने जीवन का हर पल लगा दिया। ऐसे महान संत के चरणों में वंदन नमन करते हुये और उनके सपनों को साकार करने का संकल्प लेते हुये सच्चे श्रृद्धा सुमन समर्पित करते हैं।

कविता

आत्म विश्वास

संस्कार फीचर्स

अपना ही मजबूत भरोसा
सब पर पक्का पूर्ण भरोसा
आत्म भरोसा जंग जिताये
असक्त जन को शक्ति दिलाये
दाम भरोसा काम न आये
राम भरोसा काम में आये
राम भरोसा जीवन साथी
राम है दीपक हम हैं बाती
आतम का विश्वास गहज हो
काम हमारा सफल सहज हो
प्रभु तत्व विश्वास जगाओ
जीवन उन्नतशील बनाओ

रामकथा पारिवारिक मूल्यों की अद्भुत पाठशाला है

✻ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ✻

पुराण और इतिहास की सीमाओं को लांघकर राम और उनकी रामकथा जन आस्था का केन्द्र बन चुकी है। रामायण की कथा एक ऐसी कथा है जो वास्तव में हर युग में मानव मन में छाई रही है। सर्वाधिक लोकप्रिय रामकथा पर आधारित अनेक भाषाओं में विपुल साहित्य उपलब्ध है। वैदिक, जैन और बौद्ध धर्म की तीनों परंपरा में रामकथा का विपुल साहित्य उपलब्ध होता है। जैनाचार्यों ने रामकथा पर अनेक चरित और पुराणों की रचना की है। इनमें सातवीं शताब्दी में हुये प्रमुख जैनाचार्य रविषेण ने संस्कृत भाषा में पद्मपुराण नामक पौराणिक श्रेष्ठ चरितकाव्य की रचना की है। जैन परंपरा में राम का एक नाम पद्म भी है, इसलिये जैन परंपरा में राम की कथा पद्म नाम से ज्यादा मिलती है। पद्मपुराण ग्रंथ में बताया गया है कि राम कथा का स्मरण मात्र पापों का नाश करता है। विघ्नों, संकटों के बीच अद्भुत समता प्रदान कर आत्महित सर्वोपरि की शिक्षा देता है।

राम, लक्ष्मण, भरत, सीता, हनुमान आज भी जनमानस में श्रद्धा के पात्र बने हुये हैं। आज की राजनीति के लिये भगवान राम का राजपाठ छोड़कर जाना एक आदर्श उदाहरण है। पतिव्रता नारी के रूप में सीता से बड़ा कोई उदाहरण नहीं है।

हमें पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक वातावरण सुधारना है तो रामायण जरूर पढ़ें। हर घर में रामायण होना चाहिये। रामायण रिश्तों की एक पवित्र कहानी है। राम मानवता की जीवंत मूर्ति हैं। जहाँ रामायण होगी उन घरों में महाभारत नहीं होगी।

आज रामायण के आदर्श खोते जा रहे हैं। रामायण के आदर्श मूल्यों की पुनर्स्थापना बहुत जरूरी है। जिस राम ने अपने पिता की आज्ञा से वनवास स्वीकार किया आज उन्हीं राम के पुजारी अपने बूढ़े माता-पिता का सम्मान नहीं कर पा रहे हैं। जिस राम ने अपना राज्य भरत जैसे भाई को सौंप दिया आज उसी राम के पुजारी अपने भाई को धन की चाह में अदालत में खड़ा कर रहे हैं।

जिन भगवान राम ने नारी के सम्मान के लिये सारा जीवन लगा दिया आज उन्हीं राम के देश में नारी का अपमान करने वालों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। पिता, पुत्र, भाई, देवर, भाई जैसे पवित्र रिश्तों को आज खुले आम कलंकित किया जा रहा है। आज भागमभाग के तनावपूर्ण जीवन में रामायण से हमें उम्मीद की नयी किरण दिखाई देती है।

आचार्य रविषेण कृत पद्मपुराण (रामायण) जनमानस को दिया गया एक ऐसा अनुपम उपहार है जो उन आदर्शों को प्रस्तुत करता है जिन पर चलकर हम अपने आत्म कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। आज राम की चर्चा तो खूब है पर आचरण में कितने लोग उतार रहे हैं यह विचारणीय है।

रामायण का सांस्कृतिक महत्व बहुत अधिक है। आचार्य रविषेण ने पद्मपुराण के द्वारा

जीवन के आदर्शभूत और शाश्वत मूल्यों का निर्दोष किया निरूपण है। इसमें उन्होंने राजा, प्रजा, माता, पुत्र, पति, सेवक आदि संबंधों का एक आदर्श स्वरूप प्रस्तुत किया है। राम का चरित्र एक आदर्श महापुरुष के रूप में है जो सत्यवादी, परोपकारी, चरित्रवान, विद्वान, संयमी तथा धीर पुरुष हैं। राम-रावण का युद्ध न्याय-अन्याय, धर्म-अधर्म, नीति- अनीति के बीच का युद्ध है, जिसमें अन्यान्य, अधर्म और अनीति का पक्ष हारता है, न्याय नीति व धर्म की जीत होती है।

पद्मपुराण (रामायण) के सारे चरित्र अपने धर्म का पालन करते हैं। राम एक आदर्श पुत्र हैं। पिता की आज्ञा उनके लिये सर्वोपरि है। पति के रूप में राम ने सदैव पत्नी व्रत का पालन किया। राजा के रूप में प्रजा के हित के लिये स्वयं के हित को हेय समझते हैं। विलक्षण व्यक्तित्व है उनका। वे अत्यन्त वीर्यवान, तेजस्वी, विद्वान, धैर्यशील, जितेन्द्रिय, बुद्धिमान, सुंदर, पराक्रमी, नीतिकुशल, धर्मात्मा, मर्यादापुरुषोत्तम, प्रजावत्सल, शरणागत को शरण देने वाले, सर्वशास्त्रों के ज्ञाता एवं प्रतिभा सम्पन्न हैं। सीता का पतिव्रत महान है। सारे वैभव और ऐश्वर्य को ठुकरा कर वे पति के साथ वन चली गईं।

रामायण भातृ-प्रेम का भी उत्कृष्ट उदाहरण है। जहाँ बड़े भाई के प्रेम के कारण लक्ष्मण उनके साथ वन चले जाते हैं वहीं भरत अयोध्या की राज गद्दी पर, बड़े भाई का अधिकार होने के कारण, स्वयं न बैठकर राम की पादुका को प्रतिष्ठित कर देते हैं। रावण के चरित्र से सीख मिलती है कि अहंकार नाश का कारण होता है।

कविता

अहं को छोड

✻ संस्कार फीचर्स ✻

दृष्टि को मोड़, अहं की छोड़, देह जब हीं तुम्हारी
फिर क्यों करते हो जड़ तन से यारी
देह तो नश्वर है, तूँ तों अविनश्वर है
जगत के काम स्वयं होते हैं
मूरख पराधीन होकर रोते हैं
सोचते हैं मैं न करूँगा, तो कौन करेगा
तूँ न बोले गा तो, क्या जग मौन रहेगा
मुर्गा न बोलेगा, क्या न होगी प्रभात
कोयल न बोलेगी, क्या न आयेगी बहार
किसी के न करने से, कोई काम रुकता नहीं है
लगनशील व्यक्ति, कभी थकता नहीं है

संयम स्वास्थ्य योग

मधुमेह की सरल चिकित्सा

पेशाब के साथ जब चीनी जैसा मधु पदार्थ निकलता है तो उसे मधुमेह रोग कहते हैं। यह रोग धीरे-धीरे होता है। डायबिटिज एक ऐसा रोग है जिसके रोगी को तो बहुत समय तक इस रोग का एहसास ही नहीं होता औरतों की अपेक्षा पुरुषों में यह रोग ज्यादा पाया जाता है। मोटे आदमी अक्सर इस रोग से पीड़ित दिखते हैं।

शरीर में इंसुलिन नामक तत्त्व पॅनक्रियाज ग्रंथी से उत्पन्न होता है, जो शरीर में शुगर कंट्रोल करता है। मगर यह पॅनक्रियाज ग्रंथी इंसुलीन नामक तत्व उत्पन्न करना बंद कर दे तो शरीर में शुगर लेवल बढ़ता है और मधुमेह रोग होता है।

लक्षण- अधिक प्यास, अधिक भूख लगना, बार-बार पेशाब जाना, बार-बार फुंसी और फोड़े होना, घाव न भरना, पैरों में दर्द नेत्र दृष्टि में गिरावट, कब्ज रहना, दुर्बलता घबराहट इत्यादि

अधिकः टी.वी. देखने से मधुमेह होता है।

उपाय- नींबू-प्यास अधिक होने पर पानी में नींबू निचोड़कर पिलाने से मधुमेह में लाभ होता है। यह तीन बार नित्य पियें।

नारंगी- मधुमेह के रोगी को 1 नारंगी दे सकते हैं। नारंगी के छिल्के छाया में सुखाकर कूट लो इनकी चार चम्मच एक ग्लास पानी में उबालकर छानकर नित्य पियें।

आम-आम और जामुन का रस समान भाग मिलाकर कुछ दिनों तक पीने से मधुमेह ठीक होता है।

गेहूँ - इसके छोटे-छोटे पौंधों का रस पीने से मधुमेह ठीक हो जाता है।

श्रमण परंपरा का भारतीय संस्कृति को योगदान

❊ प्रस्तुतिः पं. सुरेश जैन, मारौरा, इंदौर ❊

मंगलाचरण- **हर कलश मंगल कलश नहीं होता**
हर सागर महासागर नहीं होता
साधु संत दुनिया में लाखों करोड़ों हैं
मगर हर संत आचार्य चक्रवर्ती श्री शांतिसागर नहीं होते।

भारतीय संस्कृति प्राचीन काल से पूरे विश्व में विख्यात है। यह जीवन जीने की कला और जीवन को उन्नति के शिखर पर ले जाने की संस्कृति है। भारत में अध्यात्म योग, धर्म के साथ जीवन का लक्ष्य पाने की गौरवशाली परंपरा रही है। यहां की प्राचीन संस्कृति में ऋषि-मुनियों और संतों की वाणी में उनके उपदेशों में यह शाश्वत संदेश हमें सुनाई देता है। हमारे पूज्य पुरुष मानवीय प्रेरणा का रूप रखकर बार-बार अवतरित होते हैं, हमें सजग करने का प्रयास करते हैं।

देश की संस्कृति में जैन संस्कृति का एक विशेष योगदान रहा है जो प्राण वायु की तरह अध्यात्म प्रधान संस्कृति रही है इसमें जीवन का लक्ष्य भोग को नहीं योग को माना जाता है। जैन संस्कृति ने आध्यात्मिक जागरण और समाज के चहुँमुखी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

श्रमण-जैन संस्कृति-श्रम-समता-शम और स्वकीय परिश्रम का प्रतीक हैं, श्रमण जैन परंपरा ने ब्राह्मण परंपरा में प्रचलित हिंसक यज्ञ और जातिवाद के विरोध में नहीं बल्कि मानवता बाद के पोषण में अहिंसा, अपरिग्रह और कर्मवाद सिद्धांत को प्रतिस्थापित किया है।

श्रमण परंपरा को तीन भागों में विभक्तकर 24 तीर्थंकरों की परम्परा भारतीय संस्कृति की विरासत का संरक्षण, संवर्धन किया गया है।

1. आदिनाथ से महावीर तक एवं ईशा पूर्व तक
2. पूर्वाचार्यों की परंपरा (ईशा की प्रथम शताब्दी से 19वीं शताब्दी तक)
3. बीसवीं शताब्दी की आचार्य परंपरा (चारित्र चक्रवर्ती शांतिसागर जी महाराज दक्षिण, आचार्य शंतिसागर जी क्षाणी, आचार्य आदिसागर जी अकंलीकर। यहां हम बीसवीं शताब्दी के संतों का योगदान विस्तृत रूप से जानेंगे।

प्रस्तुत है चारित्र चक्रवर्ती शांतिसागर जी महाराज दक्षिण

वर्ष 2003-2004 में आचार्य शांतिसागर जी का 131 वा जन्म जयंती महोत्सव संयम वर्ष के रूप में आचार्य श्री विद्यानंद जी ने मनाया जो शांतिसागर जी के साथ 13 वर्षों तक रहे। सूत्र दिया **घर-घर में हो शांतिसागर, मन मन में हो शांतिसागर**

जन्म -1872 येलगुल कोल्हापुर आषाढ़ वदी 6

क्षुल्लक दीक्षा - 1914 ग्राम उत्तूर कोल्हापुर मुनि श्री 108 देवेन्द्र कीर्ति जी महाराज से
एलक दीक्षा - 1917 गिरनार में नमिनाथ भगवान के चरण सान्निध्य में
मुनि दीक्षा -1920 यरनाल बेलगांव मुनिश्री देवेन्द्रकीर्ति जी महाराज
आचार्यपद -1924 समडोली
चारित्र चक्रवर्ती - 1937 गजपंथा सिद्ध क्षेत्र पर उपाधि प्राप्त हुई।
समाधि मरण -1955 कुंथल गिरि सिद्धक्षेत्र पर भादों वदी 2 दिनांक 18.09.1955

36 वर्षों में 35000 किलोमीटर यात्रा 9338 व्रत, 36 वर्ष के मुनि जीवन में 25 वर्ष 7 माह 3 दिन के उपवास इस कठोर तपस्या की कोई बराबरी नहीं कर सकता महाराज पद्मनंदी पंचविशतिका ग्रंथ का स्वाध्याय करने के बाद अन्न जल ग्रहण करते थे, ललितपुर चातुर्मास 6 माह में 4 माह से अधिक उपवास किये। 18 वर्ष की आयु में जूते का त्याग, चार मन का बजनी बोरा उठाकर ले जाते थे, बैल की जगह हल को खुद चलाते थे।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी की विशेष तिथिया

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा- धर्म की विजय 1948 में मुंबई कोर्ट ने जैन मंदिरों में हरिजन प्रवेश एवं सेवा पूजा का अधिकार दिया था उसके खिलाफ सकल जैन समाज ने आंदोलन किया तब आचार्य श्री ने इस घोर संकट पर संकट टलने तक (बिल निरस्त होने तक) अपने आहार में अन्न का त्याग कर दिया जो 1107 दिन अर्थात् (3 वर्ष 12 दिन) तक चला, त्याग के प्रभाव से धर्म की विजय हुई और इस विजय का कोर्ट आदेश पढ़कर आचार्य श्री ने1951 में बारामती महाराष्ट्र में रक्षाबंधन के दिन आहार में आंशिक अन्न लेना प्रारंभ किया। यह वर्ष उनका मुनि दीक्षा शताब्दी वर्ष है।

भाद्रपद कृष्ण सप्तमी- यह पावन तिथि भगवान शांतिनाथ की गर्भ कल्याणक जयंती है प्रातः स्मरणीय आचार्य शांतिसागर जी ने अपनी घोषित सल्लेखना में स्वेच्छा से अपना आचार्य पद अपने प्रथम शिष्य वीरसागर महाराज को प्रदान किया था। तदर्थ इस तिथि पर उन महामना की दूरदृष्टि को नमन करते हुये भव्य आयोजन कीजिये।

भाद्रपद कृष्ण 14- विशाल समुदाय की उपस्थिति में जयपुर के धर्म गौरव सेठ मुरलीधर जी राणा की नसिया में मुनिराज श्री वीर सागर जी महाराज जी के उक्त आचार्य पद को 50000 श्रावकों की उपथिति में शिरोधार्य किया यह महान कार्य संत परंपरा के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हुआ।

आश्विन शुक्ल 11 को 95वां आचार्य पदारोहण जयंती महापर्व को मनाकर गुरु मुनि का सातिशय पुण्य अर्जित कीजिये।

भगवान महावीर एक कालजयी व्यक्तित्व

✻ सुबोध मलैया, सागर (म.प्र.) ✻

महावीर अवतार पुरुष नहीं थे और न ही वे भगवान्! तो वे अपने पुरुषार्थ के बाद बने जैन दर्शन में भगवान् बनते हैं अवतरित हीं होते। वे हमारे समान ही इस भारत वसुन्धरा पर विचरते थे धर्म चक्र का प्रवर्ततन करने से वे तीर्थंकर कहलायें, वे मानव नहीं महामानव बने।

श्रमण परम्परा में तीर्थंकर महावीर जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर हैं। भगवान् महावीर ने जन-मानस में अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त के सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना कर प्राणी मात्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। प्रजातांत्रिक दृष्टि के पोषक भगवान् महावीर ने लोक को समुन्नत करने के लिये लोक भाषा प्राकृत का प्रयोग अपने उपदेशों के निमित्त किया। भाषा, संस्कृति का आधार होती है। महावीर की सूक्ष्म दृष्टि भाषा के महत्व को उजागर कर विश्व इतिहास की धरा में एक अपूर्व चिन्तन किया है इस तरह भगवान महावीर सर्वोदय के प्रणेता हैं।

भगवान महावीर ने विश्व को वीतरागता का संदेश दिया और बताया कि राग-द्वेष मोह का त्याग होने पर ही दुःखों का अभाव होगा एवं सच्चा सुख प्राप्त होगा। सभी जीव वीतरागता के मार्ग पर चलें तो सुखी होकर स्वयं परमात्मा बन सकते हैं।

जैन धर्म में प्राचीन वाङमय इतना महत्वपूर्ण है कि उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। धर्म दर्शन, पुरातत्व, आचार संहिता स्थापत्य कला आदि के कारण विश्व के धर्मों में जैन धर्म का अपना महत्व है।

अपने में भगवान देखा और हर आत्मा को अपने समान देखना यही है, भगवान महावीर का आत्मा से परमात्मा बनने का धर्म। जो स्व-निहित शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है वही महावीर है, अतिवीर है, वर्धमान है, भगवान् है। प्रत्येक भाव आत्मा में यह योग्यता होते हुये भी उसकी अभिव्यक्ति, सत्य-विश्वास, सत्य विज्ञान तथा सदाचार की एकात्मक साधना, अभिन्न साधना, अभिन्न रत्नत्रय, निश्चय रत्नत्रय होती है।

भगवान महावीर इस युग के अंतिम तीर्थ प्रवर्तक हैं । भारत की वसुन्धरा पर अनेक महापुरुष हुये भगवान ऋषभदेव से महावीर पर्यन्त तीर्थंकर धर्म तीर्थ के प्रवर्तक रहे हैं। भगवान महावीर स्वामी ने तपोमय जीवन से विश्व में अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त वाद सिद्धांत द्वारा विश्व शांति का पावन संदेश दिया, जो आज भी पूरी तरह प्रासंगिक है।

भगवान महावीर का जीवन और उनके उपदेश, सादा जीवन, अहिंसा और सद्भाव के लिये प्रेरणा स्त्रोत हैं ।

आवश्यकता है अहंकार को त्यागकार अनेकान्त, स्याद्वाद के सिद्धांत की उपयोगिता स्वीकार कर अहिंसा एवं सह-अस्तित्व की उपादेयता समझ, जीयो और जीने दो मंत्र आत्मसात करें । कर्म, संसार में किसी को नहीं छोड़ते चाहे वह इंसान, मुनि या तीर्थंकर ही हो।

हम जैसा करेंगे वैसा ही फल पड़ता है कोई दूसरा उसे नहीं भोगता।

भक्ति में चमत्कार होता है भगवान् मे नहीं, यदि आप भक्ति शुद्ध मन से करते हैं तो निश्चित ही आपका कल्याण होगा।

महावीर का युग विश्व इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण है जो उस युग में महावीर जैसे समाज सुधारक तथा आध्यात्मिक महान संत हुये। महावीर ने मानवता को अपने विचार से आचरण से सर्वोच्च स्थान प्रदान करने के संदेश यथार्थता के प्रकाश से आध्यात्मिक पथ को आलोकित किया। भगवान् महावीर विचारों में समन्वयवादी, आचार में क्रांतिकारी थे महावीर ने तात्कालिक परिस्थितियों में हिंसात्मक प्रवृत्तियों का जमकर विरोध किया। उन्होंने कर्म काण्डों एवं पशु वध आदि का विरोध कर अनेक क्रांतिकारी सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। भगवान् महावीर ने अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह पांच सिद्धांतों की व्याख्या की इसके अतिरिक्त कर्म सिद्धांत का भी विवेचन प्रस्तुत किया।

महावीर का प्रथम सिद्धांत अहिंसा है। अहिंसा का यथार्थ रूप से पालन एक वीर ही कर सकता है यह भ्रान्ति पूर्णतः निराधार है कि महावीर की अहिंसा समाज और राष्ट्र को कमजोर बनाती है उनकी अहिंसा का पालन कायर कदापि नहीं कर सकता। शक्ति सम्पन भारत ही अपने विरोधियों को मुंह तोड़ जवाब देकर संपूर्ण उप महाद्वीप में शांति कायम कर सकता है।

अहिंसा में राग द्वेष, क्रोध, मोह, लोभ, माया का त्याग निहित है। आज विश्व में पर्यावरण, प्रदूषण एवं परिस्थिति जन्य असंतुलन का जो भयावह रूप बनता जा रहा है उसका निदान भगवान महावीर के स्थावर जीवों के घात (हिंसा) में भी विवेक रखने की शिक्षा को गंभीरता पूर्वक समझे बिना संभव ही नहीं है।

भगवान् महावीर के सिद्धांत, सत्य की अन्य धर्मों में विभिन्न दृष्टिकोण से व्याख्या की गई है। आत्मा के विकास एवं परमात्मा की रीतियां विभि धर्मों में बताई गई हैं। प्रायः सभी अपने पंथ को सत्य एव अन्य को असत्य मानते है। यह साम्प्रदायिक कटुता एवं पारम्परिक कलह का मूल है इसके समाधान हेतु महावीर ने अनेकान्त बाद के सिद्धांत को प्रतिपादित किया जो पूर्ण सत्य शब्दातीत है। महावीर ने कहा जिसे मैं सत्य मानता हूँ केवल वही सत्य नहीं है, अन्य व्यक्ति जिसे सत्य मानते हैं वह भी सत्य हो सकता है। इस समन्वयकारी दृष्टि से सौहार्द, समन्वय एवं विचार सहिष्णुता का मार्ग प्रशक्त होता है मतभेदों के निरासन एवं मैत्री की अभिवृद्धि का इससे बढ़कर उपाय नहीं हो सकता।

महावीर का तीसरा सिद्धांत अस्तेय है उनके अनुसार जिस कार्य से समाज को कष्ट हो, राष्ट में उच्श्रृंखलता फैलने एवं अव्यवस्था उत्पन्न हो वह सब अस्तेय के विपरीत हैं। भगवान महावीर की मान्यता के अनुसार समाज विरोधी गतिविधियों धर्म विरूद्ध हैं। तात्कालिक परिस्थिति को दृष्टिगत रखकर उन्होंने समाज विरोधी गतिविधियों को धार्मिक दृष्टिकोण से इसीलिये त्याज्य बतलाया जिससे समाज आस्था पूर्वक त्याग करें यदि हम देश की अर्थ

व्यवस्था को सुदृढ़ और देशवासियों के चरित्र को उत्तम बनाना चाहते हैं तब हमें महावीर के अस्तेय सिद्धांत का अनुसरण करना होगा।

महावीर का चौथा सिद्धांत है ब्रह्मचर्य। ब्रह्मचर्य का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत था वह मात्र शारीरिक भोग तक सीमित नहीं था। मन में विकार आना भी ब्रह्मचर्य व्रत को भंग करना था। कामोद्दीपक अश्लील साहित्य का पठन-पाठन एवं अश्लील अशोभनीय वस्त्रों को धारण करना आदि सभी कुछ ब्रह्मचर्य भंग की सीमा के अंतर्गत हैं। यही नहीं रसोत्पादक अभक्ष्य पदार्थों का भक्षण भी ब्रह्मचर्य का हनन है।

भगवान महावीर का पांचवा सिद्धांत अपरिग्रह है। महावीर ने अणु व्रत के माध्यम से जनता में वर्गभेद को मिटाने परिग्रह-परिमाण व्रत अथवा अपरिग्रह को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी।

महावीर के समय वर्गभेद का बोलबाला था, शूद्रों को धर्म-कार्य का अधिकार प्राप्त नहीं था। ब्राह्मणों को उनकी छाया मात्र से भी द्वेष था वे समाज के अंग होते हुये भी समाज से कोसों दूर थे। महावीर ने सम्प्रदाय वाद एवं जातिवाद के विरोध में सक्रिय कदम उठाये उन्होंने मानवीय उच्चताओं एवं निम्नताओं और पतित वर्ग के समुदाय को भी धर्माराधना का अधिकार प्रदान किया। धर्माराधना हेतु दीक्षा लेना आवश्यक नहीं है। जीवन में अणु व्रतों को कोई भी किसी भी जाति का व्यक्ति धारण कर हिंसा एवं मांसाहार, अभक्ष्य, का त्याग तो कोई भी कर सकता है।

महावीर ने नारी को स्वाध्याय करने एवं धर्म साधना के समान अधिकार प्रदान किये उन्होंने अपने चतुर्विध-संघ में समान स्थान प्रदान कर नारी समाज में जागृति उत्पन्न की। वैदिक कर्म काण्डों एवं बाह्याडम्बरों के स्थान पर आत्म विकास का उन्होंने अधिक बल दिया। समस्त जीवों को वे समान दृष्टि से देखते थे। प्रत्येक जीवधारी कर्मोच्छेदन कर आत्मा से महात्मा और परमात्मा बन सकता है।

भगवान महावीर के सिद्धांत जन कल्याणकारी हैं और आज की व्याधियों को दूर करने में पूर्णतया सक्षम हैं। उनके मार्ग पर चलकर आज का संत्राप्त विश्व शांति प्राप्त कर सकता है। भगवान महावीर के सिद्धांतों के पालन से विश्व के समस्त राष्ट्र शांति पूर्ण सह अस्तित्व की भावना के साथ सुखी समृद्धशाली बन सकते हैं।

जैन दर्शन के आचार और विचार में एकरूपता होने से उसका आचरात्मक पक्ष उतना ही श्रेष्ठ है जितना कि उसका दार्शनिक पक्ष। दार्शनिक जगत में अनेकान्त और स्याद्वाद सिद्धांत मान्य और बेजोड़ हैं वैसे ही आचार क्षेत्र में अहिंसा और परिग्रह के सिद्धांत भी अपना अपूर्व स्थान रखते हैं। तीर्थंकरों के विचारों में अहिंसा और अपरिग्रह ही तीर्थंकरों द्वारा प्रतिपादित आचार धर्म की नींव है। तीर्थंकरों ने मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति ही बतलाया है जो मुनि धर्म के पालन द्वारा प्राप्त होता है।

हमारी प्राचीन संस्कृति और परम्परा कितनी समृद्ध और ज्ञान परक थी। भारतीय दर्शन में

आत्मा को ही परमात्मा कहा गया है।

श्रमण संस्कृति के प्रणेता भगवान महावीर जिनके उपदेश जिनके सिद्धांत आज भी सर्वमान्य हैं जिसे संपूर्ण जैन समाज ने अंगीकार किया वह सर्वोपरि हैं।

आज से लगभग पच्चीस सौ वर्ष पूर्व का युग धार्मिक उथल-पुथल का युग था। इस युग में न केवल प्राचीन धर्म परम्पराओं में अनेक क्रांतिकारी पुरुषों का जन्म हुआ किन्तु नये मत-सम्प्रदाओं का भी आविर्भाव हुआ।

ईसा पूर्व की छठी शताब्दी का भारत धार्मिक हलचलों का केन्द्र था। भगवान महावीर जैसे सत्य के परम दृष्टा और अनाग्रही (अनेकान्त वादी) महापुरुष युग को अनेकान्त का बोध दे रहे थे।

स्मारकों एवं धरोहरों के अध्ययन से किसी भी राष्ट के गौरवशाली इतिहास को समझा जा सकता है। स्मारकों एवं धरोहरों के साथ उस राष्ट्र के अतीत से जुड़ी गौरव गाथायें होती हैं।

जैन धर्म में मान्य तीर्थंकरों का अस्तित्व वैदिक काल के पूर्व भी विद्यमान था। उपलब्ध पुरातत्व संबंधी तथ्यों के निष्पक्ष विश्लेषण से यह निर्विवाद सिद्ध होता है कि तीर्थंकरों की परम्परा अनादिकालीन है।

अतीत में भारत में मोहम्मद गौरी एवं गजनवी द्वारा देश पर आक्रमण एवं लूटपाट ने भारतीय सभ्यता एवं श्रमण संस्कृति के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया। यहां के हिन्दु एवं जैन मंदिरों की सांस्कृतिक धरोहर एवं धन सम्पदा को लूटकर भारत से बाहर ले जाने का सिलसिला थम नहीं रहा था ऐसे में तत्कालीन जैन आचार्यों की दूरदृष्टि एवं बुद्धिमत्ता से जैन मूर्तियों, आगमों, ग्रंथों, प्राचीन ताड़-पत्रों, हस्तलिखित लेख पत्रों सहित अनेक बहुमूल्य सामग्री को सुरक्षित रख श्रमण संस्कृति की अमूल्य धरोहरों को सहेजने का काम किया।

भगवान महावीर ने अपने प्रवचनों में तप, त्याग और वैराग्य पर अधिक ध्यान दिया। जीवन की भौतिक सुख सुविधाओं के प्रति उनकी अभिरूचि नहीं थी इस कारण समाज और सामाजिक रीति-रिवाजों का भी कोई उल्लेख और राजनैतिक चर्चाओं का विवरण उनके उपदेशों में कम ही होता था।

निस्संदेह महावीर गुणों की परकाष्ठा हैं। परकाष्ठा है इसीलिये वे गुणतीत भी है। हम उनकी प्रतिबद्धता का एक कण भी उठा अपने जीवन में सजा लें तो हमारा जीवन आनंदमय हो जाये और सार्थक भी।

संपूर्ण मानवता को प्रेरणा देते रहेंगे भगवान। जैस दिव्यात्मा युग-युगान्तर तक याद किये जाते रहेंगे।

सागर की गहराई से भी गहरा है जिनका ध्यान।
आकाश की ऊंचाई से भी ऊंचा हैं जिसका नाम।
धोर उपसर्ग, अपार कष्ट सहें, समय भावों से।
ऐसे मृत्युंजयी, कालजयी भगवान महावीर को प्रणाम।

युग दृष्टाः भगवान महावीर

✻ श्रीमति उमा मालवीय, नई दिल्ली ✻

भगवान महावीर का जन्म ईसा पूर्व 599 में हुआ था उनका जीवन और दर्शन तीन सहस्त्र वर्षों के दीर्घकाल में व्याप्त है। वास्तव में महावीर का व्यक्तित्व काल की सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता उनका चिन्तन देश और काल दोनों की परिधि से परे हैं।

भगवान महावीर ने जिस वर्ग विहीन समाज की परिकल्पना की तथा आर्थिक और राजनैतिक मर्यादाओं के लिये जो दृष्टि प्रदान की, वह मानव सभ्यता के आदि युग से लेकर हजारों वर्षों के चिन्तन का निष्कर्ष था। महावीर का चिन्तन विश्व मानव समाज के चरितार्थ जो मानव धर्म हो, प्राणी-मात्र का धर्म हो, विश्व धर्म हो।

तीर्थंकर भगवान महावीर के द्वारा प्रचारित उनके सिद्धांतों की आज विश्व के लिये महती आवश्यकता है। उनका प्रमुख सिद्धांत अहिंसा, यही एक मात्र ऐसा अस्त्र हैं जो मानव-समाज के लिये सभी प्रकार के दोष और पाप कर्म इसी सिद्धांत की परिकल्पना से दूर हो जाते हैं। अहिंसा से ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भारत को आजादी दिलवाई।

भगवान महावीर स्वामी सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह के मूर्तिमान प्रतीक थे। अहिंसा परमो धर्म के सिद्धांत के साथ उन्होंने संपूर्ण मानवता को एक नई दिशा दी। त्याग, संयम, प्रेम, करुणा और सदाचार उनके प्रवचनों के सार थे। उनकी शिक्षाएं एवं विचार एक समावेशी तथा समता मूलक समाज की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

भगवान महावीर ने विश्व शांति के लिये जियो और जीने दो का संदेश दिया जो सदैव प्रासंगिक रहेगा। उनके द्वारा प्रतिपादित अहिंसा परमो धर्म, अपरिग्रह, सम्यज्ञ ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र, सत्य अनेकान्त के सिद्धांतों पर अमल करने से सर्व कल्याण हो सकता है। अनेकान्तवाद का सिद्धांत सर्वधर्म समभाव का पर्यायवाची है।

अनादिकाल से चली आ रही तीर्थंकर परम्परा में इस युग में चौबीसी की श्रृंखला में भगवान महावीर अन्तिम तीर्थंकर हुये जिनके शासन काल में आज हमें इस भारत भूमि की वसुन्धरा पर जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है परन्तु महावीर के शासन काल में जन्म लेने मात्र से आज तक कोई महान नहीं बना। महानता प्राप्त करने के लिये महावीर जैसे महान गुणों को स्वयं उद्घाटित करने की आवश्यकता है। महावीर को बनाने के साथ महावीर की मानना आवश्यक है, जिसने महावीर की मानी है, वही महावीर बना है। अपने में भगवान देखना, और आत्मा से परमात्मा बनने का धर्म।

भारतीय धर्म-दर्शन के पुरोधा पूर्व राष्ट्रपति महामहिम डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के प्रभावी शब्दों में मानव जाति के महापुरुषो में से एक है, महावीर उन्हें जिन अर्थात् विजेता कहा जाता है। उन्होंने राज्य और साम्राज्य नहीं जीते अपितु आत्मा को जीता है, सो उन्हें महावीर कहा जाता है सांसारिक युद्धों का नहीं अपितु आत्मिक संग्रामों का महावीर। तप, संयम आत्म शुद्धि और

विवेक की अनवरत प्रक्रिया से उन्होंने अपना उत्थान करके दिव्य पुरुष का पद प्राप्त किया।

भगवान महावीर ने अपने संदेशों में प्रचारित किया कि सभी जीव बराबर हैं, जो पुरुषार्थ करें, वह भगवान बन सकता है अतः महावीर का धर्म साम्प्रदायिक का नहीं, व्यक्ति का नहीं, यह तो प्राणी मात्र का है।

तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी ने विश्व के लिये आत्म विद्या के साथ जो जीवन जीने की कला स्वरूप पांच महत्वपूर्ण सिद्धांत दिये वे सार्वभौमिक हैं । देश के भारतीय संविधान में महावीर स्वामी चित्रांकन कर उनके बहुमूल्य सर्व कल्याणकारी उपकारों को विश्व स्तरीय दृष्टि से महत्वर्पूण माना है।

भगवान महावीर का धार्मिक सद्भाव, मैत्री, प्रेम, आत्मीय मिलन, धर्म और धार्मिक संस्कार भावी पीढ़ी को संस्कारों का शंखनाद करेगी।

जैन धर्म के मूल सिद्धांत हैं, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह जो इन सिद्धांतों को अपनायें वही जैन है।

भगवान ऋषभदेव से महावीर पर्यन्त तीर्थंकर धर्म के प्रवर्तक रहे हैं। भगवान महावीर ने अपने तपोमय जीवन से अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त वाद सिद्धांत द्वारा विश्व शांति का संदेश दिया जो आज भी पूरी तरह प्रासंगिक है।

भगवान महावीर एक क्रांतिकारी युगदृष्टा थे। उन्होंने सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में एक क्रांतिकारी जीवन दर्शन का प्ररुपण किया स्वयं राज घराने में जन्म लेकर राजशी ऐश्वर्य का पूर्णतः परित्याग कर संयम, त्याग और तपस्या का जीवन व्यतीत करते हुये व्यक्ति और समाज को विभिन्न आडम्बरों की भूल-भुलैया से निकलकर धर्म और नैतिकता का पाठ पढ़ाया अहिंसा और समता का दिशा निर्देश ही नहीं दिया वरन् स्वयं उस मार्ग पर चलते हुये कोटि-कोटि संतृप्त और दिग्भ्रमित मानवों का मार्ग प्रशस्त किया।

महावीर की दृष्टिकोण अत्यन्त व्यापक था। वे प्राणी मात्र के प्रति दया और करुणा रखने के हिमायती थे। उनकी अहिंसा की विवेचना इतनी सूक्ष्म थी कि मनुष्य के मनोभावों तक उनकी पहुंच हो गई। किसी के प्रति कटु वचन या अपशब्दों का प्रयोग करना जिससे हृदय को किंचित मात्र भी आघात पहुंचा हो, महावीर की विवेचना के अनुसार हिंसा है। ऐसी प्रत्येक प्रकार की हिंसा का निषेध, महावीर ने किया। यह निषेध केवल उनकी वाणी तक ही सीमित नहीं था अपितु उसे उन्होंने अपने आचरण में उतारा और व्यवहार में प्रयोग कर जीवन में आत्म सात किया।

महावीर के उपदेश सामान्य एवं परोपदेश मात्र की दृष्टि से नहीं थे, उनमें परहित एवं समाज सुधार की भावना निहित थी उन्होंने अपने उपदेशों और सिद्धांतों को किसी धर्म विशेष की सीमा तक आबद्ध या सीमित नहीं किया। वे जो कुछ कहते थे मानव मात्र के लिये परहित की भावना से प्रेरित हुआ करता था यही कारण हैं कि उनके उपदेश समाज के हित और उपयोग की दृष्टि से आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उस समय थे। समता भाव, जीवन मूल्यों का प्रतिपादन, सरलता व सहजता उनके उपदेशों का आधार था। उनकी बात लोगों के दिलों तक पहुंचती थी

और वे उसी सहजता से हृदयगंम करते थे।

महावीर ने आचरण की शुद्धता पर विशेष बल दिया। उनका संदेश था वही करो जो कहते और सोचते हो। मन, वचन और काय के व्यापार में समान्तर आवश्यक है। सात्विक जीवन के लिये मन, वचन और शरीर की शुद्धता आवश्यक है यदि इनमें एकता या एक रूपता स्थापित नहीं को सकती तो जीवन की सार्थकता ही समाप्त हो जायेगी। जिस प्रकार हम सुखी रहने और जीने की आकांक्षा रखते हैं उसी प्रकार अन्य प्राणियों को भी जीने के लिये उतनी ही अनुकूलता और अवसर मिलता चाहिये, जितना हम अपने जीवन के लिये चाहते हैं - यह महावीर का उद्घोष था और स्वस्थ समाज के निर्माण हेतु रचनात्मक भूमिका थी। उन्होंने सामाजिक विषमता दूर करने के लिये प्राणियों को उन्मुक्त जीवन एवं स्वच्छन्द विचरण को सर्वाधिक महत्व दिया यही भावना उनकी अहिंसा का मूल हैं । अहिंसा मनुष्य को कायर नहीं वीर बनाती है, इसलिये वीरता की क्षमता से परिपूर्ण वे महावीर बने।

भगवान महावीर ने इन्द्रियों, वासना और इन्द्रिय जनित विकारों को जीतकर अपने आप पर विजय प्राप्त की, अपनी आतमा को विकास के चरमोत्कर्ष पर पहुंचाया और आत्म साक्षात्कार किया। अपनी इच्छाओं को जीतने एवं विकारों पर विजय प्राप्त करने के कारण वे जिन कहलायें। जिन के द्वारा प्रतिपादित मार्ग का अनुशरण करने वाले जैन कहलायें। इस प्रकार महावीर ने स्वयं तथा उनके द्वारा उपदेशित मार्ग सार्वजनीन था। काल और सम्प्रदाय की मर्यादा से वे परे थे। प्राणी कल्याण की भावना उनमें निहित थी अतः उनके उपदेशों की प्रासंगिकता आज भी उतनी ही है जितनी उस समय थी। वर्तमान कालीन सामाजिक विषमता के सन्दर्भ पर महावीर का आदर्श एवं उनके द्वारा प्रतिपादित मार्ग सर्वदा उपादेय एवं अनुकरणीय हैं ।

महावीर की अहिंसा कोई नारा नहीं है और न ही कोई धर्मान्धता है। अहिंसा न परिभाषा की वस्तु है और न ही कोई पंथ है। उसे हम न वाद कह सकते हैं ओर न ही महज विचार मान सकते हैं। अहिंसा तो एक जीवन है, मनुष्य के जीवन की एक तर्ज है जिसे केवल जीकर पहचानी जा सकती है, समझी जा सकती है । वे अहिंसा के महान शिल्पी थे, जिन पापों पर अहिंसा टिक सकती है उसे उन्होंने अनुभूत किया और अपनी विराट विरासत में अहिंसा को सहअस्तित्व, अनेकान्त और अपरिग्रह का सिद्धांत सौंप दिये।

भगवान महावीर के सिद्धांत शाश्वत हैं और शाश्वत रहेंगे । महावीर के उपदेशों की आवश्यकता उपयोगिता जितनी उनके जीवनकाल में थी उससे भी अधिक वर्तमान में हैं। महावीर के उपदेशों को जब तक हम अपने आन्तरिक जीवन में नहीं उतारेंगे तथा उनको प्रचारित नहीं करेंगे तब तक हमारा न उद्धार होगा और परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व का होगा।

भगवान महावीर की दिव्य देशना को अपने अन्तः स्थल में उतारने का सद् प्रयास करना होगा तब हम सब सभी भगवान महावीर के सच्चे अनुयायी बनेंगे और उनकी वाणी को अपने कार्यों एवं व्यवहार से जन-जन तक पहुंचायेंगे तब आने वाली युवा पीढ़ी को प्रेरित यही भगवान महावीर के प्रति हमारी सच्ची आस्था और विनायांजलि होगी।

हमारे पूर्वज श्रवण संस्कृति के प्रति कितने श्रद्धावान थे जिन्होंने अनेक विपरीत परिस्थितियों के पश्चात् भी इन जिनबिम्बों का निर्माण करवाकर जैनत्व की पहचान को अक्षुण्ण बनायें रखने में अपना महान अविस्मरणीय योगदान दिया। काल के क्रूर चक्र ने मुस्लिम आक्रान्ताओं के हाथों से जिनबिम्बों का भंजन कर जैन संस्कृति को नष्ट करने का असफल प्रयास किया। इस अमूल्य विरासत के संरक्षण के प्रति हमारी बढ़ती उदासीनता और उपेक्षा चिन्ता का विषय है।

श्रमण संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन में हम और आप सभी मिलकर ऐसा सार्थक प्रयास करें जिससे हमारी जैन संस्कृति की पहचान अक्षुण्ण बनी रहे और जैन संस्कृति के प्रति हम गौरवान्वित हो सके। अहिंसा को अब नारों या जयकारों तक ही सीमित नहीं रखना उसके जयघोश को प्रत्येक व्यक्तियों के जीवन तक पहुंचाना है। आगम के द्वारा जो संदेश दिया गया हम उसका अनुशरण करें , हम उस दिशा में पुरुषार्थ करते हुये आगे बढ़े, निश्चित ही हम अपने जीवन को एक सार्थक उपलब्धि देंगे। यदि हमें भी कुछ बनना है तो जीने का अंदाज बदलना होगा और वह भी कल नहीं आज ही बदलना होगा।

आवश्यकता है अपनी संस्कृति को जीवन्त रखते हेतु दृढ़ संकल्प एवं समपर्ण की। समन्वय करके चलना समय की मांग है। सोचना विश्व स्तर पर चाहिये और करना अपने देश की धरोहर, संस्कृति के अनुसार चाहिये।

कविता

सजा भुगतना ही होगी

इन्द्रकुमार जैन, बाकलवाले इंदौर

कल का भरोसा क्या ? पल का नहीं
इस नर तन के सिवाय मुक्ति, और कहीं से नहीं
तीर्थंकर भी राजा थे, तन से भी मन में भी
दौलत थी ही अपार, क्यों छोडा ये संसार
शरीर तो है पर मैं, अखण्ड निराला हूँ
पर से पलभर में, हो स्वयं में ही स्वयं
लीन, पलभर में मैं, आतम रस पीने वाला हूँ
हैं अखंड, अनन्तों शक्तिपिंड मय यह
नर तन, नहीं समझ, सका जो भी अब तक
लख चौरासी योनि की, सजा भुगतना ही होगी
कर्मों का खेल विलक्षण, हो राजा या हो फकीर
या होवे ही क्यों न जोगी, सजा भुगतना ही होगी
पुनः पुनः भुगतना होगी।

चलो देखें यात्रा

अतिशय क्षेत्र अलवर (मध्यवर्ती शहर)

अलवर राजस्थान का प्रवेश द्वार है। जयपुर से 148 किमी. दिल्ली से 150 किमी। जयपुर से शाहपुरा वाया आमेर, बैराट, थाना गाजी एवं सरिस्का होते हुये तथा दिल्ली से मानेसर, धारूहेड़ा, तिजारा होते हुये अलवर पहुंचते हैं। अलवर में 16 जैन मंदिर हैं। बस स्टैण्ड के पास नसियां भव्य है और आवास व्यवस्था है। अग्रवाल बड़ा मंदिर विशाल एवं आकर्षक है।

अलवर के पर्यटक स्थलों में है बाला किला, सिटी पैलेस, करणी माता मंदिर, मूसी महारानी की छतरी, विजय मंदिर पैलेस, होप सर्किल । यह सर्किल चूड़ी मार्केट एवं अलवर के कलाकंद के लिये प्रसिद्ध है। जैन भवन स्कीम नं. 10 में मंदिर अत्यंत विशाल मनोहारी हैं। भगवान पार्श्वनाथ यहाँ के मूलनायक हैं और चौबीसी विराजमान है। मूल जिनालय बलजी राठौर की गली में स्वर्ण आभा से युक्त हे। समवशरण में मूलनायक पद्मप्रभु विराजमान हैं।

अहिंसा स्थल शहर के बाहर 10 किमी. पर सरिस्का रोड़ पर अहिंसा स्थल है। आदिनाथ भगवान का 11 फीट प्रतिमा है। 72 जिनालय मानसरोंवर झरने, गंगा नदी का बहना तथा गुफायें महावीर भगवान की प्रतिमा प्रमुख आकर्षण हैं। स्टेशन के पास अग्रवाल धर्मशाला है। यहां आरटीडीएस का होटल मीनल है। सिलीसेढ़ होटल लेक के किनारे सुंदर होटल है। फोन 0144-2886322

सरिस्का: सरिस्का पर्यटन क्षेत्र 27 किमी है। क्षेत्र से 40 किमी पर पार्क के अंदर नीलकंठ महादेव मंदिर जिसकी बहुत मान्यता है। कहा जाता है कि पहले यहाँ जैन मंदिर था जो नीलकंठ मंदिर से 1 किमी दूर है जो अब पुरातत्व विभाग के अधीन है। वहां सोलह फुट की खंडीत तीर्थंकर मूर्ति दीवार के सहारे खडी है। यह प्रतिमा नौगजा कहलाती है।

विशेष: पार्क के बाहर रोड़ पर सरिस्का पैलेस हेरिटेज है। होटल टाइगर डेन (फोन 0144-2841342, 2841344) पार्क के मेन गेट पर है।

नवागढ़ तीर्थ के जिनालय की स्थापना शिल्पकला एवं ऐतिहासिकता

✻ श्रीमति अर्चना जैन ✻

जैन धर्म में चैत्यालय परम्परा अकृत्रिम चैत्यालय के रूप में अनादि निधन है। पंचमेरु, नंदीश्वर द्वीप, देव भवन, व्यन्तर आवास, ज्योतिष्क देव एवं वैज्ञानिक देवों के नियमों में स्थित अकृत्रिम चैत्यालय शाश्वत है।

कृत्रिम चैत्यालयों में वर्तमान काल में प्रथम चैत्यालय सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने अयोध्या नगर में सर्वतोभद्र महल के साथ प्रथम तीर्थंकर के गर्भ में आने से छह माह पूर्व की थी वर्तमान काल में सर्वप्रथम मानव निर्मित मंदिर प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के प्रथम पुत्र भरत चक्रवर्ती ने कैलाश पर्वत पर त्रिकाल चौबीसी के 72 जिनालय अलग-अलग बनवाये थे।

तीर्थादौ भरतेश्वरेण भगवत्सन्देशना लब्धितो।
गार्हस्थो रसखण्ड मण्डलधनेरष्टापदे निर्मितः ।।
चैत्यानां निवहस्तु तत्र जिनराड् बिम्बानि संस्थापितम्।
ये वं भूतभविष्यदैहिककलां पूज्येश्वराणां पृथक।।17।। प्रतिष्ठापाठ आचार्य जयसेन

इसी परम्परा में भगवान ऋषभदेव से महावीर तक तथा आज वर्तमान काल तक अक्षुण्ण निर्बाध चली आ रही है।

प्राचीन वास्तु एवं शिल्पकला का निर्दोष पालन किया जाता था किसी वास्तु का निर्माण अनुभवी शिल्पियों के द्वारा वास्तुशास्त्र के उल्लंघन न करते हुये किया जाता था।

जैनं चैत्यालयं चैत्यालयं चैत्ययुत निर्मापयनशुभम्।
वांधन स्वथ नृपादेश्च वास्तुशास्त्रं न लंघयेत।। प्रतिष्ठा सारोद्धार 1/17

जो अपना प्रजा और शासक का कलयाण चाहता है, उसे वास्तुशास्त्र के अनुसार ही जिन मंदिर और जिन प्रतिमा बनवाना चाहिये। निर्माण में वास्तु शास्त्र का उल्लंघन नहीं करना चाहिये।

पूर्व निर्मित वास्तु यथा मन्दिर, किले, बावड़ी, सरोवर, आयुधशाला, गृहनिवास भी में संस्कृतियों का विन्यास परिलक्षित होता है। आज का मशीनीयुग पूर्व निर्मित वास्तु के सामने स्वयं को बौना महूस करता है। विशाल शिलाखण्ड, शिल्प वैशिष्ट्य, समानुपातिक कला, प्रकाश एवं हवा व्यवथा, विलक्षण कर्म पद्धति, प्राकृतिक समायोजन वास्तु विद्या की सूक्ष्मता को दर्शाता है।

प्रकृति के नियम शाश्वत हैं। विज्ञान का विकास भी प्रकृति के नियमानुसर ही हुआ। प्राकृतिक विद्युत चुम्बकीय प्रभाव, गुरुत्वाकर्षण, ग्रहों की गति, पर्यावरण मौसम परिवर्तन के नियम हैं-

जैसे पहिये का घूमना, चक्की का चलना, घड़ी की गति, सूर्य की गति, मंदिर की परिक्रमा, आरती स्वस्तिक रचना। विज्ञान ने जब भी प्रकृति के विरूद्ध कार्य किया है हानि ही उठानी पड़ी है।

विज्ञान विकास के स्थान पर विनाश का कारण बन जाता है। चाहे वह वास्तु निर्माण जैविकी, पर्यावरण पारिस्थिति की रसायनिक या भौतिक कोई भी कार्य क्यों न हो।

जिनालय निर्माण की प्रक्रिया कई चरणों में पूर्ण होती है, प्रत्येक चरण का विशेष महत्व होता है उसमें हीनाधिकता शिथिलता या प्रमाद नहीं होना चाहिये।

भूमि चयन- भूमि की उर्वराशक्ति, जलाशय, वापिका, बगीचे के समीप हो, पथरीली, जली, कीट, बांबीयुक्त न हो।

भूमि की दिशा एवं ढाल वास्तुसारानुसार हो।

भूमि समचौरस या आयताकार हो, कटी, बड़ी, ऊबड भूमि न हो।

जलाशया राम समग्रशोभा, वाल्मीक जन्तु प्रविचार वर्ज्या कीलास्थिदग्धाश्म विवर्जिता भूरत्र प्रशया जिनवेश्य योग्या।

आचार्य जयसेन- जलाशय, कूप, वापिका, तालाब, नदी बगीचा, वृक्ष समूह से सुशोभित हो, वाल्मीकि जन्तु कीटादि से शून्य श्मसान, शूली (कीलि) अस्थि, दग्ध, पाषण आदि से रहित स्थान जिनालय के योग्य कहा है।

मंदिर निर्माण में ज्योतिष आय, नक्षत्र, राशि, व्यय अंश एवं ध्रुव के साथ भूमिस्थ देवों से आज्ञा भी अनिवार्य है।

अहो धरायामिह में सुराश्च क्षमन्तु यज्ञाधिकृति ददन्तु।
प्रीतिः पुराणा वहुवास योगात् क्षितावतोऽस्मद्विनिवेदनं वः ।।215।। प्रतिष्ठा आचार्य जयसेन

नवागढ़ मंदिर का स्थापत्य- बुन्देलखण्ड में मंदिर निर्माण गुप्तकाल मोहनगढ़ (जिला टीकमगढ़), देवगढ़ (ललितपुर), प्रतिहारकाल, मदनपुर (ललितपुर) चंदेलकाल-खजुराहो, महोबा, अजयगढ़, आहार, नवागढ़, दुधही, चाँदपुर, मड़खेरा, ऊमरी, सेरोन आदि लगभग सभी नगरों एवं ग्रामों में मंदिर निर्माण सभी धर्मों के निर्मित हुये हैं।

प्राचीन काल से स्थापत्य की परम्परानुसार नागर, वेसद, द्रविड आदि शैली के मंदिरों का निर्माण पाषाणखण्डों से वास्तुशास्त्र एवं शिल्पशास्त्रानुसार किया जाता था।

नवागढ़ के मंदिरों की शिल्पकला वर्तमान में दृष्टव्य नहीं है क्योंकि इसका विध्वंस मदनपुर के अभिलेखानुसार (संवत 1239) परमद्धिदेव एवं दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान के युद्ध में महोबा, मदनपुर, सलक्षणपुर, विलापुर, दुधही, नवागढ़, चाँदपुर नगर पूर्णतः विध्वंश हुये थे। जिसमें धार्मिक स्थल, किला बावड़ी, गृहनिवास आयुधशाला, शैक्षणिक भवन सभी को जमीदोज कर दिया गया था।

यहाँ संग्रहीत मानस्तंभ चार मंदिरों के साक्ष्य हैं जिन पर संवत् 1203 का अभिलेख अंकित है इन पर गोलापूर्व अन्वय के श्रेष्ठियों के नाम अंकित हैं।

चित्र क्रमांक- 1

इनमें चौबीसी जिनालय, शांतिनाथ जिनालय, पार्श्वनाथ जिनालय ध्वस्थ हो चुके हैं।

वर्तमान में सुरक्षित अरनाथ मंदिर भोंयरे के रूप में हैं, जो विशाल शिलाखण्डों को व्यवस्थित करके निर्मित किया गया है। इसमें एक गर्भगृह एवं मुख्यद्वार युक्त है।

नवागढ़ क्षेत्र के पूर्व में स्थित चंदेलबावड़ी 40फीट चौड़ी तथा 35 फुट गहरी है। इसके खनन में कई शीर्ष, मूर्तियां, धातु उपकरण, मिट्टी उपकरण प्रशस्ति एवं कलाकृतियाँ प्राप्त हुई है। इसी के निकट एक मंदिर के अवशेष हैं जिसमें स्थापत्य कला के स्तंभ, शिलाखंड आमलक किसी विशाल मंदिर के साक्षी हैं अभी इसका अन्वेषण किया जाना शेष है।

भोंयरा जमीन से 15 फुट नीचे 12×12 के गर्भगृह युक्त है इसकी दीवारे 4 फीट मोटी पाषण खण्डों से निर्मित हैं।

इसमें प्राचीन अतिशयकारी मूलनायक अरनाथ स्वामी के कायोत्सर्ग बिम्ब के साथ शांतिनाथ एवं कुंथुनाथ के दो बिम्ब दोनों पार्श्व में स्थित हैं।

इनका अनुमानित स्थापत्य नक्शा निम्नानुसार है।

चित्र क्रमां क 2,3,4

प्राचीन काल में मंदिर निर्माण ठोस आधार अधिष्ठान जिसे जगती, घर या प्रस्तरगल कहते हैं, इस पर मण्डोवर, शिखर, आमलक कलश एवं ध्वजा स्थापित की जाती है। इस शैली में श्रृंगार चौकी, रंगमण्डप, मध्यमण्डप, गूढ़मण्डल एवं गर्भगृह का निर्माण किया जाता था।

नवागढ़ का कला शिल्प- नवागढ़ का अन्वेषण 8 अप्रैल 1959 में विख्यात प्रतिष्ठाचार्य पं. गुलाबचन्द्र जी पुष्प द्वारा किया गया। उन्होंने विशाल चबूतरे पर टीले के ऊपर इमली का विशाल वृक्ष देखा, जिसके चारों और पाषाण शिल्प एवं जैन मूर्तियों के खंडित अवयव पड़े थे। आपने अपने साथियों के साथ वृक्ष को हटाकर टीला हटाया तो 43 खंडित बिम्ब के साथ भूमि खनन में 7-8 सांगोपांग बिम्ब तथा कुछ खंडित बिम्ब मिले जो संग्रहालय एवं मंदिर की वेदियों में विराजमान हैं।

नवागढ़ में क्षेत्र निर्देशक ब्र. जयकुमार जी निशांत के सद्प्रयास से वरिष्ठ पुरातत्वविद् एवं इतिहासकारों द्वारा अन्वेषित शैलाश्रय, शैलचित्र, उत्कीर्ण पाषाण आकृति, पैट्रोलिक कपमार्क, विभिन्न मुकुट वाले शीर्ष, मिट्टी पाषाण के मनके, पाषाण औजार एवं उपकरण धातु उपकरण, काष्ठ उपकरण, मृद उपकरण यहाँ ही संस्कृति ऐतिहासिकता एवं पुरातात्विक धरोहर के साक्ष्य हैं।

यहाँ संग्रहीत मानस्तंभों में तीन और अरहंत एवं एक और उपाध्याय बिम्ब विलक्षण हैं। सर्वतोभद्र चतुर्मुखी बिम्ब में देवरूप प्रतिबिम्ब, शास्त्ररूप श्रुतपीठ (रहल) तथा गुरु रुप चरण एवं कंमडलु से यह कृति विशिष्ट हैं। (चित्र क्रमांक -5)

खंडित उपाध्याय बिम्ब में उसके आसन (पाद-पीठों) में उत्कीर्ण मयूर पिच्छी साधु परमेष्ठी के अहिंसा उपकरण का साक्ष्य हैं।

अन्य खंडित उपाध्याय बिम्ब बायें हाथ में लम्ब शास्त्र को विशेष मुद्रा में पकड़ना अत्यंत विलक्षण है।

अकलंक एवं निकलंक के वस्त्राभूषण सहित बिम्ब में अनुज निकलंक एवं अग्रज अकलंक इनके हाथ में लम्ब शास्त्र एवं लेखनी गुरुकुल परम्परा के साक्ष्य हैं।

चित्र क्रमांक -7

ताम्र पार्श्वनाथ- इस बिम्ब में पीतल आसन पर उत्कीर्ष अभिलेख संवत् 1586 के साथ धरणेन्द्र पद्मावती का अपने वाहन कर्म एवं मयूर के साथ अंकित है। इसके ऊपर 9 फणों से शोभायमान सुन्दर मनोज्ञ पार्श्वनाथ बिम्ब कमलाकृति जिस पर मात्र नितम्ब स्थित हैं शेष जंघा एवं घुटने अधर में हैं जो भगवान के अधर में विराजमान होने के साक्ष्य हैं।

प्रतिहार कालीन अरहंत बिम्ब- 2 फीट वर्गाकार शिलाखण्ड में उत्कीर्ण इस बिम्ब का शिल्प विशिष्ट है केश विन्यास के नीचे चेहरा विकृत है। यह कुएँ के किनारे सैकड़ों वर्ष उल्टा पड़ा रहा है। जिस पर ग्रामीण जन अपने औजारों की धार बनाते थे तथा महिलायें इस पर घड़े आदि बर्तन रखती थी। जिसके निशान दृष्टव्य हैं।

(चित्र क्रमांक 9-10)

प्रतिहार कालीन आदिनाथ बिम्ब- 8 फीट उत्तुंग, कायोत्सर्ग मुद्रा में विशेष केश विन्यास, विशाल नयन, होष्ठ, गगन बिहारी माल्याधर से सुशोभित है। इसकी दोनों बॉह खण्डित हैं।

चित्र क्रमांक-8

नवागढ़ मंदिर की ऐतिहासिकता- नवागढ़ प्राचीन नंदपुर की प्राचीनता के मापदण्ड में पुरातत्ववेत्ताओं तथा इतिहासकारों में मतभेद हैं। यहाँ अन्वेषित पुरापाषाण कालीन 2 से 5 लाख वर्ष प्राचीन औजार है। यहाँ के शैलाश्रय हजारों वर्ष प्राचीन हैं। इनमें गुप्तकालीन रॉक कट इमेज तीसरी सदी के पहले से यहाँ जैन संतों के आवागमन तथा साधना, संयमसाधना एवं सल्लेखना करने के साक्ष्य हैं बगाज टोरिया पर चंदेलशासक मदनवर्मन की मूर्ति के पास विशाल चट्टान पर उत्कीर्ण अभिलेख यहाँ विशाल राजनैतिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक नगर के साक्ष्य हैं।

इन साक्ष्यों से इस नगर की प्राचीनता तथा जिनालय की ऐतिहासिकता तीसरी सदी, प्रतिहार कालीन मूर्ति शिल्प से सातवी सदी तथा अभिलेखीय साक्ष्यनुसार संवत् 1123 सिद्ध होती हैं।

(चित्र क्रमांक 11)

यहाँ 1123, 1188, 1195, 1202, 1203, 1490, 1586, 1548, 1688, 1885 सहित 2072 तक प्रतिष्ठित मूर्ति शिल्प संग्रहीत हैं। जिससे यह सिद्ध होता है कि यहाँ सतत मंदिर निर्माण एवं मूर्ति प्रतिष्ठा सम्पादित होती रही है। नंदपुर वर्तमान नवागढ़ में शांतिनाथ जिनालय के निर्माण का उल्लेख आहार जी के मूलनायक की प्रशस्ति संवत् 1239 में अंकित है।

वर्तमान में कुएँ की खुदायी नींव की खुदाई, पहाड़ी के निकट खेतों में कार्य करते हुये

खण्डित प्रतिभाओं की प्राप्ति होती रहती है।

यहाँ के अन्वेषकों में डॉ. प्रो. मारूतिनंदन तिवारी वाराणसी, डॉ. प्रो. भागचन्द्र जी भागेन्दु दमोह, डॉ. स्नेहरानी जैन सागर, डॉ. यशवंत मलैया कोलोराडो स्टेट यूनीवर्सिटी, डॉ. कस्तूरचन्द्र सुमन श्री महावीर जी, डॉ. के.पी. त्रिपाठी टीकमगढ़, श्री हरिविष्णु अवस्थी, डॉ. गिरिराज कुमार आगरा,ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़, डॉ. वी व्ही खरवड़े लखनऊ, डॉ एस.के. दुबे झाँसी मुख्य हैं।

मेरी भावना है ऐसे पुरातात्विक सांस्कृतिक ऐतिहासिक, शैक्षणिक, राजनैतिक महानगर प्राचीन नंदपुर वर्तमान नवागढ़ में अभी भी बहुत संभावनायें हैं, जिनके उद्घाटित होते ही न जाने कितने रहस्यों से विश्व परिचित हो सकेगा । शासन, प्रशासन एवं नवागढ़ समिति की ध्यानाकर्षण होना अति आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ

1. बुन्देखलण्ड का पुरातत्व- डॉ. एस.डी.त्रिवेदी
2. जैन प्रतिमा विज्ञान- डॉ. मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी
3. दा हिस्ट्री ऑफ गुर्जर प्रतीहार- डॉ. वैद्यनाथ पुरी
4. प्रतिष्ठा सारोद्धार- आशाधर जी
5. प्रतिष्ठा पाठ- आचार्य जयसेन
6. प्रसाद मण्डन- मण्डनमिश्र
7. आदिपुराण- आचार्य जिनसेन
8. खजुराहो का जैन पुरातत्व- डॉ. मारूतिनंदन प्रसाद तिवारी
9. नवागढ़ (नंदपुर) का इतिहास- हरिविष्णु अवस्थी
10. बुन्देलखण्ड का नवोदित तीर्थ नवागढ़- डॉ. कस्तूचन्द्र सुमन
11. कालंजर प्रबोध- डॉ. हरिओम तत्सत ब्रह्मशुक्ल
12. बुन्देलखण्ड का वृहद इतिहास- डॉ. के.पी. त्रिपाठी
13. नवागढ़ एन्टीक्वीटीज फ्रॉम दा चन्देला पीरियड- डॉ. यशवंत मलैया
14. विलक्षण तीर्थ एवं कला क्षेत्र नवागढ़- डॉ. मारूतिनंदन प्रसाद तिवारी
15. नवागढ़ (नंदपुर) पाषाण युग का एक सांस्कृतिक क्षेत्र- डॉ. गिरिराज कुमार
16. भारतीय इतिहास में प्रागैतिहासिक अतिशय क्षेत्र नवागढ़ का योगदान- ब्र. जयकुमार निशांत
17. हमारे प्रेरक- डॉ. पं. विश्वनाथ शर्मा
18. हिदी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(चित्र क्रमांक-12,13)

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तारपोह जि. सागर (म.प्र.)

पत्रकारिता में अनेक चुनौती एवं आरोप-प्रत्यारोप

✻ विजय कुमार जैन, राघौगढ़ (म.प्र.) ✻

पत्रकारिता या मीडिया को प्रजातांत्रिक शासन प्रणाली में चौथा स्तंभ माना गया है। प्रजातंत्र में संवैधानिक व्यवस्था में तीन स्तंभ होते हैं विधायिका, कार्यपालिका और न्याय पालिका। इन तीन स्तंभों से भी बढ़कर चौथे स्तंभ निष्पक्ष और निर्भीक पत्रकारिता की माना गया है। निष्पक्ष और निर्भीक पत्रकारिता जिसे हम गर्व से प्रजातंत्र का चौथा स्तंभ कहकर सम्मान करते हैं। उस चौथे स्तंभ को आज किस स्थिति से गुजरना पड़ रहा है। किन किन गंभीर चुनौतियों से गुजरा पड़ रहा है यह हमारे चिंतन का विषय है। 26 जनवरी 1950 को संविधान के अनुरुप लोक तांत्रिक शासन प्रणाली को लागू किया गया। उस समय देश के कर्णधारों ने जोर शोर से कहा प्रजातंत्र का चौथा स्तंभ निष्पक्ष पत्रकारिता है, जो समय समय पर अपनी कलम से अन्याय और अत्याचार को उजागार करेगा। जब देश आजाद हुआ पत्रकारिता का एक मात्र माध्यम समाचार पत्र थे। समाचार पत्रों का प्रकाशन देश के नामी औद्योगिक घरानों ने कर सबसे पहले निष्पक्ष और निर्भीक पत्रकारिता का गला घौंटा।

समाचार पत्र के मालिक के ही इशारे पर चलना संपादक एवं पत्रकार की मजबूरी है। जो पत्रकार जिस समाचार पत्र के लिये काम करता है वह अखबार मालिक की इच्छा के विरूद्ध अपनी लेखनी नहीं चला सकता। अगर इच्छा के विरूद्ध कभी लिख दिया जो उस पत्रकार की उसी दिन छुट्टी कर दी जाती है। आज मीडिया के तीन माध्यम है। सबसे पहले समाचार पत्र ही एक मात्र माध्यम थे। पिछले लगभग 30-35 वर्ष से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया अर्थात् टी.वी.चैनलों ने प्रवेश किया है। इन मीडिया के दो माध्यम के अलावा पिछले लगभग 10-15 वर्ष से सोशल मीडिया भी जोर शोर से सक्रिय हुआ है। आज हम देखतें है देश की आजादी के 75 वर्ष बाद भी देश में स्वतंत्र एवं निष्पक्ष पत्रकारिता का गला घोंटा जा रहा है । पहले निष्पक्ष पत्रकारिता समाचार पत्रों के मालिकों के हस्तक्षेप से प्रभावित थी। वर्तमान में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने पूरी तरह से पैर पसार लिये हैं। टी वी चैनलों के मालिक ने निष्पक्ष पत्रकारिता का गला घौंट दिया है। चैनल वाले जिसे चाहते हैं वही समाचार निरंतर प्रसारित होता है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर गोदी मीडिया या बिकाऊ आदि अनेक आरोप लग रहे हैं। हम जिसे प्रजातंत्र का चौथा स्तंभ कहते हैं वह भारतीय मीडिया आज उद्योगपतियों एवं बड़े-बड़े अखबार मालिकों, चैनल मालिकों के यहाँ गिरबी रखा है। मालिक की इच्छा के अनुरूप पत्रकार को अपनी लेखनी चलानी पड़ती है या चैनल पर बोलना पड़ता है। जब पत्रकार अपनी कलम को स्वतंत्र रूप से नहीं चला सकता तो यह कहना बेमानी है कि भारतीय मीडिया स्वतंत्र और निष्पक्ष है। अखबार में या टी.वी चैनल पर काम कर रहे पत्रकार को कदम कदम पर यह भय रहता है कि कब मालिक नाराज हो जाये और घर का रास्ता दिखा दे। म.प्र. में मात्र दो या तीन समाचार पत्र हैं जिन्होंने ने अपने यहाँ काम करने वाले पत्रकारों को वेतनमान से वेतन एवं सुविधायें देना प्रारंभ किया है। सबसे ज्यादा परेशान वरिष्ठ पत्रकार है जो समाचार पत्र से रिटायर होकर स्वतंत्र पत्रकार के रूप में विभिन्न सामयिक विषयों पर लेख लिखते हैं। इन सामयिक लेखों का प्रकाशन तो समाचार पत्र में करते हैं मगर लेखक वरिष्ठ पत्रकार को कोई मानदेय नहीं देते हैं। वरिष्ठ पत्रकार जिस समाचार पत्र में

उसके आलेख को प्रकाशित किया है मानदेय नहीं देते हैं। वरिष्ठ पत्रकार जिस समाचार पत्र में उसके आलेख को प्रकाशित किया है मानदेय की अपेक्षा करता हैं। तो सम्मान जनक मानदेय देना चाहिये। मध्यप्रदेश में विधानभा चुनाव के पूर्व तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने राज्य शासन से अधिमान्य वरिष्ठ स्वतंत्र पत्रकारों की समस्याओं पर सहानुभूति दिखाकर उनकी सम्मान निधि, चिकित्सा सहायता राशि में वृद्धि की है। यह भी प्रावधान किया है वरिष्ठ पत्रकार के स्वर्गवास पर उसकी विधवा पत्नी को राज्य शासन सहायता राशि देगा। देश के नेता एवं अधिकारी स्वतंत्र एवं निष्पक्ष पत्रकारिता में सबसे बड़ी बाधा है। अपने स्वार्थों की रक्षा के लिये ये पत्रकारों का अपने अनुसार उपयोग कर रहे हैं। जिला स्तर पर अधिकारी गण पत्रकारों में फूट डालकर दो गुट करा देते हैं। निडर एवं निष्पक्ष रिर्पोटिंग करने वाले पत्रकारों को तरह तरह से प्रताड़ित किया जाता है। उन्हें धमकियाँ दी जाती है गुण्डों से पिटवाया जाता है। वकील के माध्यम से मोटी राशि का मानहानि नोटिस भेजा जाता है। पत्रकारों पर ब्लैक मेलिंग के गंभीर आरोप लगाकर उनका चरित्र हनन किया जाता है। भारत की सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही पत्रकारों पर ब्लैक मेलिंग के गंभीर आरोप लगाकर उनका चरित्र हनन किया जाता है। भारत की सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही पत्रकारों के हित में एक आदेश दिया है पत्रकारों को समाचार का श्रोत बताने के लिये बाध्य नहीं किया जा सकता। इस आदेश का पत्रकार जगत में स्वागत हुआ है। हम यह नहीं कह रहे कि सभी पत्रकार या मीडिया से जुड़े व्यक्ति राजा हरिश्चंद्र के वंशज हैं। हम मानते हैं कि इस जाति में भी कुछ पथ भ्रष्ट तत्त्व हो सकते हैं मगर उन पर भ्रष्ट गिने चुने लोगों से पूरे समाचार जगत को एक ही चश्मे से देखना अन्याय होगा। यह भी सर्वमान्य सत्य है कि मीडिया से जुड़े हमारे साथियों को पथ भ्रष्ट करने में राजनेताओं और अधिकारियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रजातंत्र के चौथे स्तंभ मीडिया की स्वतंत्रता आज चुनौतीपूर्ण कठिन कार्य है। निष्पक्ष एवं निर्भीक पत्रकारिता आज जोखिम से भरा कठिन कार्य है। विगत वर्ष एक प्रकरण आया है जिसमें न्याय के लिये देश के ख्याति प्राप्त पत्रकार ने भारत की सर्वोच्च न्यायालय में शरण ली वरिष्ठ पत्रकार विनोद दुआ जिन्होंने सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी। पत्रकार दुआ के विरूद्ध राजद्रोह का मामला सर्वोच्च न्यायालय ने रद्द कर दिया है। सर्वोच्च न्यायालय ने आदेश में कहा है वर्ष 1962 का आदेश हर पत्रकार को ऐसे आरोप में संरक्षण प्रदान करता है स्मरणीय है कि एक भाजपा नेता की शिकायत के आधार पर विनोद दुआ पर दिल्ली दंगा पर केंद्रित उनके शो को लेकर हिमाचल प्रदेश में राजद्रोह का आरोप लगाया गया था। एक एफआईआर में उन पर फर्जी खबरें फैलाने, लोगों को भड़काने, मान हानिकारक सामग्री प्रकाशित करने जैसे आरोप लगाये थे। इस प्रकरण से हम अंदाज लगाने मजबूर हैं कि देश के चौथे स्तंभ का अस्तित्व खतरे में है जो सत्य को उजागर करने साहस करता है उसकी कलम तोड़ने कुचलने के सुनियोजित प्रयास हो रहे हैं विचारणीय बिंदु यह है कि देश के जाने-माने लोकप्रिय पत्रकार विनोद दुआ अपने ऊपर लगाये गये देशद्रोह के प्रकरण में न्याय की गुहार लेकर देश की सर्वोच्च न्यायालय पहुंच गये उन्हें सर्वोच्च न्यायालय से न्याय मिल गया। उन पर देशद्रोह का प्रकरण चाहने वालों को मात खानी पड़ी। ऐसे निष्पक्ष पत्रकार विनोद दुआ जिन्होंने न्याय के लिये देश की सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया उनका पिछले वर्ष असामयिक स्वर्गवास हो गया। हम उन्हें विनम्र श्रृद्धांजली अर्पित करते हैं। ज्वलंत प्रश्न यह है देश के छेटे छोटे नगरों जिला मुख्यालयों पर कार्यरत पत्रकारों पर इस तरह का प्रकरण चलाया जाता है तो क्या वे भी सर्वोच्च न्यायालय तक पहुंच पायेंगे।

आगम दर्शन

परिकर्म आगम के विषय

क्र.	परिकर्म नाम	पद संख्या	विषय
1.	चंद्र प्रज्ञप्ति	3605000	चंद्रमा की आयु परिवार ऋद्धि गति और चन्द्र बिम्ब की ऊँचाई आदि का वर्णन
2.	सूर्य प्रज्ञप्ति	303000	सूर्य की आयु परिवार ऋद्धि गति प्रकाश प्रताप दिन रात की हानि वृद्धि का वर्णन
3.	जम्बूद्वीप प्रज्ञपति	3025000	जम्बूद्वीप में भोगभूमि कर्मभूमि में उत्पन्न मनुष्य तिर्यंच एवं पर्वत नदी सरोवर आदि का वर्णन
4.	द्वीपसागर प्रज्ञप्ति	5236000	द्वीप समुद्रों के वितार अवगाह क्षेत्र फल आदि का वर्णन
5.	व्याख्या प्रज्ञप्ति	8436000	5 अजीव द्रव्यों एवं जीव द्रव्य के भव्य अभव्य का वर्णन

चूलिका का वर्णन

क्र.	चूलिका नाम	पद संख्या	विषय वस्तु
1.	जलगता	20979205	जल में गमन तथा जल स्तंभन के कारण भूत मंत्र तंत्र
2.	स्थलगता	20979205	भूमि में संबंधी शल्य शुभाशुभ परिज्ञान भूमि के रूप गुण शक्ति आदि का वर्णन
3.	मायागता	20979205	इन्द्रजाल आदि कारण भूत मंत्र तंत्र का वर्णन
4.	रूपगता	20979205	रूप परिवर्तन के मंत्र तंत्र आदि साधना का वर्णन
5.	आकाशगता	20979205	आकाश गामनी विद्या चित्रण
6.	प्रथमानुयोग	5000	पुराण की कथाओं का वर्णन
7.	सूत्र	8800000	363 मतों का वर्णन

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
अप्रैल 2024

ये देख नजारा कुदरत का

प्रथम-

ये किस लय सुरभि भरे
हर पत्र यहाँ है हरे भरे
बस प्रेम जगे हर मानव का
ये देख नजारा कुदरत का

श्रीमति खुशबू जैन, गुना

द्वितीय-

हर रंग सुहाना लगता है
हर कलि सुरभित है
हर बाग सुहाना पर्वत का
ये देख नजारा कुदरत का

श्रीमति रजनी जैन, राहतगढ़

तृतीय-

सुगंधी बिखरा है मकरंद
अलिगण गाते मुधरिम छंद
सब माहोल भूले नफरत का
ये देख नजारा कुदरत का

पुष्पा जैन, अहमदाबाद

वर्ग पहेली क्र. 292
फरवरी 2024 के विजेता

प्रथम : रुचि जैन, भोपाल (म.प्र.)
द्वितीय : आयुषी जैन, गंजबासौदा (म.प्र.)
तृतीय : प्रियंका जैन, ललितपुर (म.प्र.)

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ ह् अ ढ् ण् आ अ ल् अ र् ष् द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

कषाय तजो महान बनो

परस्यापकृति कुर्वन् कुर्यादेकत्र जन्मनि
पापी परवधू स्वस्य जन्तुर्जन्मनि जनमनि ।।

दुसरे का उपकार करने वाला पापी मनुष्य, दुसरे का वध तो एक जन्म से कर पाता है पर इसके फल स्वरूप अपना वध जन्म जन्म में करता है।

कषायवशगः प्राणी हन्ता स्वस्य भवे भवे ।
संसार वर्धनोन्येषा भवेद्वार वध को वा ।।

यह प्राणी दूसरों का वध कर सके अथवा न कर सके परन्तु कषाय के वशीभूत हो अपना वध तो भव-भव में करता है तथा अपने संसार को बढ़ाता है।

परं हन्मीति संध्यातं लोहपिण्डमुपाददत् ।
द्रहत्यात्मान मे वादो कषायवशगस्तथा ।।

जिस प्रकार तपाये हुये लोहे के पिण्ड को उठाने वाला मनुष्य पहले अपने आप को जलाता है पश्चात् दूसरे को जला सके अथवा नहीं । उसी प्रकार कशाय के वशीभुत हुआ प्राणी दुसरे का घात करूं इस विचार के उत्पन्न होते ही पहले अपने-आप का घात करता है पश्चात दुसरे का घात कर सके या नहीं कर सके।

धिक् क्रोधं स्वपरापकारकरणं संसार संवर्धनम् ।

गौतम स्वामी कहते हैं कि देखो, विधिर्क वशीभुत हुये क्रोध से अन्धे द्वीपायन ने जिनेन्द्र भगवान के वचन छोड़कर बाल, स्त्री, पशु और वृद्ध जनों से व्याप्त एवं अनेक द्धारों से युक्त शोभायमान द्वारिका नगरी की क्षण मात्र में भस्म कर नष्ट कर दिया सो निज और पर के अपकार का कारण तथा संसार को बढ़ाने वाले इस क्रोध को धिक्कार है।

केरियर

होटल प्रबंधन में अवसर
(Hotelering)

भारत में होटल उद्योग तेजी से उन्नती करने वाला उद्योग है व्यवसाय एवं छुट्टियां दोनों के लिये आने वाले अंतराष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। यहां तक की पिछले कुछ वर्षों में अनुमानतः अंतराष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या दोगुनी हो गई है।

होटल और खान-पान उद्योग को हमारे देश में मेजबान उद्योग के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। परिवहन क्षेत्र में आये उछाल से होटल एवं कैंटीन उद्योग को भी सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ है। और रोजगार की विभिन्नता प्राप्त हो रही हैं।

प्रकार्य पद

1. स्वागत विभाग 2. स्वागत कक्ष प्रबंधक 3. लॉबि प्रबंधक 4. अतिथि संपर्क कार्यालय 5. लेखा-खजानची 6. रख रखाव विभाग 7. कार्यकारी गृह व्यवस्थापक 8. तल निरिक्षक 9. लाईनेन कक्ष निरीक्षक 10. वर्दी विभाग 11. भोजन एवं पेय विभाग 12. कार्यकारी शेफ, 13. खाद्य-पेय विभाग प्रबंधक

कोर्स- हॉटेल मैनेजमेंट कोर्स, पाक कला प्रशिक्षण

योग्यता- 10+2 या 10वीं कक्षा उम्र- न्युनतम 16

पारिश्रामिक- अपने काम तथा अलग-अलग जगह अलग-अलग पारिश्रामिक मिलता है तथा व्यक्तिगत रूप से भी होटल शुरु कर अच्छा पारिश्रामिक या लागत प्राप्त कर सकते हैं।

■ 1 फरवरी

- संसद में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अंतरिम बजट प्रस्तुत किया।

- ज्ञानवापी के तहखाने से बैरियर हटे 30 साल बाद श्रृंगार आरती हुई।

- जम्मूः बर्फबारी और बारिश से राजमार्ग बंद, 200 वाहन फंसे।

■ 2 फरवरी

- चंपई सोरेन ने 12वें झारखंड के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली।

- कैलिफोर्निया के गुरुद्वारे में आग लगी एक कमरा क्षतिग्रत हुआ।

- काँग्रेस के राज्यसभा सदस्य डी.के. सुरेश ने अलग राष्ट्र की मांग की जिससे संसद में हंगामा हुआ।

■ 3 फरवरी

- वरिष्ठ भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न देने की घोषणा हुई।

- पंजाब के राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित ने इस्तीफा दिया।

- पूर्व पाक प्रधानमंत्री इमरान खान और शरा का गैर इस्लामी निकाह के दोषी पाये जाने पर 7-7 वर्ष की कैद सजा एक अदालत ने सुनाई।

■ 4 फरवरी

- उ.प्र. एटीएस ने आईएसआई के लिये जासूसी करने वाले सत्येन्द्र सिवाल को गिरफ्तार किया।

- कश्मीर और हिमाचल में जोरदार बर्फबारी हुई। 500 मार्ग बंद।

- उत्तराखंड मंत्री मंडल ने यूसीसी समान नागरिक सहित को मंजूरी दी।

■ 5 फरवरी

- चंडीगढ़ मेयर चुनाव पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा यह लोकतंत्र की हत्या है।

- आबकारी घोटले में फंसे आप नेता संजय सिंह राज्य सभा की शपथ नहीं ले सके।

- लोकसभा में सार्वजनिक परीक्षा विधेयक 2024 पेश हुआ। इसमें पेपर लीक करने नकल कराने पर 10 साल की सजा 1 करोड़ रूपया दंड है।

■ 6 फरवरी

- हरदा (म.प्र.) अवैध पटाखा फैक्ट्री में भीषण धमाके 10 की मौत 200 घायल।

-ईरान ने भारतीयों को बिना बीसा के 15 दिन घूमने की छूट दी।

- उत्तराखंड विधानसभा में यूसीसी विधेयक पेश हुआ।

■ 7 फरवरी

- शरद पवार की पार्टी का नाम एनपीसी शरद चंद्रपवार हुआ।

- उत्तराखंड में यूसीसी बिल ध्वनिमत से परित हुआ।

- जबलपुरः महापौर जगत बहादुर सिंह ने बीजेपी का दामन थामा।

■ 8 फरवरी

- आरोपी का श्वेत पत्र वित्तमंत्री सीता रमण ने संसद में पेश किया तो काँग्रेस ने ब्लेंक पेपर जारी किया।

- इस्लामाबादः बलूचिस्तान में महिला मतदान केन्द्र के बाहर धमाका हुआ 10 लोगों ने दम तोड़ा।

-मुंबईः काँग्रेस नेता पूर्व राज्यमंत्री बाबा सिद्दीकी ने पार्टी छोड़ी।

■ 9 फरवरी

- पूर्व प्रधानमंत्री चरण सिंह एवं पी.वी. नरसिंहराव और वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथ को भारत रत्न देने की घोषणा हुई।

- पाकिस्तान में आम चुनाव के परिणाम इमरान खान के पक्ष में उनके निर्दलीय समर्थक 62 जीते।

- हल्दवानीः सरकारी जमीन पर अवैध बने धर्मस्थल मदरसा को हटाने गई। पुलिस पर पथराव किया 300 पुलिस घायल हुये 5 उपद्रवियों की मौत हुई।

■ 10 फरवरी

- प्रसिद्ध चित्रकार ए रामचंद्रन का निधन हुआ वे 89 वर्ष के हैं।

- श्वेत पत्र पर राज्यसभा में चर्चा हुई काँग्रेस पर सीता रमण बरसी।

- राफा में इजरायली हमले 28 फिलिस्तानी मारे गये।

■ 11 फरवरी

- करीम नगर (तेलांगना) दूषित मुर्गे का मांस खाने से ईट भट्टे के 2 मजदूरों की मौत हुई 14 बीमार हुये।

- उ.प्र. के विधायकों ने रामलाला के दर्शन किये स.पा विधायक नहीं गये।

- हंगरी के राष्ट्रपति कैटालिन नौवाक ने अपने पद से इस्तीफा दिया।

■ 12 फरवरी

- पटनाः नीतीश कुमार की सरकार ने 129 से विश्वास मत जीता।

- पूर्व मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण ने काँग्रेस छोड़ी विधायक पद से इस्तीफा दिया यह महाराष्ट्र में उथल पुथल वाली घटना मानी गई।

- दोहा (कतर) से मौत सजा के भागीदार 8 भारतीय पूर्व नौ सैनिक रिहा होकर भारत पहुँचे।

■ 13 फरवरी

- चेन्नईः ईडी द्वारा गिरफ्तार किये जाने के बाद वी सेंथिल बालाजी ने मंत्री पद इस्तीफा दिया।

- सिंधू बार्डर पर हजारों किसान डटे पर सुरक्षा नहीं भेद सके।

- इजरायल द्वारा जंग जारी रखने अमेरिकी राष्ट्रपति जोबाईडन नेतन्याहू पर भड़के अपशब्द भी बोले।

■ 14 फरवरी

- अबुधाबीः स्वामी नारायण मंदिर का उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया।

- सोनिया गाँधी ने राजस्थान से राज्यसभा का नामांकन भरा।

- जेएनयू के पूर्व छात्र उमर खालिद ने सुप्रीम कोर्ट ने जमानत वापिस ली।

■ 15 फरवरी

- सुप्रीम कोर्ट ने इलेक्ट्रोरल बॉन्ड को असंवैधानिक बताकर रद्द किया।

- किसान आंदोलन 2.0 वार्ता के चलते सिंधू बार्डर पर कूच रूका शांति हुई।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कतर की राजधानी दोहा पहुँचे।

■ 16 फरवरी

- इम्फालः मणिपुर में डिप्टी कमिश्नर एस.पी. ऑफिस में तोड़ फोड़ हुई 2 की मौत हुई 40 लोग घायल हुये।

- कोलकाताः संदेश खाली योन उत्पीड़न मामले में जाँच टीम भाजपा काँग्रेस को संदेश खाली जाने से रोका।

- नई दिल्लीः अलीपुर में पेंट और केमीकल गोदामों में आग लगने से 11 मौत हुई और 4 अन्य घायल हुये।

■ 17 फरवरी

- दंगल फिल्म की बाल कलाकर सुहानी भटनाकर का निधन हुआ।

- विरूधुनगर (तमिलनाडु) जिले में एक पटाखे फैक्ट्री में विस्फोट होने से 10 लोगों की मौत हुई।

- कपिहार (बिहार) एक घर में आग लगने से 3 बच्चे जिंदा जले।

■18 फरवरी

- आचार्य विद्यासागर जी महाराज की जैन तीर्थ चंद्रगिरि डोंगरगढ़ में शनिवार रात 2.30 पर समाधि हुई भाजपा के राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने श्रद्धांजलि देते हुये अपनी व्यक्तिगत क्षति बताया तथा जेपी नड्डा ने दो मिनट का मौन करवाकर आदरांजलि अर्पित की।

- थाईलैंड के पूर्व प्रधान थाकशिन शिनावात्रा रिहा हुये।

■ 19 फरवरी

- राजस्थान के पूर्वमंत्री महेन्द्र जी सिंह मालवीय भाजपा में शामिल हुये।

- लाहौरः अंडरवर्ल्ड डॉन टीपू अमीर की हत्या हुई।

- फ्रांस का एफिल टॉवर हड़ताल के कारण बंद रखा गया।

■ 20 फरवरी

- मुम्बईः विधान मंडल 10% मराठा आरक्षण का प्रसताव सर्व सम्मानित से पारित हुआ।

- सुप्रीम कोर्ट ने चंडीगढ़ मेयर चुनाव का परिणाम पलटा चुनावाधिकारी पर अपराधन दर्ज करने का निर्देश दिया।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कश्मीर में पहली ट्रेन को हरी झंडी दिखाई।

■ 21 फरवरी

- विनाका गीतमाला को लोकप्रियता देने वाले अमीन सवानी का निधन हुआ वे 91 वर्ष के थे।

- न्यायपालिका के भीष्म पितामह फली सैम नरीमन का निधन हुआ वे 95 वर्ष के पद्म भूषण पद्म विभूषण से सम्मानित रहे।

- ग्रीस के प्रधानमंत्री भारत यात्रा पर आये।

■ 22 फरवरी

- कश्मीर और सिक्किम में भारी हिमस्खलन से जन जीवन प्रभावित हुआ 1 विदेशी पर्यटक सहित 2 की मौत हुई।

- कश्मीर पूर्व राज्यपाल पाल मलिक पर सीबीआई के छापे पड़े।

- चंडीगढ़: मनोहर खट्टर सरकार के खिलाफ आया विश्वास प्रस्ताव गिरा।

■ **23 फरवरी**

- महाराष्ट्र पूर्व मुख्यमंत्री, पूर्व लोकसभाध्यक्ष मनोहर जोशी का निधन हुआ वे 86 वर्ष के थे।

- स्पेन के बैमिसिया शहर की 14 मंजली इमारत में आग लगी 4 की मौत।

- अमेरिका ने 50 साल बाद निजी सैटेलाईट चांद पर उतारा।

■ **24 फरवरी**

- बेंगलुरु: कर्नाटक विधान परिषद में मंदिर विधेयक गिरा।

- कासगंज (उ.प्र.) गंगा स्नान करने जा रहे श्रद्धालुओं से भरी ट्रेक्टर ट्राली पलटने 8 बच्चों सहित 24 लोग मरे। 20 घायल हुये।

- पूर्व कुश्ती कोच सुखविन्दर को 6 लोगों की हत्या के आरोप में मृत्युदंड की सजा सुनाई।

■ **25 फरवरी**

- इंडिया नेशनल लोकदल के हरियाणा के प्रदेशाध्यक्ष नफेसिंह राठी की हत्या गोली मारकर अज्ञात हमलावारों ने की।

- कांकेर मुठभेड़ में 3 नक्सली मारे गये।

- द्वारका: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश के सबसे लम्बे केवल आधारित पुल सुदर्शन सेतु का उद्घाटन किया।

■ **26 फरवरी**

- प्रसिद्ध गजल गायक पंकज उधास का निधन हुआ वे 72 वर्ष के थे।

- सुप्रीम कोर्ट ने 3 नये अपराधिक कानूनों को चुनौती देने वाली याचिका खारिज कर दी।

- बंगलुरु: राजाजीनगर स्टेशन पर एक वृद्ध को गंदे कपड़े पहनने के कारण सुरक्षाकर्मी अधिकारी ने मेट्रो में प्रवेश नहीं दिया।

■ **27 फरवरी**

- आगरा: नवीन जैन राज्यसभा सदस्य हेतु उ.प्र. से चुने गये।

- रामपुर पूर्व सांसद जय प्रदा को चुनाव संहिता उल्लंघन के एक मामले अदालत ने उन्हें फरार घोषित किया।

- हिमाचल प्रदेश में राज्य सभा सदस्य हेतु भाजपा के प्रत्याशी हर्ष महाजन जीते।

■ **28 फरवरी**

- गुजरात तट के पास अरब सागर में नौका से 3300 किलो मादक पदार्थ जब्त हुआ रास अबद गुड्स कम्पनी पाकिस्तान की मुहर लगी है।

- कोलकाता: संदेश खाली के प्रमुख आरोपी शाहजहां शेख को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

- केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य के विरूद्ध आपत्तिजनक पोस्ट डालने वाले सुनील पर मामला दर्ज हुआ।

■ **29 फरवरी**

- गाजा: आटा लेने खड़े लोगों पर इजरायली हमला हुआ 104 की मौत हुई।

- वरिष्ठ पत्रकार और लेखिका सुजाता आनंद का निधन हुआ।

- 1993 में 5 शहरों ट्रेन ब्लाट मामले में अब्दुल करीम उर्फ टुंडा को सबूत के अभाव में अदालत ने बरी किया।

इसे भी जानिये

कुछ सामान्य पदार्थों का पी.एच मान

क्र.	पदार्थ	पी.एच. मान
01	समुद्री जल	8.4
02	रक्त	7.4
03	लार	6.5
04	दूध	6.4
05	मूत्र	6.0
06	शराब	2.8
07	सिरका	2.4
08	नींबू	2.2

कुछ प्राकृतिक अम्ल

	प्राकृतिक	अम्ल
01	सिरका	एसीटिक अम्ल
02	संतरा	सिट्रिक अम्ल
03	इमली	टार्टरिक अम्ल
04	टमाटर	ऑक्सेलिक अम्ल
05	दही	लैक्टिक अम्ल
06	नींबू	सिट्रिक अम्ल
07	चीटा का डंक	मैथेनॉईक अम्ल
08	नेटल का डंक	मेथेनॉईक अम्ल

दिशा बोध

धर्म-महिमा

1. धर्म से मनुष्य को मोक्ष मिलता है और उससे स्वर्ग की भी प्राप्ति होती है फिर भला धर्म से बढ़कर लाभदायक वस्तु और क्या है ?
2. धर्म से बढ़कर दूसरा और कोई भला काम नहीं, और उसे भुला देने से बढ़कर दूसरी कोई बुराई नहीं है।
3. सत्कर्म करने में तुम लगातार लगे रहो, अपनी पूरी शक्ति और पूर्ण उत्साह के साथ उन्हें करते रहो।
4. अपना अन्तःकरण पवित्र रखो, और धर्म का समस्त सार बस इसी उपदेश में समाया हुआ है। अन्य सब बातें और कुछ नहीं, केवल शब्दाडम्बर-मात्र हैं।
5. ईर्ष्या लालच, क्रोध और अप्रिय वचन-इन सबसे दूर रहो, धर्म प्राप्ति का यही मार्ग हैं।
6. यह मत सोचो कि 'मैं धीरे-धीरे धर्म मार्ग का अवलम्बन करुँगा' वरन् अभी बिना विलम्ब किये ही शुभकर्म करना प्रारम्भ कर दो, क्योंकि धर्म ही वह वस्तु है, जो मृत्यु के समय तुम्हारा साथ देनेवाली अमर मित्र सिद्ध होगी।
7. मुझसे यह मत पूछो कि ''धर्म करने से क्या लाभ है ?'' बस एक बार पालकी उठाने वाले कहारों की ओर देख लो और फिर उस आदमी को देखो, जो उसमें सवार है।
8. यदि तुम एक भी दिन व्यर्थ नष्ट किये बिना समस्त जीवन सत्कर्म करने में बिताते हो, तो तुम आगामी जन्म-मरण का मार्ग बन्द किये देते हो।
9. केवल धर्म जनित सुख ही वास्तविक सुख है, शेष सब तो पीड़ा और लज्जा मात्र है।
10. जो काम धर्मसंगत है, बस वही कार्यरुप में परिणत करने योग्य है। दूसरी जितनी बातें धर्मविरुद्ध हैं, उनसे दूर रहना चाहिए।

क्या दर्शन शब्द का अर्थ जिनलिंग है ? आचार्य कुन्दकुन्द की दृष्टि में

✻ डॉ. ऋषभ जैन फौजदार, दमोह (म.प्र.) ✻

शौरसेनी प्राकृत-आगम परम्परा के संरक्षण, संवर्द्धन और विकास में आचार्य कुन्दकुन्द का अनुपम स्थान है। दृष्टिवाद के अन्तर्गत पूर्वों के पारम्परिक ज्ञान को सुरक्षित करने में आचार्य धरसेन, पुष्पदन्त, भूतबलि और गुणधर के साथ आचार्य कुन्दकुन्द का विशेष योगदान है। उनका पाहुड साहित्य प्राचीन शौरसेनी प्राकृतागम की अनुपम धरोहर है। आचार्य कुन्दकुन्द के अधिकांश ग्रंथ आज हमें नये अनुसंधान के लिये सहजरूप में सुलभ हैं। विद्वानों ने आचार्य कुन्दकुन्द को चौरासी पाहुड-ग्रंथों का कर्त्ता माना हैं, किन्तु दुर्भाग्य से अभी तक उनके पूरे नाम भी प्राप्त नहीं हो पाये हैं। उपलब्ध ग्रन्थों के अतिरिक्त 49 अन्य ग्रंथों के भी नाम प्राप्त हुये हैं। एक ग्रंथ सम्भवतः झाणज्झयण-पाहुड का सम्पादन कार्य चर्या शिरोमणि आचार्य विशुद्धसागर जी मुनिराज के परम शिष्य मुनि आदित्यसागर जी ने किया है, किन्तु वह ग्रंथ मुझे देखने का अवसर नहीं मिला है।

आचार्य कुन्दकुन्द रचित उपलब्ध साहित्य इस प्रकार हैं - समयपाहुड (समयसागर), पवयणसारो (प्रवचनसार), पंचत्थियसंगहसुत्तं (पंचास्तिकाय संग्रहसूत्र), णियमसारो (नियमसार), दंसणपाहुड, चारित्तपाहुड, सुत्तपाहुड, बोधपाहुड, भावपाहुड, मोक्खपाहुड, सीलपाहुड, तथा लिंगपाहुड, बारस अणपेक्खा (द्वादशानुप्रेक्षा), भत्तिसंगहो (भक्तिसंग्रह) (तित्थयर, सिद्ध, सुद, चारित्त, जोइ, आयरिय, णिव्वाण, पंचगुरु, संति, णंदीसर, समाहि और चेइय भत्ति नामक द्वादश भक्तियाँ) रयणसारो (रत्नसार)। ये सभी ग्रंथ शौरसेनी प्राकृत भाषा में रचे गये हैं।

पाहुड-प्राभृत की परम्परा- पाहुड जैन परंपरा का पारिभाषिक शब्द है, जिसका प्रयोग यहाँ विशेष अर्थ में हुआ है। इस प्रसंग में आचार्य कुन्दकुन्दकृत सुदभत्ति की अंचलिका में पाहुड शब्द द्रष्टव्य है- इच्छामि भंते। सुदभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं, अंगोवंगपइण्णए पाहुड-परियम्म-सुत्त-पढमाणुओग-पुव्वगय चूलिया चेव सुत्तत्थव थुइ धम्मकहाइयं णिच्चकालं अंचेमि, पूजेमि।

यहां पाहुड शब्द अंग, उपांग, प्रकीर्णक के बाद तथा परिकर्म, सूत्र, प्रथमानुयोग, पूर्वगत और चूलिका से पूर्व आया है। इससे ज्ञात होता है कि पाहुड आगम की एक स्वतंत्र विद्या या आगमांश है। जयधवलाकार ने पाहुड के संस्कृत रूपान्तर, प्राभृत शब्द के विषय में इस प्रकार लिखा है- प्रकृष्टेन तीर्थंकरेण आभृतं प्रस्थापितं इति प्राभृतम्। प्रकृष्टैराचार्यैर्विद्यावित्त-वद्भिराभृतं धारितं व्याख्यातमपानीतमिति वा प्राभृतम्।[1] जो प्रकृष्ट अर्थात् तीर्थंकर के द्वारा आभृत अर्थात् प्रस्थापित किया गया है, वह प्राभृत है। अथवा जिनका विद्या ही धन है, ऐसे प्रकृष्ट आचार्यों के द्वारा जो धारण किया गया है अथवा व्याख्यान किया गया है अथवा परंपरागत रूप से लाया गया है, वह प्राभृत हैं।

आचार्य जयसेन ने समयपाहुड की टीका में समयस्यात्मनः प्राभृंत समयप्राभृतं (गाथा की टीका) और **यथा कोऽपि देवदत्तो राजदर्शनाथ किंचित्सारभूतं वस्तु राज्ञे ददाति तत्प्राभृतं**

भण्यते । तथा परमात्माराधकपुरुषस्य निर्दोषिपरमात्मराजदर्शनार्थमिदमपि शास्त्रं प्राभृतम्। कस्मात्? सारभूतत्त्वात् इति प्राभृतशब्दस्यार्थः। (स्याद्वादाधिकार पृ. 381) कहा है।

पाहुड आगम की स्वतंत्र विधा है।

पाहुड पूर्वगत वस्तु का एक अधिकार या एक विषय का प्ररूपक आगमांश है।

पाहुड पदों की स्पष्ट व्याख्या है।

पाहुड पारंपरिक श्रुतरूप उपहार है।

पाहुड लौकिक वस्तुओं का उपहार है।

एक पाहुड में 24 पाहुडपाहुड होते हैं।

पाहुड की परंपरा में आचार्य गुणधरकृत कसायपाहुडसुत्त आद्य ग्रंथ है। जो पांचवें ज्ञानप्रवाद पूर्व की दशम वस्तु के तीसरे पेज्जपाहुड से निष्पन्न है। ग्रंथकार ने इसकी गाथाओं को गाहासुत्त कहा है।[2]

सुत्त-सूक्त या सूत्र की परम्परा

भारतीय वाङ्मय में सूक्त की प्राचीन परंपरा है। इसका प्रचलन आप्तवचनों के संकलन के निमित्त प्रारंभ हुआ था। सूक्त के विषय में कहा गया है कि **सुन्दरकथने, एकार्थप्रतिपादके एकदैवत्ये वेदमंत्रों -समुदाये च। यथा- श्री सूक्तं पुरुषसूक्तमित्यादि।**[3] अर्थात् सुन्दर कथन करने वाला, एकार्थ का प्रतिपादक और वेदमंत्रों का समुदाय सूक्त कहलाता है, जैसे- श्री सूक्त आदि। वैदिक ऋचाएं क्रान्तदृष्टा ऋषियों के आप्तवचन हैं। उनसे लोकमंगल की भावना अनुस्यूत होती है, इसलिये उन्हें सूक्त कहा जाता है। पालि त्रिपिटकों में बुद्ध वचन को भी सुत्त या सूक्त कहा गया है।

जैन परंपरा में भी सुत्त की प्राचीन अवधारणा प्राप्त होती है। आवश्यक निर्युक्ति में कहा गया है-

अत्थं भासइ अरहा सुत्तं गथंति गणहरा निउणं।

सासणस्स हियट्ठाए तओ सुत्तं पवत्तइ।। गाथा-92

अर्थात् अरहन्त भगवान अर्थ का कथन करते हैं तथा शासन के हितार्थ गणधर सुत्त ग्रंथित करते हैं। यहीं से सुत्त की परम्परा प्रवर्तित होती है। सुत्त की उक्त अवधारणा के विकास को निम्न गाथा में देखा जा सकता है-

सुत्तं गणधरगधिदं तहेव पत्तेयबुद्धकहियं च।

सुदकेवलिणा कहियं अभिण्णदसपुव्विगधिदं च।। भगवती अराधना-33

अर्थात् जो गणधर के द्वारा रचा गया हो, प्रत्येकबुद्ध के द्वारा कहा हुआ हो, श्रुतकेवली के द्वारा हो और अभिन्नदशपूर्वी के द्वारा रचा गया हो, वह सुत्त है। बृहत्कल्पसूत्र भाष्य में सुत्त शब्द के अनेक अर्थ बतलाते हुये कहा गया है- सुष्ठु उक्तमिति वा सूक्तम् प्राकृत शैल्या तु सुत्तमिति। (गाथा-310 की संस्कृत-वृत्ति पृ. 94) सम्यक् प्रकार से कहा हुआ वचन सूक्त है इसे ही प्राकृत शैली में सुत्त कहते हैं।

उपर्युक्त उद्धरणों से ज्ञात होता है कि अरहन्त की अर्थरूप वाणी को गणधर सुत्त (सूक्त) रूप

में गूथते हैं। बाद में गणधर के साथ प्रत्येकबुद्ध, श्रुतकेवली और अभिन्नदशपूर्वी को भी सुत्त का कथन करने वाले के रूप में मान्य कर लिया गया। आचार्य गुणधर ने कसायपाहुड की गाथाओं को सुत्तगाहा कहा है। उसी प्रकार आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रंथों की गाथाओं को भी गाहासुत्त या सुत्तगाहा मानने में कोई दोष प्रतीत नहीं होता, क्योंकि उन्होंने स्वयं पंचास्तिकाय ग्रंथ को पंचत्थियसंगहंसुत्त (गाथा-173) कहा है।

सुत्त की उक्त परंपरा में संस्कृत के सूक्तिमुक्तावलि आदि ग्रंथ उपलब्ध हैं। प्राकृत भाषा के गाहासत्तसई और वज्जालग्गं आदि ग्रंथ इसी के उदाहरण हैं। आगे सूक्तों की परंपरा को अपभ्रंश के पाहुड दोहा और संत साहित्य के दोहा पाहुड जैसे ग्रंथों में देखा जा सकता है। आधुनिक भारतीय भाषाओं में दोहा और मुक्तक के रूप में सूक्त की परम्परा जन सामान्य के बीच आज भी लोकप्रिय है।[4]

संस्कृत वाङ्मय में सूत्र की पृथक परंपरा है, जो काफी समय पहले अस्तित्व में आ चुकी थी। वहां सूत्र की परिभाषा इस प्रकार की गई है-

अल्पाक्षरमसंदिग्धं सारवद् विश्वतोमुखम्।

अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः।।

अर्थात् अल्पाक्षरता, असंदिग्धता, सारवत्ता, विश्वतोमुखता, अस्तोभता तथा अनवद्यता आदि गुणों से जो युक्त होता है, उसे सूत्र ज्ञाताओं ने सूत्र कहा है। जयधवला में भी कहा है-

अल्पाक्षरमसंदिग्धं सारवद् गूढ़निर्णयम्।

निर्दोषं हेतुमत्तथ्यं सूत्रमित्युच्यते बुधैः।।[5]

अर्थात् जो अल्पाक्षरों वाला, असंदिग्ध, सारभूत, गूढ़निर्णय करने वाला, निर्दोष, सायुक्तिक और तथ्यभूत हो, उसे विद्वान सूत्र कहते हैं। जयधवलाकार ने अन्यत्र भी कहा है-

अर्थस्य सूचनात् सम्यक् सूतेर्वार्थस्य सूरिणा।

सूत्रमुक्तमनल्पार्थं सूत्रकारेण तत्त्वतः।।43।।[6]

अर्थात् जो भले प्रकार अर्थ का सूचन करे अथवा अर्थ को जन्म दे, उस बहु अर्थ गर्भित रचना को सूत्रकार आचार्य ने निश्चय से सूत्र कहा है। संस्कृत में सूत्र रचना का प्रमुख प्रयोजन अल्पाक्षरत्व है। जब संस्कृत में व्याकरण सम्मत सूत्र की अवधारणा विकसित हुई तक जैन और बौद्ध ग्रंथकारों ने भी उसे बखूबी अपनाया। परिणामतः दोनों परम्पराओं में अनेक सूत्रग्रंथ रचे गये।

प्राचीन गाथासूक्तों के टीकाकारों ने तो सर्वत्र सुत्त का अर्थ सूत्र ही किया है, किन्तु सूक्तों की प्राचीन परंपरा के संदर्भ में उक्त अर्थ भ्रमपूर्ण प्रतीत होता है।[7] इसलिये यह तथ्य विद्वानों के लिये विचारणीय है।

संगहो-सारो की परंपरा- संग्रह और सारान्त नाम वाले ग्रंथों पर विचार करने से ज्ञात होता है कि इनकी अत्यन्त प्राचीन और दीर्घ परंपरा उपलब्ध है। ऐसे ग्रंथों में आचार्य परंपरा द्वारा मौखिक रूप से चला आ रहा सैद्धान्तिक श्रुतज्ञान जब लुप्त होने लगा तो उसे स्मृति के आधार पर

लिपिबद्ध करने के प्रयत्न किये गये, जिसे पारंपरिक गाथाओं के संग्रह-ग्रंथ तैयार हुये। ऐसे ग्रंथों को प्रायः संगहो या सारो नाम देकर इनकी प्राचीनता और पारंपरिकता को भणियं या कहियं शब्दों के द्वारा प्रकट एवं पुष्ट किया गया। यह परंपरा आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रंथों में भी उपलब्ध है। आचार्य कुन्दकुन्द ने पंचास्तिकाय की पंचत्थिसंगहंसुत्त (173) या पंचत्थियसंगहं (103) कहा है। प्रवचनसार को पवयणसारं (375) और नियमसार के णियमसारं (गाथा-1) एवं णियमसारणामसुदं (गाथा-187) नाम देकर केवलिसुदकेवली भणिदं (गाथा-1) अर्थात् केवली और श्रुतकेवली द्वारा कहा हुआ बताया है। रयणसारो भी ऐसा ही ग्रंथ है। इस परंपरा को आचार्य नेमिचद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती ने तिलोयसारो, गोम्मटसारो (गोम्मटसंगहसुत्तं), पंचसंगहो, लद्धि-क्षपणासारो आदि विशाल ग्रंथों को रचकर आगे बढ़ाया। इसी श्रृंखला में देवसेन के भावसंगहो (भावसंगहंसुत्त-गाथा-700), दंसणसारो, तच्चसारो, एवं वसुनन्दि के ग्रंथ विशेष उल्लेखनीय हैं। दव्वसंगहो जैसी लघु रचना भी सैद्धान्तिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उक्त सभी ग्रंथ प्राचीन शौरसेनी आगमिक परंपरा के गौरवग्रंथ हैं, जिनमें संपूर्ण जैनागम का सार भरा हुआ है। इस विद्या के संदर्भ में उत्तरवर्ती आचार्यों ने आचार्य कुन्दकुन्द का अनुकरण किया है।

आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रंथों की गाथाएं स्वयं उनके ग्रंथों में एकाधिक स्थान पर उपलब्ध होती हैं तथा शौरसेनी आगम परंपरा के अय ग्रंथों में भी प्रायः यथावत् रूप में पायी जाती हैं। यही नहीं कतिपय गाथाएँ अर्धमागधी आगम परंपरा के ग्रंथों - निर्युक्तियों, भाष्यों और प्रकीर्णकों में यथावत् या किचिंत् परिवर्तन के साथ प्राप्त होती हैं। ऐसी समान गाथाएँ देखकर अपनी परम्परा के ग्रंथों को प्राचीन तथा अन्य परम्परा के ग्रंथों को अर्वाचीन सिद्ध करना प्रायः सामान्य हो गया है। इस दिशा में सार्थक एवं गहन शोध-खोज की अपेक्षा है। आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रंथों में भी ऐसी प्राचीन पारंपरिक गाथाओं का कितना समावेश है, यह भी गहन अध्ययन और शोध का विषय है।

उदाहरणस्वरूप आचार्य कुन्दकुन्द के नियमसार गाथाएँ शौरसेनी एवं अर्धमागधी परंपरा के 18 ग्रंथों में ज्यों की त्यों या किचिंत् परिवर्तन के साथ मिलती हैं। इससे ज्ञात होता है कि ऐसी गाथाएं, जो दोनों परम्पराओं के ग्रंथों में उपलब्ध होती हैं, वे अविभाजित जैन श्रमण परंपरा की धरोहर हैं, जिन्हें पश्चात्यवर्ती ग्रंथकारों ने अपने-अपने ग्रंथों में समान रूप से अपनाया है। ऐसे गाथासुत्तों को संकलित करके अविभाजित मूल परंपरा के आगम ज्ञान तक पहुँचने का प्रयत्न किया जाना चाहिये।

लिंग के संदर्भ में दंसण शब्द पर विचार करने से पूर्व आचार्य कुन्दकुन्द के ग्रंथों में से दंसण शब्द के कतिपय उद्धरण देख लेना श्रेयस्कर होगा-

दंसणमग्गं वोच्छामि जहाकमं समासेण। - दंसणपाहुड-1
दंसणमूलो धम्मो उवइट्ठो जिणवरेहिं सिस्साणं।
तं सोऊण सकण्णे दंसणहीणो ण वंदिव्वो।। - दंसणपाहुड-2
दंसणभट्टा भट्टा दंसणभट्टस्स णत्थि णिव्वाणं।
सिज्झंति चरियभट्टा दंसणभट्टा ण सिज्झंति।। दंसणपाहुड-3

सम्मत्तरयणभट्टा...। - दंसणपाहुड-4
सम्मत्तविरहियाणं सुट्ठु वि उग्गं तव चरंताण। - दंसणपाहुड-5
सम्मत्तणाणदंसणवीरियवड्ढमाण जे सव्वे। - दंसणपाहुड-6
सम्मत्तसलिलपवहे...। दंसणपाहुड-7
जे दंसणेसु भट्टा णाणे भट्टा चरित्तभट्टा य। - दंसणपाहुड 8
तह जिणदंसणभट्टा मूलविणट्ठा ण सिज्झंति। दंसणपाहुड 10
तह जिणदंसणमूलो...। दंसणंपाहुड-11
जे दंसणेसु भट्टा पाए पाडंति दंसणधराणं। ते होंति लुल्लमूआ। - दंसणपाहुड 12
सम्मत्तादो णाणं णाणादो सव्वभाव उवलद्धी। - दंसणपाहुड-15
एगं जिणस्स रूव बीयं उक्टिठसावयाणं तु।
अवरट्ठियाणं तइयं चउत्थ पुण लिंगदंसणं णत्थि। - दंसणपाहुड 18
जीवादी सद्दहणं सम्मतं। दंसणपाहुड-20
एवं जिणपण्णत्तं दंसणरयण धरेह भावेण।
सारं गुणरयणत्तयसोवाणं पढम मोक्खस्स। - दंसणपाहुड 21
सद्दहमाणस्स सम्मतं। दंसणपहुड 22
दंसणणाणचरित्ते तवविणए विणच्चकालसुपसत्था। दंसणपाहुड -23
सम्मत्तविवज्जिया होंति। दंसणपाहुड 25
णाणेण दंसणेण य तवेण चरिएण संजमगुणेण।
चउहिं पि समाजोगे मोक्खो जिणसासणे दिट्ठो।।दंसणपाहुड-30
सारो वि णरस्स होइ सम्मत्तं। सम्मत्ताओ चरणं..। दंसणपाहुड 31
णाणम्मि दंसणम्मि य तवेण चरिएण सम्मसहिएण।
चोण्हं वि समाजोगे सिद्धा जीवा ण संदेहो।। दंसणपाहुड 32
विसुद्धसम्मत्तं। सम्मद्दंसण रयणं..। दंसणपाहुड -33
णाणं दंसण सम्मं चारित्तं सोहिकारणं तेसिं। चारित्तपाहुड 2
जं जाणइ तं णाणं जं पिच्छइ तं च दंसणं भणियं। चारित्तपाहुड-3
सम्मददंसण पस्सदि। सम्मेण य सद्दहदि..। चपा-18
दंसण वय सामाइय..। चपा 22
दंसणणाणचरित्तं तिण्णि वि जाणेह परमसद्धाए। चपा 40
रइयं चरणपाहुडं चेव। - चपा 45
आयदणं चेदिहरं जिणपडिमा दंसणं च जिणबिंब।
भणियं सुवीयरायं जिणमुद्दा णाणमदत्थं।
अरहंतेण सुदिट्ठं जं देवं तित्थमिह य अरहंतं।
पावज्ज गुणविसुद्धा इय णायव्वा जहाकमसो।। - बोपा. 3-4

दंसेइ मोक्खमग्गं सम्मत्तं संजमं सुधम्मं च।
णिग्गंथं णाणमयं जिणमग्गे दंसणं भणियं।। बोपा-13 तथा 14, 23 भी द्रष्टव्य।
जिणबिम्बं णाणमयं संजमसुद्धं सुवीयरायं च।
जं देइ दिक्खसिक्खा कम्मक्खयकारणे सुद्धा।। बोपा-15
दढसंजममुद्दाए इंदियमुद्दाकसायदढमुद्दा।
मुद्दा इह णाणाए जिणमुद्दा एरिसा भणिया।- बोपा-18
एगो मे सासदो अप्पा णाणदंसणलक्खणो।
सेसा मे बाहिरा भावा सव्वे संजोगलक्खणा।
आदा खु मज्झ णणे आदा में दंसणे चरित्ते च।
आदा पच्चक्खाणे आदा मे संवरे जोगे। भापा-58-59
जं जाणइ तं णाणं जं पिच्छ तं च दंसणं णेयं।
तं चारित्त भणियं परिहारो पुण्णपावाणं।।
तच्चरुई सम्मत्तं तच्चग्गहणं च हवइ सण्णाणं।
चारित्तं परिहारो पजंपियं जिणवरिदेहिं।। मो. पा. 37-38
सम्मत्तं सण्णाणं सच्चारित्तं हि सत्तवं चेव।
चउरो चिट्ठहि आदे तम्हा आदा हु मे सरंण। 105
णियमं मोक्ख उवाओ तस्स फलं हवदि परम णिव्वाणं।
णियमेण यं जं कज्जं तं णियमं णाणदंसणचरित्तं।
विवरीयपरिहरत्थं भणिदं खलु सारमिदि वयणं।। णियमसारो

दंसणपाहुड आचार्य कुन्दकुन्द का दर्शन (सम्यक्दर्शन) विषयक स्वतन्त्र ग्रंन्थ है, जिसका ग्रंथ परिमाण 36 गाथा मात्र है। ग्रंथकार इसके प्रारंभ में **दंसणमग्गं वोच्छामि** (गाथा-1) द्वारा दर्शनमार्ग कहने की प्रतिज्ञा करते हें। सम्यग्दर्शन की विषयभूत सामग्री का कथन करने से पूर्व **पंचत्थिय-संगहो** में भी वे **मग्गं मोक्खस्स वोच्छामि** (गाथा-105) अर्थात् मोक्ष का मार्ग कहूंगा, ऐसा कहते हैं। संस्कृत टीकाकार श्रुतसागरसूरि ने ग्रंथ का नाम दर्शनप्राभृत बताया है। इसमें निश्चय-व्यवहार नय के अनुसार सम्यग्दर्शन का स्वरूप और माहात्म्य कहा गया है।

सम्यग्दर्शन क्या है ?

नय विवक्षानुसार सम्यग्दर्शन का स्वरूप कहते हुये कहा गया है कि जिनेद्रदेव ने जीवादि तत्त्वों के श्रद्धान को व्यवहार नय से सम्यग्दर्शन बताया है। छह द्रव्य, पांच अस्तिकाय, नवपदार्थ और सात तत्त्वों का श्रद्धान करने वाला सम्यग्दृष्टि कहलाता है। अपनी आत्मा का श्रद्धान करना निश्चय सम्यग्दर्शन है। यहाँ सम्यग्दर्शन को रत्नत्रय का सार तथा मोक्ष का प्रथम सोपान निरूपित किया गया है। आगे कहा गया है कि चारित्र का जितना आचरण संभव है, उतना करो और जिसका आचरण शक्य न हो, उसका श्रद्धान करना चाहिये, क्योंकि केवली जिनेन्द्र ने श्रद्धा करने वाले मनुष्य को सम्यक् दृष्टि बतलाया है।[9] जीव कल्याण परंपरा से विशुद्ध सम्यक्त्व प्राप्त करते हैं

। सुरों और असुरों से भरे इस लोक में सम्यग्दर्शन रूपी रत्न सबके द्वारा पूज्य है।

सम्यग्दर्शन का महत्व- सम्यग्दर्शन धर्म का मूल है, इससे भ्रष्ट जीव भले ही अनेक शास्त्रों के ज्ञाता हों, करोड़ों वर्षों से तपस्या में लगे हों, किन्तु आराधना के अभाव में इधर-उधर ही घूमते रहते हैं, उन्हें रत्नत्रय स्वरूप बोधि प्राप्त नहीं होती। इसके विपरीत जिसके हृदय में सम्यक्त्वरूपी जल प्रवाहमान रहता है, उसके बद्ध कर्म नष्ट हो जाते हैं तथा नये कर्म नहीं बंधते। ऐसे जीव निरंतर सम्यक्त्व, ज्ञान, दर्शन, बल, वीर्य आदि बढ़ाते हुये पापरहित होकर श्रेष्ठ ज्ञानी होते हैं।[10]

जो सम्यग्दर्शन से भ्रष्ट है, उसे निर्वाण प्राप्त नहीं होता। सम्यग्दर्शन से सम्पन्न मनुष्य यदि चारित्र से भ्रष्ट भी हो जाये किन्तु दर्शन में स्थित रहे तो वह निर्वाण प्राप्त सकता है।[11] जो दर्शन, ज्ञान और चारित्र तीनों से भ्रष्ट होते हैं वे महाभ्रष्ट हैं, ऐसे लोग अन्य मनुष्यों को भी भ्रष्ट कर देते हैं। आगे और भी कहते हैं- जो मनुष्य संयम, तप, नियम, योग, आदि गुणों के धारक पुरुषों में दोष लगाते हैं, वे स्वयं तो भ्रष्ट होते ही हैं, अन्य लोगों को भी भ्रष्ट करते हैं।[12] जिस प्रकार मूल (जड़) के नष्ट हो जाने पर वृक्ष के परिवार शाखा आदि का बढ़ा रुक जाता है, उसी प्रकार जिनदर्शनरूपी मूल से विनष्ट मनुष्य सिद्ध नहीं हो पाता अर्थात् सम्यग्दर्शन से रहित मनुष्य का आत्म-कल्याण संभव नहीं होता।[13] और भी कहते हैं कि जिस प्रकार जड़ से वृक्ष का परिवार बढ़ता है, उसी प्रकार सम्यक्त्व का श्रद्धान मोक्षमार्ग का मूल कहा गया है। अर्थात् जिनदर्शन- सम्यक्त्व के श्रद्धान से मोक्षमार्ग प्रशस्त होता है।[14] आचार्य कुन्दकुन्द चेतावनी देते हुये कहते हैं ...

जो जानते हुये भी लज्जा, गर्व और भय से कुमार्गगामियों की चरण वंदना करते हैं, पाप समर्थ होने से वे बोधि प्राप्त नहीं कर पाते। सम्यग्दर्शन से भ्रष्ट मनुष्य (जीव) सम्यग्दृष्टियों के चरणों में नहीं पड़ते- उन्हें नमस्कार नहीं करते, वे अव्यक्तभाषी और गूंगे होते हैं। उनके लिये बोधि-रत्नत्रय तो दुर्लभ ही हैं।

वन्दनीय/अवन्दनीय- आचार्य कुन्दकुन्द ने सम्यग्दर्शन से रहित मनुष्य को अवन्दनीय माना है (दंसणहीणो ण वंदिव्वो-गाथा-2) असंयमी और वस्त्ररहित असंयमी दोनों हीं संयम से रहित होने के कारण वंदना के अयोग्य हैं। शरीर, कुल जाति और गुणों से हीन श्रमण तथा श्रावक भी वंदना योग्य नहीं है।[16] जो स्वयं गुणों के धारक हैं, दूसरे के गुणों का कथन करने वाले हैं , और दर्शन, ज्ञान, चारित्र तथा तपो विनय रूप चार प्रकार की आरधना करने में हमेशा संलग्न रहते हैं वे वंदना-नमस्कार योग्य हैं। आचार्य कहते हैं कि मैं तप संपन्न मुनियों की वंदना करता हूँ। उनके शील, गुण, ब्रह्मचर्य और सिद्धिगमन की भी शुद्धभाव से वंदना करता हूँ।[17]

मिथ्यादृष्टि का स्वरुप बतलाते हुये आचार्य कहते हैं कि जो सहज उत्पन्न रूप को (नग्न रूप को) देखकर उसे नहीं मानता है, उससे द्वेष करता है। वह संयम प्रतिपन्न-दीक्षित होते हुये भी मिथ्यादृष्टि होता है। जो देवताओं द्वारा वन्दित तीर्थंकरों-दिगम्बर श्रमणों के शील सहित रूप को देखकर गर्व करते हैं, वे सम्यग्दर्शन से रहित होते हैं अर्थात् मिथ्यादृष्टि होते हैं। सम्यक्त्वरत्न से च्युत होते हैं और महापातकी हैं।[18]

मोक्षमार्ग के घटक

शाश्वतसुखरूप मोक्ष कैसे प्राप्त होता है, इसे कहते हैं ...

णाणेण दंसणेण य तवेण चरियेण (चरिएण) संजमगुणेण।

चउहिं पि समाजोगे मोक्खों जिणसासणे दिट्ठो ।। दं. पा. -30

अर्थात् सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक्तप और सम्यक्चारित्र इन चारों के समायोग से मोक्ष होता है, ऐसा जिनशासन में कहा गया है।

आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि ज्ञान मनुष्य के लिये सारभूत है और ज्ञान की अपेक्षा सम्यक्त्व सारभूत है, क्योंकि सम्यक्त्व से चारित्र होता है तथा चारित्र से निर्वाण होता है। अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यक्तप और सम्यक्चारित्र इन चारों के समायोग से जीव सिद्ध होते हैं । मोक्ष प्राप्त करते हैं। इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है।[19] दंसणपाहुड में मोक्षमार्ग में सम्यग्दर्शन की मुख्यता और मोक्ष के उपाय का विवेचन किया गया है।

बोधपाहुड में कहा गया है कि आयतन, चैत्यगृह, जिनप्रतिमा, दर्शन, वीतराग जिनबिम्ब, जिनमुद्रा, आत्मार्थ ज्ञान, अर्हन्त देव कथित देव, तीर्थ, अरहन्त और गुणों से विशुद्ध प्रवज्या ये ग्यारह अधिकार इस प्राभृत के जानना चाहिये।[20] इन ग्यारह अधिकारों के माध्यम से इसमें मूलतः आत्मार्थी श्रमण का ही स्वरुप प्रतिपादित किया गया है- जो इस प्रकार है-

आयतन- मन, वचन, काय, पंचेन्द्रियों के विषय, मद, राग-द्वेष मोह, क्रोध और लोभ जिनके अधीन हैं तथा जो पांच महाव्रतों को धारण करने वाले हैं, जिनमार्ग में ऐसे संयमी महर्षियों को आयतन कहा गया है। विशुद्ध ध्यान और ज्ञान से युक्त मुनिवर वृषभ को, जिन्हें आत्मस्वरूप सिद्ध हो गया है, उन्हें सिद्धायतन कहा जाता है।[21]

चैत्यगृह- जो अपनी आत्मा को जानता है, दूसरों को उसका बोध कराता है, पांच महाव्रतों से शुद्ध और स्वयं ज्ञानमय है, उसे चैत्यगृह जानो। बन्ध, मोक्ष दुःख और सुख का जिस आत्मा को ज्ञान हो गया है, वह आत्मा चैत्य कहलाता है। उसे चैत्य का गृह, चैत्यगृह कहा जायेगा। जिनमार्ग में षट्काय के जीवों का हित करने वाले संयमी मुनि को चैत्यगृह कहा गया है।[22]

जिनप्रतिमा- सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को धारण करने वाले निर्ग्रन्थ वीतरागी श्रमणों की जंगम देह को जिनमार्ग में जंगमप्रतिमा कहा गया है। यही प्रतिमा वन्दनीय है। अनन्तदर्शन, अनन्तज्ञान, अनन्तवीर्य और अनन्तसुखरूप अनन्तचतुष्टय से युक्त, आठ कर्मों के बंध से रहित, अशरीरी और शाश्वत सुख सहित सिद्ध परमेष्ठी सिद्ध प्रतिमा कहलाते हैं ।[23]

दर्शन-जो सम्यक्त्व, संयम और सुधर्मरुप मोक्षमार्ग को दिखलाता है, स्वयं निर्ग्रन्थ तथा ज्ञानमय, वह जिनमार्ग में दर्शन कहा गया है।[24] जिस प्रकार फूल गन्धमय है और दूध घृतमय है, उसी प्रकार दर्शन भी सम्यग्ज्ञान और चारित्रमय होता है। यह दर्शन मुनि, श्रावक और असंयत सम्यग्दृष्टियों के होता है।[25]

जिनबिम्ब- जो ज्ञानमय, संयम से शुद्ध वीतरागी तथा कर्मक्षय में कारणभूत शुद्ध दीक्षा और

शिक्षा देते हैं, तप, व्रत और गुणों से शुद्ध आचार्य परमेष्ठी ही जिनबिम्ब कहे गये हैं, वे ही पूजा-वंदना योग्य हैं।[26]

जिनमुद्रा-दृढ़तापूर्वक संयम धारण करना दृढ़संयममुद्रा है, पांचों इन्द्रियों को विषयों से दूर रखना, इंद्रियमुद्रा है, क्रोधादि कषायों को दृढ़तापूर्वक वश में रखना, कषायदृढ़मुद्रा है और अहर्निश ज्ञान में संलग्न रहना, स्थितप्रज्ञ रहना, ज्ञानमुद्रा है। इस प्रकार संयमी, इंद्रियवशी, कषायजयी और सम्यग्ज्ञानी मुनि की मुद्रा जिनमुद्रा कहलाती है।[27]

आत्मार्थ ज्ञान- उत्तम ध्यान के संयोग से युक्त और विनय से संपन्न सत्पुरुष मोक्षमार्ग का लक्ष्य ज्ञान से ही प्राप्त करता है। जिस प्रकार धनुर्विधा का अनभ्यासी पुरुष बाण के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता है, ठीक उसी प्रकार अज्ञानी जीव मोक्षमार्ग के लक्ष्यभूत आत्म-स्वरुप को प्राप्त नहीं कर पाता है।[28] जिसके पास मतिज्ञानरूपी धनुष है, श्रुतज्ञानरूपी डोरी है, रत्नत्रयरूप बाण है और परमार्थ जिसका लक्ष्य है, ऐसा पुरुष मोक्षमार्ग में नहीं चूकता है[29] अर्थात मोक्षमार्ग का आचरण करके मोक्ष पा लेता है।

देव- जो स्वयं मोह रहित है तथा भव्यजीवों के लिये दया से विशुद्ध धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के कारणभूत ज्ञान और सभी प्रकार के परिग्रह से रहित दीक्षा देता है, वह देव कहा गया है।[30]

तीर्थ- निर्मलधर्म, सम्यक्त्व, संयम, तप और ज्ञान को धारण करने वाला मुनि जिनमार्ग में तीर्थ कहा गया है। मुनिरूप वह तीर्थ व्रत और सम्यक्तव से शुद्ध, पंचेन्द्रियों को संयत रखने वाला, निरपेक्ष, दीक्षा और शिक्षारूपी स्नान से पवित्र होता है।[31]

अरहन्त- जो अनन्तदर्शन, अनन्तज्ञान तथा अनुपम गुणों से युक्त होते हैं, आठ कर्मों का बंधन, अठारह दोषों और चतुर्गति का भ्रमण नष्ट करके जिन्होंने भावमोक्ष पा लिया है, वे अरहन्त कहलाते हैं। नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव इन चार निक्षेपों के द्वारा उनका चिंतन किया जाता है। गुणस्थान, मार्गणास्थान, पर्याप्ति, प्राण और जीवस्थान इन पांच प्रकार से अरहन्त की स्थापना होती है। तेरहवें गुणस्थानवर्ती सयोगकेवली जिन अरहन्त कहलाते हैं, वे चौंतीस अतिशयों और आठ प्रतिहार्यों से संपन्न होते हैं, वे आहार-नीहार और अनेक प्रकार के मलों से से रहित हैं। उनके शरीर में गाय के दूध और शंख के समान सफेद रूधिर और मांस होता है इनके एक हजार आठ लक्षणों में तिल-मसक आदि नौ सौ व्यंजन तथा श्रीवत्स-कमल आदि एक सौ आठ लक्षण होते हैं।[32] कुल मिलाकर वे विशिष्ट अतिशयों से युक्त होते हैं।

प्रवज्या- ग्रंथकार ने यहां जिनदीक्षा (प्रवज्या) का विस्तार से वर्णन किया है। जिनदीक्षाधारी श्रेष्ठ मुनि पांच महाव्रतों से युक्त, पंचेन्द्रियजयी, निरपेक्ष, स्वाध्याय और ध्यान में संलग्न, गृह, ग्रंथ (परिग्रह) मोह और पापारंभ से रहित, परीषहों और कषायों को जीतने वाले, शत्रु-मित्र, निंदा-प्रशंसा, लाभ-अलाभ तथा तृण-सुवर्ण में समभाव रखने वाले निरपेक्ष भाव से योग्य घरों में आहार ग्रहण करने वाले होते हैं। वे निःसंग, निम्रान, निर्दोष, निर्मम, निरहंकार, निःस्नेह, निर्लोभ, निर्मोह, नीराग, निर्विकार, निष्कलुष, निर्भय, निरायुध, शांत, अवलंबित

भुजाओं वाले और नवजात शिशु के समान विकाररहित वेषधारी होते हैं। उपर्युक्त दीक्षाधारी मुनि परकृत शून्य घर में, वृक्ष के मूल में, उद्यान में श्मशान में, पर्वत की गुफा में, पर्वत के शिखर पर भयंकर वन में तथा वसतिका में निवास करते हैं तथा शिला, काष्ठ अथवा भूमितल पर बैठते अथवा शयन करते हैं। वे तप, व्रत, गुण, संयम और सम्यक्त्व से शुद्ध होते हैं।[33]

मोक्षमार्ग में स्वीकार्य लिंग (वेष)- आचार्य कुन्दकुन्द ने मोक्षमार्ग के प्रसंग स्वीकार्य लिंग की चर्या करते हुये दंसणपाहुड में तीन ही वेष बतलाये हैं-1. जिनेन्द्र भगवान का यथाजात (नग्न), विकाररहित रूप, 2. दूसरा दशवीं- ग्यारवहीं प्रतिमाधारी उत्कृष्ट श्रावकों का वेष और 3. आर्यिकाओं का वेष। इनके अतिरिक्त जिनशासन में कोई चौथा लिंग (वेष) स्वीकार करने योग्य नहीं है-

एक्कं जिणस्स रूवं वीयं उक्किट्ठ सावयाणं तु।
अवरट्ठियाण तइयं चउत्थं पुण लिंगदंसणं णत्थि।।- दपा. गाथा-18

जो मुनि पांच महाव्रतों से युक्त तीन गुप्तियों से गुप्त और संयमी होता है, सूत्र सम्मत आचार्य मार्ग का निष्ठापूर्वक पालन करता है, ऐसा निर्ग्रन्थ ही मोक्षमार्ग है, वहीं वंदनीय है। दूसरा उत्कृष्ट वेषधारी श्रावक ग्यारहवीं प्रतिमा को पालता है, भिक्षा के निमित्त भाषा समिति और मौनपूर्वक भ्रमण करता है तथा पात्रभोजी होता है। तृतीय वेषधारी आर्यिका व क्षुल्लिका भी कहा जाता है। वे एक ही वस्त्र रखती हैं तथा एक ही बार भोजन करती हें। विभिन्न कारणों से स्त्री के लिये निर्ग्रन्थ दीक्षा का निषेध किया गया है।[34] श्रमण लिंग के विशेष विवेचन के लिये स्वतंत्र ग्रंथ लिंगपाहुड देखना चाहिये।

उपर्युक्त तथ्यों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि आचार्य कुन्दकुन्द ने अपने प्रायः सभी ग्रंथों में मोक्ष या मोक्षमार्ग का प्रतिपादन किया है, इसलिये सर्वत्र दर्शन या सम्यक्दर्शन का विवेचन भी स्वयं ही उसमें समाहित हो गया है। चूँकि श्रमण मोक्षमार्ग का साधक है और वह जिनमुद्रा कहा गया है। उसकी मुनिमुद्रा ही जिनलिंग है। इसलिये प्रकारान्तर से दर्शन शब्द का अर्थ जिनलिंग मानने में कोई व्यवधान नहीं है।

सन्दर्भ-

1. कसायपाहुड भाग-1, पृ. 325
2. वहीं, गाथा-1,2
3. श्री तारानाथ भट्टाचार्य शब्दस्तोम महानिधि पृ.-488
4. प्रो. गोकुलचन्द्र जैन, कसायपाहुडसुत्त की प्रस्तावना पृ. 11
5. कसायपाहुड भाग- 1, पृ. 154
6. वही, भाग-1, पृ. 171
7. प्रो. गोकुलचद्र जैन, कसायपाहुडसुत्त की प्रस्तावना, पृ.11
8. अवचूरिजुदा दव्वसंगहो, प्रस्तावना, पृ. 4-6, एवं प्रो. ए.एन उपाध्ये, प्रवचनसार, इन्ट्रोडक्शन पृ. 51
9. दंसणपाहुड, गाथा- 19-22

10. वही, गाथा-2 और 4-7
11. दंसणभट्टा दंसणभट्टस्स णत्थि णिव्वाणं।
सिज्झंजि चरियभट्टो दंसणभट्टा ण सिज्झंति।। दंपा, गाथा-3
12. जे दंसणेसु भट्टा णाणे भट्टा चरित्तभट्टा य।
एदे भट्टविभट्टा सेसं पि जणं विणासंति।।
जो कोवि धम्मसीलो संजमतवणियजोयगुणधारी
तस्स य दोस कहंता भग्गा भग्गत्तणं दिंति।। - दंपा, गाथा-8-9
13. जह मूलम्मि विणट्ठे दुमस्स परिवार णत्थि परिवड्ढी।
तह णिदंसणभट्टा मूलविणट्टा ण सिज्झंति।।- दंपा, गाथा-10
14. जह मूलाओं खंधो साहापरिवार बहुगुणों होई।
तह जिणदंसणमूलो णिदिट्ठो मोक्खमग्गस्स।। दंपा, गाथा-11
15. दंसणपाहुड, गाथा-12-13
16. वही, गाथा-26-27
17. वही, गाथा- 23-28
18. वही, गाथा- 24-25
19. वहीं, गाथा- 31-32
20. बोधपाहुड, गाथा-3-4 एवं उनकी संस्कृत टीका।
21. वही, गाथा-5-7
22. वही, गाथा-8-9
23. वही, गाथा-10-13
24. वही, गाथा-14
25. जह फुल्लं गंधमयं भवदि हु खीरं स धियमयं चावि।
तह दंसणं हि समं णाणमयं होइ रूवत्थं।। बो.पा. -15
26. बो.पा. गाथा-16-18
27. वही, गाथा-19
28. वही, गाथा-20-22
29. महधणु जस्स थिरं सद्गुण बाणा सुअत्थि रयणत्तं।
परमत्थब (लक्खो ण वि चुक्कदि मोक्खमग्गस्स।। बो.पा. 23
30. बो. पा., गाथा-24-25
31. वही, गाथा 26-28
32. वही, गाथा- 30-38
33. वहीं, गाथा- 42-59
34. सुत्तपाहुड, गाथा- 20-22 एवं 24-26

कहानी

तम्बाकू का तांडव

लेखकः 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

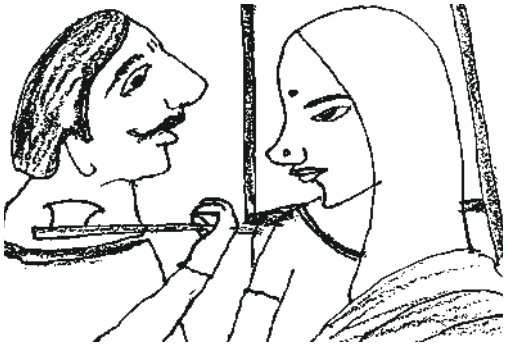

सागर जिले के हरदी गांव में एक परिवार रहा करता था उसमें एक लड़का था जिसका नाम सुखलाल था। सुखलाल गरीब था आदिवासी परिवार से था, लेकिन सुखलाल की एक ही आदत थी, ना वह शराब पीता, ना वह जुआ खेलता, ना ही वह किसी के पीछे दौड़ता था बस उसकी एक ही आदत थी जो कुछ भी वह कमाता था, वह खर्च करता था तंबाकू, गुटखा, सिगरेट में। सुखलाल की भाभी मयूरी जो बहुत ही सीधी-साधी, कम पढी लिखी, लेकिन धर्म में बहुत विश्वास रखती थी। एक दिन जब रात के 12 बज रहे थे सुखलाल क्रोध में भरा हुआ और कुल्हाड़ी लेकर के घुम रहा था जब यह बात पता लगी कि बदले की भावना से किसी भी हत्या कर सकता है सुखलाल जिसके क्रोध आंखों में उतर चुका हैं। क्रोध कारण है या नहीं है यह बात एक अलग है। लेकिन वह क्रोध में घूम रहा था, जब वह घूम रहा था, तो सुखलाल के क्रोधी स्वभाव से बहुत सारे लोग परिचित थे क्योंकि सुखलाल के पागलों की तरह गुस्सा कई लोगों ने कई बार देखी। उसके गुस्सा में कभी विवेक नहीं रहा और विवेक के अभाव होने के कारण से सुखलाल गुस्सा में जेब के रूपयों को निकालकर के और फाड़कर भी फेक देता था। एक बार की बात हैं सुखलाल रास्ते में चला जा रहा था कि सुखलाल को एक पत्थर की चोट लग गई थी अंगूठे में से खून निकाल आया। सुखलाल ने एक हथोडा उठाया सबसे पहले उस पत्थर को गैती से खोदा खोदने के बाद सुखलाल घर ले गया। घर ले जाकर पत्थर पर उल्टी गैती की इतनी चोटे की और चिल्लाता रहा बोल और लगेगा, बोल और और लगेगा, बोल और लगेगा, पूरा मोहल्ला इकट्ठा हो गया। उसमें से एक बुजुर्ग भवानी जी थे। भवानी ने उसको धीरे से बुलाया वे प्रभावशील थे। बोले गुस्सा तेरा शांत हो गया हाँ काका जी हो गया। बोले अच्छा यह बताओ तुम इस पत्थर को खूब मार लिया ना बोले हाँ और भी मारेंगे बेटा और मार लो थोड़ा सा फिर गया गैती उल्टी करके पत्थर को मारना शुरु कर दिया। जब वह मारते-मारते-मारते बिलकुल थक गया तब उसने काका के पास खड़ा हो गया भवानी काका के पास। भवानी काका मन-मन में मुस्कान भीतर-भीतर छुपाते रहें क्योंकि उन्हें पता था मूर्खों के भीतर का क्रोध विवेक से शून्य होता है।

और उनके क्रोध को समझ पाना बहुत कम लोगों के वश में होता है। उसने भवानी काका के पास जाकर के पैर पड़े, पैर पड़ने के बाद, बोले काका अब जी ठंडा पड़ गया, भवानी काका ने कहा क्या हो गया बोले काका अपन ने उसको इतना मारा-इतना मारा अब वो किसी के पैर में नहीं लग सकता। बहुत अच्छा किया बेटा, भवानी काका ब्रह्माण थे बहुत अच्छे कथाकार थे, भवानी काका देश के कोने-कोने में जाकर कथा किया करते थे। कई लोग कहते थे कि एक छोटे से गांव में पैदा हुये भवानी काका पंडित हैं और सब जगह कथा करते थे। इनकी कथा सुनने के लिये ना जाने कितने गांव के लोग आते हैं कथा में मिठास हैं, कथा में सत्य प्रकाशन, कथा में सामाजिक समस्यायें, कथा में राष्ट्रीयता भी होती थी और भवानी काका प्रायः व्यसन मुक्ति पर बहुत अच्छी कथा सुनाया करते थे। उनकी कथा में व्यसन मुक्ति पर ज्यादा जोर रहता था। महिलायें, पुरुष, बच्चे सब लोग उनकी कथा सुनने आते थे, गांव के प्रतिष्ठित लोगों ने सरंपच सोनू ने भवानी काका से निवेदन किया आप जो है ना सब भारत वर्ष के कई कोने-कोने में कथा कर आये हैं आपकी कथा सुनने के लिये बहुत सारे लोग आते हैं हम भी चाहते हैं एक बार आपकी कथा हरदी गांव में भी हो सोनू जैन सरपंच की बात सुनकर कि भवानी काका ने कहा बेटा तेरे बाप पूरनचंद जी जो थे वो मेरे अच्छे मित्र थे और मैं उनकी हर बात की इज्जत किया करता था लेकिन जब से तू सरपंच बना है सोनू जब से तेरे प्रति मेरे मन में ना लगाव है, तू ऐसा सरपंच हैं ना शराब पीता, ना खाता है और गुटखा भी नहीं खाता है तंबाकू भी नहीं खाता है कोई भी व्यसन तेरे पास नहीं है इसीलिये हमें इस हरदी गांव के विकास की तेरे से बहुत उम्मीद है पर एक चीज जरूर है इस हरदी गांव को व्यसन मुक्त बनाया जाये तो बहुत अच्छा होगा।

सोनू ने काका से कहा आप जैसा कहेगें हम वैसा करने तैयार हैं पर एक बार हरदी गांव में आप कथा कर दें सोनू की बात गांव वाले सुनकर के फाल्गुन वदी त्रयोदशी से कथा का प्रारंभ हो गया। बहुत बड़ा कलश का जुलुस भी निकाला गया और उस जुलुस में सोनू ने बहुत सारे बैण्ड लगाये, ढोल लगाये सभी चीजे लगाई बहुत अच्छी मात्रा में जनता भी इकट्ठी हुई उत्साह भी हुआ पहली बार पं. भवानीलाल जी के कथा प्रोग्राम हुआ सब लोगों का मन कथा में बहुत लग रहा था। कथा सुनने के लिये सब आते थे और रमीला ने भी कथा सुनने के लिये बात तय कर ली जब रमीला रोज कथा सुनने गयी तो कथा में आखरी दिन भवानी काका ने कहा ऐसे कितने लोग कथा में आये हैं जो एक बात का संकल्प ले ले ना तो हम खुद तंबाकू खायेंगे, ना किसी को तंबाकू खिलायेंगे क्योंकि उन्होंने यह भी बताया था अपनी कथा में कि तंबाकू में निकोटिन होता है, तंबाकू से फेफड़े खराब होते हैं, तंबाकू से लीवर भी खराब होता है, तंबाकू खाने से मुंह में कैंसर भी हो जाता है और उन्होंने जीते-जागते मुँह में कैंसर हुआ ऐसे कई लोगों के नाम लेकर के गांव, प्रदेश, जिला सब कुछ बताकर भी उनकी दुर्दशा का खूब वर्णन किया। सब लोगों ने हाथ नहीं उठाये परंतु एक रमीला ने ही अपना पूरा हाथ उठाया और खड़े होकर के कह दिया पंडित जी आज से मैं ना तो तंबाकू खाऊंगी, ना किसी को खिलाऊंगी रमीला की बात सुनकर के पंडित जी उसे

बुलाया और पास में बुला करके एक श्रीफल उठाकरके उसके हाथ में दे दिया। कहा रमीला तुम्हारो घर में रख लेना सब संकट तुम्हारे दूर हो जायेंगे रमीला ने पंडित जी की पूरी बात पर विश्वास किया और रमीला नारियल लेकर के घर गई किसी को खाने नहीं दिया वह एक जगह रखकर के कई दिन तक उसमें सिंदूर का टीका लगाती थी और नारियल के लिये बहुत बड़ा मौन करके अपने एक कलश के ऊपर रखती थी रमीला की बातों में बहुत जोश था, बिंदास महिला थी रमीला, और रमीला जो थी भगवान को कम मानती थी लेकिन भवानी काका को जब से उसने कथा सुनी सबसे ज्यादा मानने लगी थी रमीला एक दिन अपने आंगन में धान कूट रही थी तभी सुखलाल आया बोला भाभी जी क्या कर रही हो रमीला ने कहा लालाजी हम धान कूट रहे हूँ सुखलाल ने कहा आज हमें थोड़ी सी तंबाकू मिल जायेंगी रमीला ने कहा तुम्हारे भाईसाहब ने तंबाकू नही खाने की बात हमसे कह दी है पर थोड़ी-थोड़ी अभी वो खा रहे है पर मैं तंबाकू ना तुम्हारे भाईसाहब को देती हूँ ना आपको दूंगी जब सुखलाल बोला देखो भाभी ऐसा है आज तो मैं आपके हाथ की तंबाकू खाऊंगा, रमीला ने कहा ऐसी जिद नहीं करना चाहिये आपको अब आप छोटे बच्चे नहीं रहें बहुत बड़े हो गये, समझदार हो गये हैं आपकी कुछ ही दिन में शादी भी होने वाली है इसलिये आप जो है ना ऐसी बच्चों जैसी जिद करेंगे आपकी शादी कौन करेगा तब सुखलाल बोला लगता है भाभी आपने पंडित जी की कथा सुन ली है। कथा सुनकर के तुमने तंबाकू नहीं देने की बात कहकर मेरे से आपने पंगा ले लिया है अब ये पंगा भाभी आपको बहुत महंगा पड़ेगा, रमीला बोली लालाजी पंगा महंगा पड़े या सस्ता मैंने जो संकल्प लिया हैं ना तंबाकू खाऊंगी, ना किसी को खिलाऊंगी ये संकल्प मैं अपना तोड़ नहीं सकती हूँ रमीला की बात सुनकर के सुखलाल क्रोध से भर गया, तिनमिला गया और तिलमिला जाने के बाद वह बोला अभी भी भाभी मौका है सोच लो अगर तुमने आज तंबाकू नहीं खिलाई यह समझ लेना कि आपको आपकी जिंदगी से हाथ धोना पड़ेगें आज तो मेरा यहीं संकल्प हैं और देखो अब क्या होता है आपको पता लग जायेगा रमीला ने कहा जो कुछ भी होना हो मरने से आगे कुछ होना नहीं लेकिन तुम एक बात ध्यान रखना जो भी करोगे विवेक से दूर हटकर करोगे बाद में तुम्हें बाद में मरने के बाद यदि मैं तुम्हारे हाथ से मरूंगी तो मुझे मारने के बाद तुम जेल में जाकर के सड़ोगे तब सुखलाल बोला भाभी होश हवास में बोलो सड़ने सड़ने की बात मत करना जेल में कोई सड़ता नहीं आजकल, आज कल जेल में सब सुविधायें मिलती है, मोबाईल, वीडी, तंबाकू मिलती है और तो और भाभी जेल में शराब भी मिलती है बस पैसे खर्च होते हैं ठीक है- जो तुम्हें दिखे वो कर लेना, रमीला सुखलाल से कह दिया।

जब रमीला ने सुखलाल से कहा सुखलाल भी अपने क्रोध में पागल हो गया और वह बाहर निकल गया रमीला अपने काम में लग गई काम करते-करते शाम हो गई सूरज अस्त हो गया, सूरज अस्त होते-होते फिर शायद रमीला से यह कह गया रमीला तुम सावधान रहना तुम्हारा देवर तुम्हारा जान का दुश्मन बन चुका है लेकिन रमीला ने कोई फिकर नहीं की उसने यही कहा जो होना होगा वो हो जायेगा, रमीला सो गई नींद की आगोश

में चली गई नींद में तारे भी चांद भी उससे यही कहता रहा कि रमीला तुम जागती रहो बाहर बहने वाली कल-कल की धारा नदी की बह रही थी वह भी यह कह रही थी रमीला जागती रहो, रमीला जागती रहो, तुम सो मत बहुत बड़ा संकट तुम्हारे ऊपर आने वाला है लेकिन नदी की धारा की यह धुन प्रमुख थी शायद नदी भी उसके आने वाले संकट के लिये उसे सचेत कर रही थी कल-कल धारा में बहती थी यहाँ तक कि एक बिल्ली भी रमीला के आंगन में रोना शुरु कर देती है वह भी रोती रहती थी, लेकिन रमीला इतनी थकी थी रमीला के लिये नींद ऐसी आई कि वह अपने बेटे को पलंग पर सुलाकर के खुद भी सो गई और सुखलाल को यह पता था कि आज रमीला के घर पर कोई भी नहीं है इसलिये वह रमीला को आज सबक सिखा देगा वह कुल्हाड़ी लेकर के आया रात के 12 बज रहे थे वह आकर के सबसे पहले उसने दरवाजे की कुंडी खोली दरवाजा खुलते ही सबसे पहले उसने आंख बंद करते ही कहा भगवान अब मैं कुछ कर रहा हूँ और उसने आँख बंद करके ही कुल्हाड़ी का वार दिया लेकिन कुल्हाड़ी की धार तेज थी और तेज धार लगते ही रमीला का बेटा चीख उठा और चीखने के बाद रमीला की नींद खुल गई और रमीला ने देखा उसके बेटे की गर्दन आधी लटक चुकी है रमीला बहुत जोर से चिल्लाई तो लोग इकट्ठे हो गये और सबने देखा कि सुखलाल ने रमीला बेटे पिंटू को अपने कुल्हाड़ी का निशाना बना दिया है और पिंटू की गर्दन लटक चुकी गांव वालों ने तुरंत हरदी चौकी में फोन लगाया चौकी से पुलिसकर्मी आये पुलिसकर्मी ने देखा देखते-देखते ही पिंटू भगवान की गोद में चला जा चुका था जब भगवान की गोद में पिंटू चला गया था तो उस समय रमीला के पास रोने के सिवा और कुछ नहीं बचा था रमीला ने हाथ में थोड़ी सी कुल्हाड़ी लगी थी रमीला को अस्पताल भेजा गया और सुखलाल के लिये पुलिसकर्मी पकड़कर ले गये। जब यह बात गढ़ाकोटा के पत्रकार रवि सोनी को पता लगा एक बच्चे की हत्या हो चुकी हैं और वह बच्चे की हत्या होने का कारण सिर्फ मात्र तंबाकू खाने नहीं देना था वह अपनी गाड़ी से हरदी आया हरदी में उसने ऑन स्पॉट रिर्पोट बनाई पुलिस ने रिर्पोट बनाई और गढ़ाकोटा थाने में पहुंची हैं। दूसरे दिन एक और दिन बीत गया रवि ने अपने अखबार में लिखा तंबाकू का ताण्डव अखबार में जिन लोगों ने भी पड़ी यह समाचार पढ़ते ही लोगों ने कैसे-कैसे लोग होते हैं एक तंबाकू की तडफ में बेचारे मासूम की जान ले ली। अगर तंबाकू नही भी खाता तो बहुत कुछ बिगड़ने वाला नहीं था दूसरी जगह से भी ले सकता था लेकिन सुखलाल ने अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना दिया और देखते-देखते सुखलाल भी जेल में चला गया और एक दिन फिर 22 फरवरी 2024 को अखबारों में छपा तंबाकू के ताण्डव में सुखलाल को आजीवन कारावास की सजा अदालत ने दी है।

अब रमीला से पत्रकार मिलने गये रमीला से पूछा जो फैसला आया हैं इससे तुम खुश हो कि नहीं तो रमीला ने कहा मैंने अपना बेटा खोया है पर मुझे खुशी इस बात की है कि मैंने अपना संकल्प नहीं तोडा क्योंकि संकल्प तोड़ने को भंग करने वाला महाभंगी जैसा होता है मुझे खुशी इस बात है। बेटा मेरा चला गया शायद को सकता है कि मुझे दूसरा बेटा दे दे परंतु इसे जो सजा मिली है इस सजा से बहुत भीतर- भीतर ही खुश हूँ और मुझे न्याय मिला है यह न्याय मुझे स्वीकार हैं और शायद ऐसा न्याय सबको मिलता रहें यही मेरी भगवान से प्रार्थना हैं

हमारे गौरव

महाराज जीवन्धर

दक्षिण भारत के वर्तमान कर्णाटक (मैसूर) राज्य के एक भाग का नाम हेमांगद देश था। उसके राजधानी का नाम राजपूरी था। और उस काल में सत्यधर नामक जिनधर्म भक्त राजा वहां राज्य करता था। उसकी अतिप्रिय एवं लावण्यवती रानी का नाम विजया था। उन्ही के पुत्र जीवन्धर थे। इनका रोचक, रोमांचक एवं साहसिक चरित्र जैन साहित्यकारों में अत्यंत लोकप्रिय रहा है।

संस्कृत, अपभ्रंश और साहसिक चरित्र, हिन्दी, तमिल और कन्नड़ में भी उत्तम काव्य कृतियाँ जीवन्धर जी पर लिखी गयी। जीवक चिन्तामणि तमिल में, कन्नड़ का जीवन्धर चम्पू एवं जीवन्धर- सांगत्य, संस्कृत के क्षत्र-चुड़ामणि, गद्यचिंतामणि, जीवन्धर-चरित आदि, पिता सत्यनधर सज्जन थे, वैज्ञानिक यंत्रों के बनाने में अत्याधिक पटु थे, किन्तु राजकाज में कोरे थे।

अतएव दृष्ट मंत्री काष्ठांगर के षडयन्त्र का शिकार हुये राज्य गया और प्राण भी गये। उसके पूर्व आसनसंकट देख गर्भवती विजयारानी को स्वनिर्मित मयुरयंत्र में बैठाकर आकाशमार्ग से बाहर भेज चुके थे। दूर एक श्मशान में यंत्र उतरा वही जीवन्धर का जन्म हुआ। अनेक संकटों को झेलकर रानी ने पुत्र के लालन-पालन, सुरक्षा एवं उचित शिक्षा-दिक्षा व्यवस्था की। किशोर अवस्था से ही विभिन स्थानों में भ्रमण तथा अनेक साहसिक कार्य कुमार जीवन्धर ने किये। वयस्क होने पर दृष्ट काष्ठांगार से लोहा लिया, उसे दण्डित किया और अपना राज्य पुनः प्राप्त किया। वर्षों अपने राज्य का सुशासन, प्रजा का पालन और भोगोपभोगों का रसास्वादन करने के पश्चात् भगवान महावीर का सम्पर्क मिला तो सब कुछ तृणवत छोड़ उनके शिष्य मुनि हो गये।

कविता

जिनवाणी महिमा

तर्जः गुलों पे छाई बहार

गुरुवर की महिमा अपार, अपार मेरे भैय्या
भवसागर करती है पार, विद्या की नैय्या
जीव अजीव का बोध करावे, धर्म अहिंसा सत्य बतावे
तीर्थंकर वाणी अगाध, अगाध मेरे भैय्या
स्याद्वाद मयवाणी अनोखी, अनेकांत की चर्चा है चोखी
नय प्रमाण का सार , सार मेरे भैय्या
मोक्ष महा की छटा है निराली,
सच्चे आतम को सच्चा सुख देने वाली
भवि जन का करती उद्धार, उद्धार मेरे भैय्या

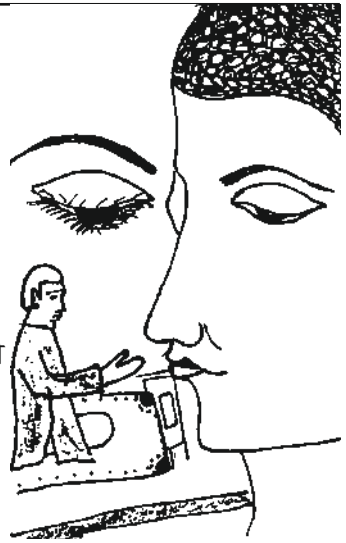

निशा का अवसान हो रहा है

✻ डॉ. मीना जैन, तामोट ओबेदुल्लागंज ✻

उषा की अब शान हो रही है, भानु की निद्रा टूट तो गयी है।

विद्याधर भानु की निद्रा टूट गई है, फिर भी माँ श्रीमंती की गोद में करवटें बदल रहे हैं। माँ के ममत्व ने बांध के रखा था, जो सदलगा से बाहर निकलने में डगमगा रहा था। किन्तु उन माँ, भाई-बहिन के मोह की निशा का अवसान हो गया, जब विद्याधर भानु के कदम सुदूर जयपुर खानियाँ चूलगिरि में विराजमान गुरुवर परमपूज्य आचार्य श्री देशभूषण महाराज की ओर बढ़ गये। अब ममता-मोह रूपी निशाना का अवसान हो गया था।

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी द्वारा रचित मूकमाटी महाकाव्य सिर्फ महाकाव्य ही नहीं अपितु उनके जीवन का सार है। महाकाव्य का आरंभ ही-

सीमातीत शून्य में नीलिमा बिदाई
और इधर-नीचे-निरी नीरखता छाई

सीमातीत शून्य कुछ और नहीं, बल्कि हमारा आतम तत्त्व है। यह तत्त्व कैसा है ? सीमातीत। जो नीचे निगोद से लकर सिद्ध शिला तक जा सकता है। किन्तु कब जा सकता है, जब पुरुषार्थ करता है। फिर आचार्य श्री कहते हैं, जब इधर नीचे निरी नीखता दाई हो अर्थात् सिद्ध शिला से नीचे तक की मंजिल में यदि नीखता आ जाये तो कर्म कालिमा रूपी निशा का अवसान हो सकता है।

परम पूज्य आचार्य श्री ने इस तत्त्व को जाना और कर्म कालिमा रूपी निशा का अंत करने के लिये चल पड़े।

जयपुर की ओर, जयपुर पहुंचते ही उन्हें विश्वास हो जायेगा कि मैं अब परम वीतरागी गुरु के चरणों में इस निशा का अवसान कर सकूंगा । इनके दर्शन मात्र से मुझे उज्जवल पथ की सूचक उषा का आभास होने लगा है। इनकी संगति से तो उषा काल की शान हो सकती है।

परमपूज्य आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी ने अपनी जीवन यात्रा मूकमाटी के शब्दों में कही है।

आज प्राचीन के अघरों पर मंद-मधुरिम-मुस्कान है। क्यों हो ? आज एक अनुपम भानु का उदय जो हुआ है। आचार्य विद्यासागर रूपी भानु जो उदित होने वाला है। धन्य हो गई जयपुर की धरा जहां सदलगा का सपूत जन्मभूमि छोड़कर मरूभूमि की ओर आया है। उस मरूभूमि के अथाह कोष को प्राप्त करने के लिये, जो वह अपने आंचल में समाये बैठी। दादागुरु परम पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागर जैसे सपूत को, जो ज्ञान की संघर्ष रूपी भट्टी में तपकर शुद्ध कंचन से निखरे थे और हीरे से चमके थे। ऐसे परम ज्ञानी-ध्यानी तपोरत्न दादागुरु श्री ज्ञानसागर जी को शत्- शत् नमन।

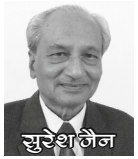

क्रमांक-38 वरिष्ठ नागरिक

बुजुर्गों में आत्मविश्वास

आत्मविश्वास ! आत्मविश्वास यानी अपने आप पर विश्वास और भरोसा, स्वयं पर भरोसा, परमपिता परमात्मा और उसकी शक्ति पर भरोसा, आत्म विश्वास शरीर में रक्त की तरह होता है। बिना खून के जैसे शरीर जिंदा नहीं रह सकता, इसी तरह बिना आत्मविश्वास के बुजुर्ग का जीवन भी जिंदा लाश है।

यह प्रतीक्षा मत कीजिये कि कोई आयेगा और आपका हाथ पकड़ कर आपको, आपकी मंजिल तक पहुंचा देगा.. आप किसी के मोहताज क्यों बने बैठे हैं ? क्या आप अपाहिज हैं ? यदि नहीं तो किसी की आशा क्यों ? उठिये ! अपने आत्मविश्वास, दृढ संकल्प और इच्छा शक्ति के साथ अपने लक्ष्य की ओर कदम बढ़ायें, जिस तरफ आप के कदम बढ़ेंगे वहीं आप अपना संकल्प पूरा होते देखेंगे।

आप बुजुर्ग हो गये हैं- तो क्या- कुछ न कुछ तो हर दिन हर समय कुछ कर रहे हैं, जो कुछ भी कर रहे हैं , पूरे आत्मविश्वास से करें। ऐसे न करे कि आप टाईम काट रहे हैं। आत्मविश्वास के बल पर व्यक्ति हर असंभव को संभव कर सकता है।

बहुत कम बुजुर्ग सोच पाते हैं कि हम में कितनी शक्ति है, लेकिन कितनी दुर्बलता है, इसका हिसाब फटाफट लगा लेंगे। हमारे जीवन में कितनी खुशियां है, इस नजरिये से नहीं सोचेंगे, बल्कि दुःखों का हिसाब लगायेंगे। संकटों को ही गिनते जायेंगे। कुछ लोग अपना महत्त्व अपनी विषय से मापने की उपेक्षा पराजय से मापते हैं। ऐसे लोग अपनी विजय की आकांक्षा को मात्र स्वप्न ही समझते हैं। उसे अपने जीवन का अंग नहीं बनाते। युद्ध में योद्धा नहीं अपितु उसके भीतर का आत्मविश्वास ही लड़ता है।

जो बुजुर्ग अपनी शक्ति का अनुमान नहीं लगाते, जिनके जीवन की आकांक्षायें खाने-पीने तक की सीमित रहती हैं, जो यह नहीं जानते कि उन्हें धरती पर परमात्मा ने किस कार्य विशेष के लिये भेजा है, वे लोग न तो संसार में आज तक कुछ कर पायें हैं, और न ही भविष्य में कुछ कर पायेंगे।

आपको अपनी आत्मा की आवाज सुननी चाहिये और देखना चाहिये कि वह आपको किस काम के लिये प्रेरित कर रही है, तत्पश्चात् पूरे आत्मविश्वास के साथ आप जो कुछ भी करना चाहते हैं उसमें जुट जायें। इंसान को असफलता या निराशा के नकारात्मक विचारों को मन में स्थान देना ही नहीं चाहिये। यह भावना अपने मन में कभी उठने ही नहीं देनी चाहिये। जो सोचता है, वह ही कर सकता है। जो सोचता ही नहीं, वह कर भी नहीं सकता। मनुष्य विश्वासरूपी इस शक्ति के विषय में कभी सोचता ही नहीं, जिन में आत्मविश्वास होता है, उन्हें कुछ अधिक नहीं करना पड़ता। वे केवल अपनी आत्मा की आवाज को अनुकरण मात्र करते हैं ।

अपना मूल्यांकन करें, लोग आपके विषय में क्या सोचते हें, यह महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि आप अपने विषय में क्या सोचते हैं, यदि आप में आत्मविश्वास की कमी है, यदि आप डरते हैं, तो इसका अभिप्राय यह है कि आप में आत्मविश्वास है ही नहीं, जबकि आप ईश्वर की संतान है, उसने आपको दुर्बल नहीं बनाया।

जीवन न बने अभिशाप, जब सही हो रक्त चाप

✻ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ✻

हृदय रक्त को धमनियाँ में पम्प करके छोटी-छोटी कोशिकाओं के द्वारा पूरे शरीर में पहुँचता है व रक्तप्रवाह को विनियमित करता है और इस पर लगने वाले दबाव को रक्तचाप (Blood Pressure) कहते हैं। किसी भी व्यक्ति का रक्तचाप सिस्टोलिक/डायस्टोलिक में अभिव्यक्त किया जाता है। 1. सिस्टोलिक- जब हृदय सिकुड़ता है और रक्त को धमनियाँ में पहुचाता है तब हृदय के सिकुड़ने के कारण रक्त को पहुँचाने के बेग को संकोचन सिस्टोलिक दबाव कहते हैं।

डायस्टोलिक- जब हृदय फैलता है व पीछे से रक्त खींचता है फिर भी शरीर में रक्त प्रवाह का कुछ न कुछ दबाव बना रहता है जो हृदय के फैलने के कारण कम हो जाता है इस वेग को डायस्टोलिक दबाव कहते हैं।

हमारे शरीर में रक्त प्रतिदिन इन्हीं रक्त वाहिनियों से 1,92,000 किमी. का सफर करता है। एक स्वस्थ शरीर में औसतन 5 से 6 लिटर रक्त होता है। जो हर 20 सैकेन्ड में एक बार पूरे शरीर का चक्कर लगा लेता है।

इस प्रकार सिस्टोलिक व डायस्टोलिक दोनों हालात में रक्त का धमनियों में जाना बेग बना रहता है इस वेग का या दबाब को ही रूधिर का दबाब रक्त चाप कहते है।

यह दो प्रकार का होता है उच्च रक्तचाप व निम्न रक्तचाप-

उच्च रक्तचाप (High Blood Pressure)- जब रक्त हृदय से धमनियों में जाता है तो उसके धक्के सहन करने के लिये धमनियाँ फैल जाती हैं , अगर इन धमनियों में किन्हीं कारणों से कड़ापन व अवरोध आ जायें तो रक्त के धक्के से फैल न सकते तो रक्त का बेग, उसकी गति का दबाव बढ़ जाता है जिसे उच्च रक्त चाप कहते है। उच्च रक्त चाप से हर दूसरा व्यक्ति परेशान है 18 से 25 वर्ष के युवा 65 % से अधिक इससे प्रभावित हैं ।

लक्षण- नींद न आना, माथे में सिर को गुद्दों में खोपड़ी में दर्द, कभी-कभी चक्कर आना, सिर सदा भारी रहना, आलस, छाया रहना, काम में अरूचि, मेहनत का काम नहीं कर सकना, चिड़चिड़ाना, सांस फूलना, अंगों में सरसराहट होना आदि।

कारण- रक्त ले जाने वाली धमनियों में केल्सियम, यूरिक एसिड, कोलस्ट्राल जमने से धमनियों की दीवालों में कड़कपन आना जिसे आर्टरिया-स्केलेरोसस (Arteno Sclerosis)कहते हैं , उम्र बढ़ने के साथ ही धमनियों में कड़कपन आना, हृदय रोग से या शुगर से पीड़ित होना, किडनी रोग, थायराइड, अनिद्रा रोग, मोटापा होना, मानसिक तनाव, प्रदूषण आदि, गर्भावस्था, महिलाओं में मीनोपॉज।

भावी परिणाम- किसी को लगातार उच्च रक्तचाप बना रहता है तो उसे खामोशी से मारने वाली बीमारी भी बोला जाता है क्योंकि यह कई वर्षों तक कोई परेशानी पैदा नही करती जब तक

कोई मुख्य अंग बुरी तरह अतिग्रस्त न हो जावे जैसे हृदय की विफलता हार्ट अटैक, किड़नी रोग आदि व कभी-कभी धमनियाँ कहीं से फट जाने पर कभी दिमाग, कभी पेट, कभी-कभी किसी अन्य स्थान से फट जाने पर रक्त बहने लगता है। व मृत्यु भी हो सकती है। आदर्श उच्च रक्तचाप 120/80 व 140/90 को वार्ड लाईन माना जाता है।

निम्न रक्तचाप (Low Blood Pressure)- यह स्वाभाविक शारीरिक स्थिति है जिसमें रक्त वाहिनियों की दीवारों के दबाव नहीं प्रदान कर पाता है जिससे रक्तचाप सामाय स्वर से कम हो जाता है। जो उच्च रक्तचाप से 40-50 अंतर कम होना चाहिये यदि इससे ज्यादा अंतर हो तो निम्न रक्तचाप कहते हैं। जो 3:2 के अनुपात में होना चाहिये यदि उच्च रक्तचाप 120 हैं तो निम्न रक्तचाप 80 होना चाहिये। किन्तु कभी-कभी ऐसी स्थिति भी हो सकती है। इन दोनों में किसी प्रकार का आनुपातिक संबंध नहीं है।

लक्षण- कमजोरी व थकावट रहना, चक्कर आना या भ्रम होना, कम भूख लगना, उल्टी आना, पसीना व बेहोशी, दिल की धड़कन की असमानता, आवाज बैठना, छाती में दबाव।

कारण- खून की कमी, मस्तिष्क में रक्त नहीं पहुँचना जिसे (Cerebral Anemia) कहते हैं। हृदय की गति मंद होना, नाड़ी कमजोर व अनियमित होना, अधिक काम का दबाव, नींद न आना, आँखों की बीमारी, अधिक तापमान, गर्भावस्था, शुगर, थायराइड, मानसिक अवसाद, बात रोग, कोई पुरानी बीमारी व ऐसे व्यक्ति जो उम्र के हिसाब से ज्यादा लंबे बढ़ते हैं। महिलाओं में मीनोपॉज, अशुभ समाचार, वृद्ध व्यक्तियों में खून की कमी व ग्रंथियों का कमजोर पड़ना।

रक्तचाप के संबंध में विशेष ध्यान योग्य बाते - रक्तचाप सदा एक सा नहीं रहता है परिस्थितियों के अनुसार बदलता रहता है जैसे भोजन करने के बाद, मेहनत का काम से मानसिक उद्वेग से, स्वभाव से क्रोधी होना, भयभीत होना, चिंता में रहना, मूत्र द्वारा दूषित तत्व बाहर न निकलना, गर्भावस्था, मीनोपॉज में रक्तचाप बढ़ जाता है। वृद्धावस्था, अचानक कोई दुख की बाते, खून की कमी से रक्तचाप घट जाता है। इन अवस्थाओं में प्राथमिक उपचार व सावधानियों अपनाकर पुनः स्वस्थ हो सकते हैं।

होम्योपेथी पद्धति -प्रारंभिक अवस्था में आयुर्वेदिक पद्धति होम्योपैथी पद्धति घरेलू उपचार परहेज से नियंत्रण हो सकता है किन्तु अचानक रक्तचाप बढ़ने, कम होने, हृदय संबंधित समस्या उत्पन्न होने पर ऐलोपैथी पद्धति में उच्च रक्तचाप में ग्लोनोयइन, बैरायटाम्यूर, ऑरम म्यूरेटिकम, बैलोडोना, नेट्रमम्यूर, आर्सेनिक, क्रेटगस , एसिडफास, राउलफिया आदि। निम्न रक्तचाप में कोनायम, कैलकेरियाफास, डिजिटेलिस, जेल्सीमियम, ऐवाइना सैटाइला, क्रेटेगस आदि।

हमारा हृदय मस्तिष्क के साथ संतुलन बनाकर शरीर की गतिविधियों की आवश्यकतानुसार उम्र भर शरीर में रोगों में भी निर्वाध कार्य करने व जीवन भर गुणवत्ता पूर्वक कार्य करने की क्षमता रखता है यदि हृदय की सेहत का ध्यान रखा जावे जिससे जीवन को अभिशाप नहीं वरदान बना सकते है।

हास्य तरंग

1. घर की सफाई के दौरान नौकर के हाथ से एक कीमती सामान गिर जाने से टूट गया। मालकिन ने डांटते हुये कहा यदि ऐसी गलती दुबारा की तो मार-मार कर गंजा कर दूंगी। नौकर डरते हुये एक दम मुस्कुराने लगा तो मालकिन ने पूंछा क्यों हंस रहे हो ? नौकर मालिक को देखकर जी मैं समझ गया।

2. सासू ने नई बहु को समझाया कि बेटी तुम शहर जा रही हो तो मेरी एक बात याद रखना पहली रोटी गाय की व आखरी रोटी कुत्ता की निकालकर देना। कुछ दिनों बाद बहु वापिस आई तो सासू ने पूंछा बहु ने कहा सासू जी शहर में गाय व कुत्ता नहीं मिलते हैं इसलिये पहली रोटी में खा लेती हूँ और आखरी रोटी पति को खिला देती हूँ।

3. शिक्षक- बच्चों को पढ़ाते हुये पूंछते हैं कि एक भोजनशाला में 100 व्यक्तियों के लिये 4 किलो दाल लगती है, यदि 10 व्यक्ति औ जाये तो कितनी दाल लगेगी। बच्चे के लेने आये दादाजी ने कहा मास्टर जी इस महंगाई में दाल तो उतनी ही लगेगी पर पानी की मात्रा बढ़ाना होगी।

4. जज- (आरोपी से)- अपनी अपनी पत्नी को ही क्यों गोली मारी ? उसके प्रेमी को क्यों नहीं। आरोपी- मेरे सरकार मैंने सोचा कि उसके हर एक प्रेमी से कब तक लड़ता रहूँगा।

5. भावित (अपने मित्र से)- अपने पालतू कुत्ता की विशेषता बताता है कि यह हमारी बातों को व इशारों को समझता है । कुछ दिनों बाद भावित अपने मित्र के स्टार्स पर आकर कुत्ते के खाने के विस्कुट मांगता है तो मित्र कहता है कि यहाँ बैठकर खाओगे तो भावित गुस्से में तुम्हें इतनी भी समझ नहीं है ? मैं कुत्ते के बिस्कुट खाऊंगा। मित्र- मैं तो तुम्हारे कुत्ते से पूंछ रहा था।

संकलन- जिनेन्द्र कुमार जैन- गौरीनगर इंदौर

पाक कला

आम की आईस्क्रीम

सामग्री- 1 आम का पेस्ट
नारियल पाउडर 2 चम्मच
1 आम के बारीक कतरे पीस
दूध आधा किलो
खोया 2 चम्मच।

विधिः- दूध उबाले फिर उसमें थोड़ा सा खोया, नारियल पावडर व चीनी मिलायें व चीनी घुलने तक गैस पर पकायें फिर गैस बंद कर दे व ठंडा होने पर आम का पेस्ट मिला ले और फिर मिक्सी में चला लें व उसमें कुछ आम के पीस भी बनाकर ऊपर से डालकर मिक्स कर लें और फ्रिजर में जमने रख दे। स्वादिष्ट आम की कुल्फी तैयार हैं ।

बाल कहानी

25 करोड़ डूबे शराब में

लंदन शहर में एक लिटिल पाल नाम का एक व्यक्ति रहता था, वैसे तो वह बहुत धनाढ्य था और होशियर भी था। किन्तु उसकी एक आदत खराब थी शराब पीने की, वह अक्सर शराब पीने के लिये एक बियर बार जाया करता था। एक दिन उसने अपने कुछ पैसे लॉटरी में लगाये और वह लॉटरी में पैसे लगाकर के भूल गया। वह टिकट साथ में ले करके चला गया, शराब की दुकान पर, उसने खूब शराब पी और शराब पीने के बाद वह दुकान पर ही थोड़े देर बैठा रहा परन्तु वह उसकी लॉटरी टिकट वहां से कब गायब हो गयी पता नहीं चला परन्तु उसने एक अवश्य काम किया था की अपनी टिकट का नम्बर डायरी में नोट कर लिया था। अब कुछ दिनों बाद जब उस टिकट का परिणाम सामने आया और उसने उस परिणाम से अपने नंबर से मिलाया तो अखबार में आया हुआ नंबर को पढ़ करके वह झूम करके नाचने लगा। लोगों ने उसे पूछा लिटल पाल तुम नाच लॉटरी का इनाम मिलने वाला है ओर उसने नंबर भी अपने मित्रों को मिला करके बता दिया और वह अपने घर गया और वहां जाने के बाद उसे पता लगा की लॉटरी का टिकट मैंने कहाँ रख दिया, वह सब जगह लॉटरी का टिकट ढूंढने लगा परन्तु उसे लॉटरी का टिकट नहीं मिला। आखिरकार वह परेशान होकर याद करने लगा की मेरा लॉटरी का टिकट कहा गया। और उसके पास एक व्यक्ति आया और उस व्यक्ति ने आ करके कहा कि लिटल पाल तुम्हें बधाई हो की तुम एक 25 करोड़ का इनाम जीत चुके हो तो वह बोले लेकिन मेरी परेशानी समझो तो उस मित्र ने कहा की क्या हुआ। मुझे बताओ तो लिटल पाल ने कहा नंबर भी मिला लिया मैंने लेकिन लॉटरी टिकट नहीं मिल रही है, टिकट कहाँ गयी पता नहीं चल रहा है। और टिकट नहीं होगा तब तक सिर्फ नं बर से इनाम का पैसा मिल नहीं सकता है। 25 करोड़ का भुगतान उसका डूबने वाला था तक लिटल पाल ने बहुत याद किया तो वह उसी शराब के दुकान पर गया। वहां जाने के बाद उसने उस तारीख को याद किया और कहा कि मैं 1 अप्रैल को यहाँ आया था और क्या मेरा टिकट क्या यहाँ छूट गया था तो शराब की शाकी ने कहा कि टिकट आपकी एक आदमी ने उठा करके ले गया और तभी लिटल पाल को यह एहसास हुआ की मैंने इस शराब की लत के कारण अपना नुकसा कर लिया।

संस्कार गीत

कुंदकुंद गुरुदेव

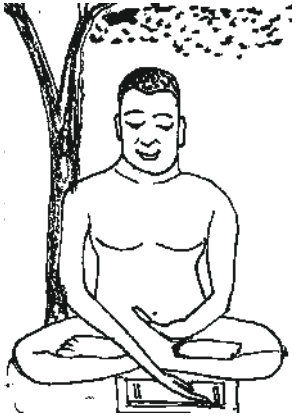

जिनवाणी के आद्य प्रचारक
कुंदकुंद गुरुदेव है
प्रथमशती के आगम सृजक
अध्यात्म गुरुदेव हैं
1.
समयसार की अनुभूति कर
समयसार का सृजन किया
भव दुख से मुक्ति पाने को
भव्यजनों ने पठन किया
चौरासी प्राभृतों के सृजक महागुरुदेव हैं
2.
कलिकाल में मिथ्यात्व घोर
अंधेरा छाया था
कुंदकुंद की शुभवाणी से
सम्यक् सूरज आया था
उत्म सुख का मार्ग बताते
उपकारी गुरुदेव हैं
3.
भारत भूमि पर अध्यात्म का
परचम गुरु ने फहराया
द्रव्य और गुण पर्यायों की
परिभाषा को बतलाया
आगम ज्ञाता मोक्ष विधाता
युग दृष्ट गुरुदेव है

बाल कविता

षट्खंडागम ग्रंथ है प्यारा

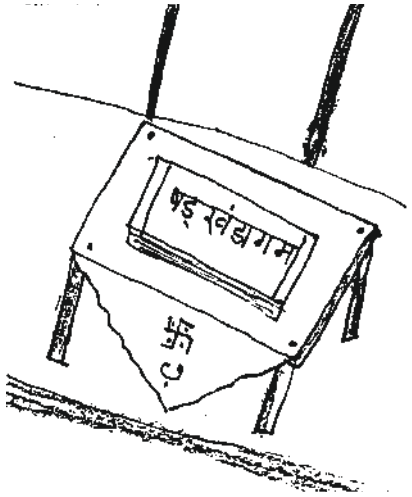

सब ग्रंथों में ग्रंथ न्यारा
षट्खंडागम ग्रंथ है प्यारा
भवदुख से यह तारण हारा
जिनवाणी का यही सहारा
जीव स्थान बतावे सारे
क्षुद्र बंध बखाने सारे
बन्ध स्वामित्व का वर्णन करता
खंड वंदन सुन्दर लगता
खंड वर्गण अनुपम प्यारा
महाबंध का वर्णन सारा
पुष्पदंत ने इसे निखारा
भूतबलि ने इसे सम्हाला
ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी दिन न्यारा
पूर्ण हुआ शुभ ग्रंथ यह प्यारा

समाचार

समाधिमरण

जबलपुर- ब्राह्मी विद्या आश्रम मढ़िया जी जबलपुर की संचालिका ब्र. मणी बाई जी ने निर्यापक श्रमण मुनि श्री समयसागर जी महाराज से 10 प्रतिमा धारण कर पर्याप्तश्री माताजी नाम पाया आपका समाधि पूर्वक देहावसान 26 फरवरी 2024 मंगलवार रात्रिः 8 .01 मिनिट पर हुआ।

कुण्डलपुर-आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी की शिष्या आर्यिका श्री शांतिमति माताजी का समाधिमरण 25 मार्च 2024 को प्रातः 10.10 पर श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर दमोह (म.प्र.) में कई मुनिराज-आर्यिका माताजी के संघ में हुआ।

आष्टा- मुनि श्री भूतबलि सागर महाराज जी का समाधिमरण आष्टा (म.प्र.) में 27 मार्च 2024 को हुई।

कुण्डलपुर महोत्सव

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सम्यक् समाधि के बाद निर्यापक श्रमण मुनि श्री समयसागर महाराज जी को 16 अप्रैल 2024 मंगलवार को श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर जिला दमोह (म.प्र.) में लगभग 350 शिष्यों के बीच में आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया जावेगा।

बोरगांव (कर्नाटक)- आचार्य कुलरत्न भूषण महाराज के करकमलों से तथा बोरगांव कर्नाटक समाज की उपस्थिति में मुनि श्री उत्तमसागर महाराज जी को 22 फरवरी 2024 गुरुवार, गुरु पुष्य नक्षत्र में 108 बालकों के मौजी बंधन संस्कार के अवसर पर निर्यापक आचार्य पद में प्रतिष्ठित किया गया।

पंचकल्याणक सम्पन्न

इंदौर-आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य मुनि श्री विमलसागर महाराज जी, मुनि श्री अनंतसागरजी महाराज जी के सान्निध्य में दिनांक 19 मार्च 25 मार्च 2024 को श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर छत्रपति नगर इंदौर का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा गजरथ महोत्सव ब्र. विनय भैया बंडा के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें 24 मार्च रविवार को ज्ञानकल्याणक के अवसर पर रात्रि 8 बजे आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के व्यक्तित्व पर लेजर शो के माध्यम से आचार्य श्री के प्रति विनयांजलि कार्यक्रम एक शाम गुरुवर के चरणों में सम्पन्न हुआ।

इंदौर- आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में सुमतिधाम गोधा स्टेट का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा दिनांक 06 मार्च से 11 मार्च 2024 को प्रतिष्ठाचार्य प्रदीप मधुर के प्रतिष्ठाचार्यत्व में ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ। इसकी विशेषता यह रही कि गोधा परिवार ने किसी भी व्यक्ति से इन्द्र-इन्द्राणी बनने का किसी प्रकार का किसी से शुल्क ना लेकर के सभी व्यवस्थायें निःशुल्क की।

सिद्धचक्र विधान सम्पन्न

इंदौर- मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मंदिर गौरीनगर में दिनांक 17 मार्च से 25 मार्च 2024 को जिनेन्द्र कुमार श्रीमति करूणा जैन परिवार की ओर से सिद्धचक्र महामंडल विधान सम्पन्न हुआ।

इंदौर- श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर बड़ा मंदिर स्कीम नं. 78 इंदौर में दिनांक 17 मार्च से 25 मार्च 2024 तक ब्र. संजय भैया मुरैना के विधानाचार्यत्व में श्रीमति शशि राजेश अग्रवाल परिवार की ओर से सिद्धचक्र महामंडल विधान सम्पन्न हुआ।

आगामी विशेषांक

विश्व गुरु अध्यात्मिक चिंतक महान साहित्कार राष्ट्रीय चेतना के मुखरवक्ता करूणा मूर्ति तीर्थ संरक्षक संवर्धक आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी का समग्र सामग्री संस्कार विशेषांक आगामी जुलाई माह में दीक्षा दिवस के समय प्रस्तुत होगा। लेखकगण सामग्री भेजे तथा पाठक अपना अंक सुरक्षित करें।

ब्र. जिनेश मलैया
प्रधान संपादकः संस्कार सागर, इंदौर
6232967108
8989505108
email: sanskarsagar@yahoo.co.in

वर्ग पहेली 294

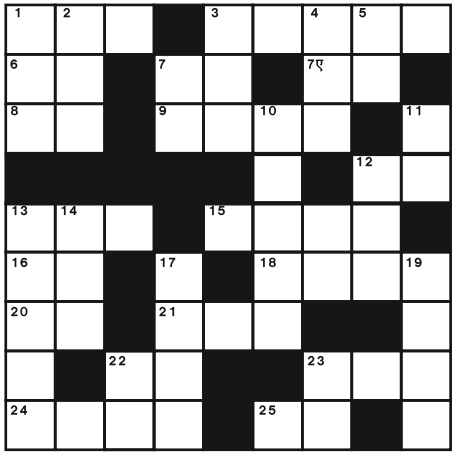

बाये से दाये

1. भगवान महावीर की जन्म स्थली -3
3. बड़े बाबा का प्रसिद्ध तीर्थ -5
6. शाक का देशी शब्द, ब्रांच -2
7. घमंड, अहंकार -2
7ए. कृषि उपकरण, समाधान -2
8. खीला, लोहे की ठोकने वाली -2
9. सुन्दर अभिराम -4
12. अधिक, अतिरिक्त -2
13. तीन नदी के संगम स्थल -3
15. नास, एक फल -4
16. मृत देह -2
18. अंग्रेजी वर्ष का दूसरा माह -4
20. मृत देह -2
21. यात्रा -3
22. वायर, उच्च स्वर -2
23. सुगंध -3
24. चौबीसवें तीर्थंकर का एक नाम -4
25. अमेरिकी पूर्व राष्ट्रपति का नामांश -2

ऊपर से नीचे

1. वैर से विकलांगों के चलने का सहारा -3
2. महादेव, भैरव, मिस्टर इंडिया का विलन -3
3. शुद्ध सोना -3
4. तरंग, बेव, -2
5. सेतु, ब्रिज -2
10. पथ का साथी -5
11. कास्ट, जांत पांत -2
12. अधिक -3
13. भगवान महावीर स्वामी की माता का नाम -5
14. मजबूर -3
17. भगवान राम के पिता का नाम -4
19. पूंछतांछ -4
23. हर्ष -2

वर्ग पहेली 293 का हल

1 ऋ	तु	2 रा	3 ज	■	4 म	रू	5 दे	6 वी
ण	■	7 ह	ड़	ता	ल	■	8 श	र
भ	■	9 गी	ता	■	10 म	11 थ	ना	■
12 दे	13 व	र	■	14 प	ल	क	■	15 प
16 व	र	■	17 प	द्म	■	18 ना	19 प	ना
■	ग	■	20 वि	प्र	■	■	21 य	ह
22 म	द	■	23 त्र	भु	24 ज	■	■	■
द	■	25 घ	■	■	26 ल	27 ह	रा	28 ना
29 न	ह	र	■	30 न	ज	र	■	ता

.....सदस्यता क्र. .....

पता : .....

.....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

बने ये मंदिर आलीशान

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी की डोंगरगढ़ छत्तीसगढ़ में
सम्यक् समाधि के उपरांत निर्यापक श्रमण समयसागर महाराज जी का
तीन से अधिक शिष्यों के सान्निध्य में आचार्य पदारोहण 16 अप्रैल 2024, मंगलवार को

श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर दमोह (म.प्र.) में होगा

आप सभी कार्यक्रम में सम्मिलित होकर धर्मलाभ लेवें।

आचार्य पदारोहण

निवेदक

संस्कार सागर परिवार, श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति पारमार्थिक एवं धार्मिक ट्रस्ट
श्रुत सिद्धांत शोध पीठ, इंदौर

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 6232967108

प्रिंटिंग दिनांक 28/03/24, पोस्टिंग दिनांक : 03/04/2024